Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

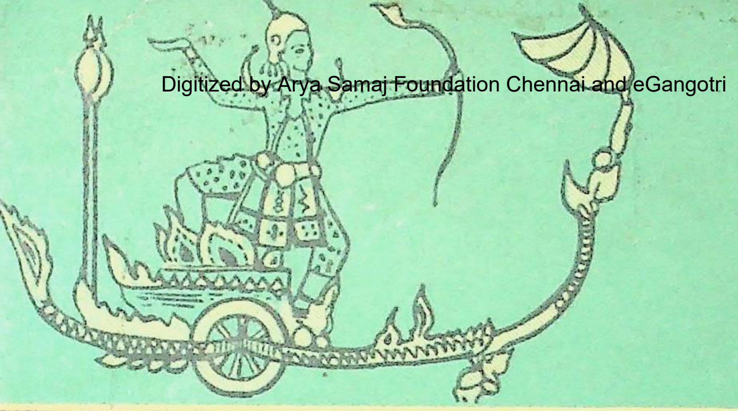

राम-कीर्ति

स्वामी सत्यानंद पुरी

8

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राम-कीर्ति

थाईदेश (स्याम) में प्रचलित राम-कथा

लेखक
स्वामी सत्यानंद पुरी

•

अनुवादक
गंगाप्रसाद उपाध्याय

१९६९

सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल
नई दिल्ली

पहली बार | १९६६
मूल्य | चार रुपये

मुद्रक
उद्योगशाला प्रेस
दिल्ली

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशकीय

हमने 'मण्डल' से रामकथा से संबंधित अनेक पुस्तकें प्रकाशित की हैं। श्री राजगोपालाचार्य की 'दशरथनंदन श्रीराम' तथा श्री विश्वम्भर सहाय प्रेमी की 'राम-कथा-माला' की चौदह पुस्तकें बहुत लोकप्रिय हुई हैं। स्व० वासुदेवशरण अग्रवाल की पुत्री द्वारा बालकों के लिए लिखी 'बाल राम-कथा' से भी नई पीढ़ी ने ही नहीं, अन्य पाठकों ने भी लाभ उठाया है, आज भी उठा रहे हैं।

हमें हर्ष है कि उस भण्डार में हम एक मूल्यवान पुस्तक की वृद्धि कर रहे हैं। पाठक जानते हैं कि दक्षिण-पूर्व एशिया में रामकथा घर-घर प्रचलित है। थाईलैण्ड में तो मानो राम-भक्ति की मंदाकिनी प्रवाहित है। उस देश की वर्तमान राजधानी बैंकाक से पहले वहां की राजधानी अयोध्या थी और मरकत बुद्ध के मंदिर की दीर्घा में पूरी रामायण आज भी रंग-बिरंगे विशाल चित्रों में अंकित है।

थाईलैण्ड में कई रामायणों का प्रचलन है, जिनमें एक है स्वामी सत्यानंद विरचित 'राम-कीर्ति।' प्रस्तुत पुस्तक उसीके अंग्रेजी संस्करण का हिन्दी रूपान्तर है। इस अनुवाद की एक विशेषता यह भी है कि इसे हिन्दी के लब्धप्रतिष्ठ लेखक तथा आर्य समाज के विशिष्ट नेता श्री गंगाप्रसाद उपाध्याय ने किया है। उपाध्यायजी का कुछ समय पूर्व देहान्त हो गया। हमें बड़ा खेद है कि पुस्तक उनके जीवन-काल में प्रकाशित नहीं हो पाई।

हिन्दी की पाण्डुलिपि हमें भारत और थाईलैण्ड के संबंधों को प्रगाढ़ करने वाली बैंकाक की लोकोपयोगी साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्था 'थाई-भारत-सांस्कृतिक-भवन' (थाई भारत कल्चरल लाज) के संचालक पं०रघुनाथ शर्मा के सौजन्य से प्राप्त हुई है। चित्र भी उन्होंने ही सुलभ कराये हैं। हम उनके अत्यन्त आभारी हैं।

—मंत्री

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वामी सत्यानंद पुरी

स्वामी सत्यानंद पुरी का नाम थाई-भारत-संबंध के इतिहास में अमर रहेगा, क्योंकि स्वामीजी ने बैंकाक आते ही ऐसा यत्न किया कि स्याम देश के थाई लोगों के भावों का अच्छा अध्ययन कर सकें। थाई-भारत-सांस्कृतिक भवन उन्हींके परिश्रम का फल है।

स्वामीजी का पहला नाम श्री प्रफुल्ल कुमार सेन था। वह बंगाल में ३ मार्च १९०२ को उत्पन्न हुए थे। उन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय से दर्शन-शास्त्र में और बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम०ए० पास किया और दोनों में सर्वप्रथम तथा प्रथम श्रेणी में रहे। फिर वह संन्यासी होकर 'सत्यानंद पुरी' कहलाये और संसार के उपकार में अपना जीवन व्यतीत करने लगे।

श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर की प्रेरणा से वह १९३२ में थाईलैण्ड आये और छः मास में ही उन्होंने स्यामी भाषा पर इतना आधिपत्य प्राप्त कर लिया कि चूलालंगकर्ण यूनीवर्सिटी में थाई-नरेश और महारानी की उपस्थिति में स्यामी भाषा में एक व्याख्यान दिया।

१९४२ की ३ मार्च को स्वामीजी सिंगापुर गये। उस समय द्वितीय महायुद्ध छिड़ा हुआ था। जापानियों के निमंत्रण पर वह टोकियो जा रहे थे कि २४ मार्च १९४२ को हवाई जहाज की दुर्घटना में उनका शरीरपात हो गया।

स्वामी सत्यानंदजी की स्याम देश में विशेष प्रतिष्ठा थी। वहां के विद्वान उनके प्रति गहरी श्रद्धा रखते थे। उन्होंने भारतवर्ष के स्याम में रहनेवाले लोगों और थाई लोगों में आत्मीयतापूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने में बड़ी सहायता की और वह थाई-भारत-सांस्कृतिक भवन के संस्थापक थे।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनकी मृत्यु पर भारतवासियों को तो दुःख हुआ ही, परन्तु थाई लोगों का कहना है कि उनके निधन से थाई देश की जो क्षति हो गई, वह पूरी नहीं हो सकती।

स्वामीजी थाई देश में दस साल रहे। इस बीच उन्होंने ये पुस्तकें लिखीं :

अंग्रेजी में

(1) The Origin of Buddhist Thoughts

(2) Ramakirti.

संस्कृत में

धर्म-पदार्थ-कथा (पाली की धम्मपदात्य कथा का अनुवाद)

थाई भाषा में

1. Principles of Debate (2 vols.)
2. A Hand-book of Tark Philosophy
3. Yoga Philosophy (2 vols)
4. Oriental Philosophy (pt. I)
5. The Life of Mahatma Gandhi
6. Pomdoi
7. The Life of Guru Govind Singh.

आज स्वामीजी के निधन को अनेक वर्ष हो गये, परन्तु बैंकाक के सभी भारतीय उनका निरंतर स्मरण करते हैं।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रस्तावना

प्रस्तुत पुस्तक की पृष्ठभूमि में एक विशेष इतिहास है, जिसका संक्षिप्त विवरण देना मैं अपना कर्तव्य समझता हूं और उसीकी पूर्ति के उपलक्ष्य में नीचे की पंक्तियां लिखने का प्रयास है।

भारतीय संस्कृति कितनी महान रही होगी, इसका अनुमान इसीसे लग जाता है कि यह देश, जो 'थाई-प्रदेश' के नाम से विख्यात है, भारतीय संस्कृति से ओतप्रोत है। इस देश के साथ जो भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध अविच्छिन्न रूप से हैं, उनमें रामायण अपना एक विशेष स्थान रखती है। रामायण को यहां के आबाल-वृद्ध, स्त्री-पुरुष सब भली भांति जानते हैं। जिस प्रकार भारत में यह सम्मानित ग्रंथ रामायण, रामचरित-मानस आदि नामों से पुकारा जाता है, उसी प्रकार इसका नाम यहां थाई देश में 'रामकीर्ति' है। इसका उच्चारण 'राम-कियन' किया जाता है, पर लिखने में ठीक 'रामकीर्ति' ही है।

आज से करीब सैंतीस वर्ष पूर्व गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर की प्ररणा तथा अनुज्ञा से एक भारतीन संन्यासी, जिनका नाम स्वामी सत्यानंद पुरी था, यहां आये। लगभग सत्ररह वर्ष पहले वह इस संसार से उठ गये। अनुमानतः सन् १९२६ में जब गुरुदेव इस देश में पधारे थे, तब यहां के दिवंगत नरेश महाराज प्रजादीपक तथा तत्कालीन शिक्षा-मंत्री माननीय प्रिंस धानी निवातजी ने (जो अबतक स्वामीजी के पूर्ण भक्त हैं) गुरुदेव से अनुरोध किया था कि वह एक ऐसा व्यक्ति अपने देश से भेजें, जो यहां रहकर और यहां की भाषा (थाई भाषा) का अध्ययन करके भारत के साथ के हमारे सांस्कृतिक संबंधों को बल एवं प्रोत्साहन प्रदान कर सके।

स्वामीजी असाधारण प्रतिभा-सम्पन्न व्यक्ति थे और संस्कृत, पाली तथा अंग्रेजी के प्रकाण्ड पंडित थे। बंगाली होने के नाते बंगला भाषा का विद्वान होना तो स्वाभाविक ही था। उन्होंने यहां आने के दूसरे

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिन से ही थाई भाषा का अध्ययन आरम्भ कर दिया।

यहां यह कह देना उपयुक्त होगा कि इस देश की भाषा की भारत की अन्य भाषाओं की तरह संस्कृत ही जननी है। स्वामीजी बड़े योग्य तथा उत्साही व्यक्ति थे। अतः उन्हें थाई भाषा को सीखने में न तो अधिक समय लगा, न अधिक कठिनाई हुई। इसका अनुमान एक छोटे-से उदाहरण से सहृदय पाठक कर सकेंगे।

स्वर्गीय स्वामीजी ने छः माह के अध्ययन के बाद स्थानीय विश्वविद्यालय (चूलालंगकर्ण यूनीवर्सिटी) में **'प्रज्ञापल'** उपाधि-वितरण-महोत्सव पर महाराज प्रजादीपक के सभापतित्व में विश्वविद्यालय के उपकुलपति, गणपति (डीन), आचार्यों, राष्ट्र-मंत्रियों तथा छात्र-छात्राओं के समक्ष बिना लिखे और बिना कोई नोट सामने रखे आधा घण्टे थाई भाषा में भाषण दिया। इस छोटी-सी अवधि का उनका अध्ययन सबको चकित कर देनेवाला था। आगे चलकर तो दो वर्षों के अध्ययन के पश्चात् उन्होंने थाई भाषा में ग्रंथ लिखने प्रारम्भ कर दिये। भारतीय दर्शन तथा गीता के अनुवाद के साथ-साथ भारतीय संस्कृति की उज्ज्वलता के प्रतीक कोई पन्द्रह-सोलह ग्रंथों की रचना की, जिनका आज भी थाई-जगत में ऊंचा तथा महत्वपूर्ण स्थान है।

इसमें तनिक भी अतिशयोक्ति नहीं कि यहां का शिक्षित समुदाय स्वामीजी को अपना आचार्य मानता था। उनकी लेखन-शैली का प्रभाव उनके हृदयों पर अंकित था, है और रहेगा, ऐसा अनुभव तथा विश्वास के साथ कहा जाता है। उनके व्यक्तित्व एवं इस देश को भारतीय सांस्कृतिक साहित्य की देन का एक और उदाहरण प्रस्तुत करना अनुपयुक्त न होगा।

द्वितीय विश्वयुद्ध का प्रसंग है। स्वामीजी के अवसान के बाद इन पंक्तियों का लेखक तथा श्री देवनाथदास (यहां के भारतीय स्वतन्त्रता-संग्राम के लेखाधिकार-जनरल सेक्रेटरी), यहां के प्रधानमंत्री फील्ड-मार्शल श्री पी० विपुल संग्रामजी के पास इस उद्देश्य से गये कि यहां के भारतीयों तथा भारत के प्रति उनकी और उनकी सरकार की जो सद्भावना तथा सहानुभूति स्वामीजी के समय रही, वह अब भी और

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भविष्य में बनी रहे। हमारी बातों को सुनकर उत्तर में प्रधानमंत्री महोदय ने इसका आश्वासन देते हुए स्वामीजी के प्रति अपने हृदय के उद्‌गार इन शब्दों में प्रकट किये :

"स्वामीजी के निधन से भारत की इतनी क्षति नहीं हुई, क्योंकि भारत में इनकी योग्यता तथा इनसे भी अधिक योग्यता के बहुत-से व्यक्तियों का हो सकना असंभव नहीं, पर भगवान बुद्ध के बाद हमारे देश को स्वामीजी के रूप में भारत का यह दूसरा दान था।" इन शब्दों में उस महापुरुष के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पण करने में माननीय प्रधानमंत्री की कितनी महानता थी !

इन्हीं स्वामीजी ने इस देश की मूल थाई रामायण (रामकीर्ति) का अंग्रेजी में अनुवाद किया था, जिसके कई संस्करण समाप्त हो चुके हैं और जिसका भारतीय विद्वत् समाज में तो सम्मान है ही, पाश्चात्य शिक्षित समाज में भी यह ग्रंथ अपना विशेष स्थान रखता है।

३ मार्च सन् १९५२ को भारत के सुयोग्य विद्वान पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय यहां बैंकाक पधारे और २२ मार्च, १९५२ तक थाई-भारत-सांस्कृतिक भवन को (जिसके प्रतिष्ठाता स्वर्गीय स्वामीजी थे) उनके आतिथ्य का सौभाग्य प्राप्त हुआ। भवन से सम्बन्धित पुस्तकालय से स्वामीजी की अंग्रेजी में अनूदित 'रामकीर्ति' पुस्तक उनके हाथ लगी और उन्होंने उसे आद्योपान्त पढ़ा। दूसरे दिन अपरान्ह में जब मैं उपाध्यायजी के पास पहुंचा तो उनको उसके हिंदी अनुवाद में व्यस्त पाया। पूछने पर बोले, "पंडितजी, दिन तो अपने पास कुछ हैं ही, सोचा कि क्यों न इसका हिंदी अनुवाद कर दूं, ताकि हिंदी जगत को भी इससे लाभ मिले और भारत में प्रचलित रामायणों के साथ तुलनात्मक अध्ययन में जनता को सहायता मिले।" कितना सुन्दर था उनका कथन, कितनी सुन्दर थी उनकी विचारधारा और कितना सुन्दर था उनका दृष्टिकोण! इससे मुझे हर्ष भी हुआ और भारतीय विद्वत्ता की दूरदर्शिता का गौरव भी। कुछ ही दिनों में उपाध्यायजी ने अनुवाद सम्पूर्ण कर थाई-भारत-सांस्कृतिक-भवन, बैंकाक को समर्पण कर दिया।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस समय के उनके शब्द आज भी मेरे कानों में गूंजते हैं। उन्होंने कहा था।

"यह लो, पंडितजी, स्वामी सत्यानन्द पुरी एवं थाई-भारत-सांस्कृतिक भवन को अपनी स्मृति के रूप में उपहार-स्वरूप इसे दे रहा हूं।" उपाध्यायजी की सिद्धहस्त लेखनी से भारतीय पाठक अनभिज्ञ नहीं हैं, पर जब मैंने उसे आद्योपान्त पढ़ा तो मैं मुग्ध रह गया और भवन की ओर से उनके इस अमर कीर्ति-स्वरूप उपहार को स्वीकार करते हुए श्रद्धा के साथ धन्यवाद दिया। अनन्तर एक थाई युवक श्री करुणा कुसलासय को, जो भवन के एक सहकर्मी तथा हिंदी के अच्छे ज्ञाताओं में से हैं और जिन्हें संस्कृत का भी ज्ञान प्राप्त है, अंग्रेजी की अच्छी योग्यता तो रखते ही हैं, साथ ही जिन्होंने 'रामकीर्ति' का स्वाध्याय किया है, नामावली आदि संशोधनार्थ उपाध्यायजी की अनूदित मूल हिंदी पाण्डुलिपि दी और उन्होंने कुछ ही दिनों में इस कार्य को संपन्न कर दिया।

अब प्रश्न था भारत में इसके छपने आदि का। हम बहुत दूर बैठे थे। भारत में एक-दो स्थानों पर पत्र द्वारा इसकी चर्चा की, पर उन्होंने हस्तलिखित मूल प्रति भेज देने की बात लिखी। बार-बार विचार सामने आता रहा कि असावधानी से कहीं मूल प्रति इधर-उधर हो गई तो? इस आशंका के कारण हम अंतिम निर्णय नहीं कर सके और प्रकाशन में विलंब हो गया।

सन् १९६३ में अपने दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के प्रवास के सिल-सिले में श्री यशपाल जैन (सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली के संचालक-मण्डल के सदस्य) तथा श्री विष्णु प्रभाकर बैंकाक पधारे और करीब एक सप्ताह भवन के ही सम्मानित अतिथि होकर भवन में ठहरे। बातचीत के सिलसिले में इस पुस्तक की चर्चा आ गई। इन दोनों महानुभावों ने अंग्रेजी संस्करण को पढ़ा और हिंदी-अनुवाद भी। तदु-परान्त इसके प्रकाशन का भार सहर्ष अपने ऊपर ले लेने का आश्वासन दिया, जिससे हमें अपार प्रसन्नता हुई। भवन का दायित्व हलका हुआ और चिंता से मुक्ति मिली।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब ऐसा लग रहा है कि जिस प्रकार स्वामी सत्यानन्द पुरी ने इस देश, भारतीय साहित्य तथा संस्कृति की सेवा की, उसी प्रकार आदरणीय बंधु श्री गंगाप्रसाद उपाध्यायजी (प्रयाग) ने अपनी इस देश की यात्रा की स्मृति-स्वरूप भवन की तथा हिंदी-जगत की यह निस्पृह एवं स्तुत्य सेवा की। भवन उनकी इस सेवा को सदा आदर की दृष्टि से देखता रहेगा।

श्री करुणा कुसलासयजी का आभार माने बिना संतोष नहीं होगा, जिन्होंने नामावली आदि के संशोधन-कार्य में सहयोग दिया।

अंत में हिंदी साहित्य-सेवी सुयोग्य लेखक दोनों प्रियबंधु श्री विष्णु प्रभाकर तथा श्री यशपाल जैन का बहुत-बहुत धन्यवाद है, जिन्होंने पुस्तक के प्रकाशन-कार्य को सुगम बना दिया। 'सस्ता साहित्य मण्डल' अपने नाम के अनुरूप ही इस पुस्तक का प्रकाशन कर जनता को यह पुस्तक सुलभ करेगा, ऐसी आशा है।

थाई-भारत सांस्कृतिक भवन
बैंकाक

रघुनाथ शर्मा
संचालक

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राक्कथन

'स्यामी रामायण' या 'राम-कीर्ति', जिसको स्यामी भाषा (थाई भाषा) में 'रामकियन' कहकर पुकारते हैं, श्री स्वामी सत्यानन्दजी पुरी की अंग्रेजी में लिखित 'राम-कीर्ति' का हिन्दी अनुवाद है। स्वामीजी ने 'राम-कीर्ति' पुस्तक को स्याम देश में प्रचलित रामायण के आधार पर यह दिखलाने के लिए लिखा था कि भारतवर्ष की अपूर्व देन वाल्मीकि महाकविकृत रामायण का प्रभाव दूसरे देशों में भी किस प्रकार फैला हुआ है, और राम की कहानी आज भी किस प्रकार भिन्न-भिन्न देशों की सभ्यता को प्रभावित करने में सहायक हो रही है।

स्वामी सत्यानन्दजी लिखते हैं कि रामायण का प्रभाव स्याम देश में तीन रूपों में मिलता है। साहित्य के रूप में, कला के रूप में और अभिनय के रूप में।

थाईलैण्ड में रामायण का प्रभाव ईसा की १३ वीं शताब्दी तक दृष्टिगोचर होता है, परन्तु रत्न कोषिन्द्र युग (लगभग १७८१ ई०) में रामायण पर स्यामी भाषा में एक काव्य लिखा गया, जो स्यामी साहित्य का महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। इसका श्रेय वर्तमान चक्रीवंश के प्रथम सम्राट प्रथम राम को था। उनके पुत्र द्वितीय राम ने (१८०९-१८२४ ई०) इसको नाटक का रूप दिया। इसके अभिनय की स्याम देश में बड़ी ख्याति हुई। बड़े-बड़े उत्सवों में यह नाटक सदैव खेला जाता रहा है और थाई लोग इसको प्रेम से देखते हैं।

अयोध्या काल में (१३४९-१६४७ ई०) भी रामायण के कुछ चिह्न मिलते हैं। भारतवासियों की जानकारी के लिए यहां यह लिख देना उचित होगा कि यह अयोध्या भारत की अयोध्या नहीं है। स्याम देश में भी एक अयोध्या है। जिस युग का हम यहां वर्णन कर रहे हैं, उसमें बैंकाक से थोड़ी दूर पर अयोध्या नगरी थी। वही स्याम की राजधानी थी। उस समय रामायण की किसी-किसी कहानी को नाटक बनाकर

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खेलते थे। द्वितीय राम के पहले धोनबुरी अर्थात् धनपुरी के राजा ने रामायण के कुछ अंश को कविता के रूप में लिखा था। इससे बहुत दिनों पहले एक और खेल खेला जाता था, जिसको थाई भाषा में 'हूंन' कहते थे। 'हूंन' का अर्थ है 'चमड़ा।' उस समय चमड़े को रंगकर उसपर रामायण के पात्रों के भिन्न-भिन्न वर्णों में सुन्दर चित्र बनाये गए थे। जैसे राम का हरा, लक्ष्मण का सुनहरा, इत्यादि और उन्हीं चित्रों का प्रदर्शन किया जाता था। लोगों की धारणा है कि थाईलैण्ड में हूंन' जावा से आया और संस्कृत छाया नाटक का रूपान्तर मात्र है।

कला के रूप में तो स्याम में रामायण का अद्भुत प्रभाव है। मरकत बुद्ध के मंदिर के, जिसको स्यामी भाषा में वद् फ्रा के ओ कहते हैं, अर्थात् मरकत की बनी हुई भगवान बुद्ध की मूर्ति, राममंदिर की दीवारों पर राम की कहानियां अंकित हैं। इनकी संख्या दोसौ के लगभग होगी। वे प्रथम राम के समय तक की याद दिलाती हैं। रामायण के चित्र पंखों और तकियों तक पर अंकित मिलते हैं। सिगरेट के बक्सों पर भी उन चित्रों को बनाया जाता है।

स्याम देश में रामायण या वाल्मीकि के नाम से लोग अभिज्ञ नहीं थे, यद्यपि रामायण की बहुत-सी घटनाओं के विभिन्न रूप यहां पाये जाते थे। थाईलैण्ड में रामायण भिन्न-भिन्न देशों और भिन्न-भिन्न मार्गों से आई हुई प्रतीत होती है।

रामकीर्ति को पढ़ने से ज्ञात होगा कि रामायण की मुख्य कथा तो वही है, जो भारतवर्ष में प्रसिद्ध है, परन्तु कहीं-कहीं भेद है, जैसे—

(१) 'राम-कीर्ति' नारायण के तीसरे अवतार राम से आरंभ होती है। स्यामी में पहले एक पुस्तक थी, जिसका नाम था 'नारायण सिप्पंग' (नारायण के दस अवतार) स्यामी भाषा में दस को सिप कहते हैं। दश अवतार ये थे—वाराह, मच्छ, भैंसा, त्रिगुट से शिवलिंग लेने के लिए संन्यासी का अवतार, सिंह, कुब्ज, कृष्ण, अप्सरा, राम।

(२) भारत की रामायण में नारायण सर्वोपरि हैं, परन्तु 'राम-कीर्ति' में नारायण का पद ईश्वर अर्थात् शिव से नीचे है।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(३) नामों में भी भेद है। नाम रखने की नीति के तीन रूप हैं:—

अ. कुछ नाम ज्यों-के-त्यों हैं जैसे राम, हनुमान।

आ. कुछ नाम सर्वथा भिन्न हैं, जैसे मन्थरा के स्थान में कुच्ची (संस्कृत कुब्जा का अपभ्रंश)।

इ. कुछ नामों में थोड़ा-सा परिवर्तन है, जैसे शत्रुघ्न के स्थान में शत्रुद, कुबेर के स्थान में कुपेरन। यह उच्चारण-भेद के कारण भी है, जैसे दो व्यंजनों के बीच का स्वर 'अ' लुप्त हो गया या अन्त का अक्षर छोड़ दिया गया। इस प्रकार गरुड़ का 'ख्ुत' हो गया। स्यामी भाषा प्रायः एकस्वरी है। इसलिए भी कुछ नाम छोटे हो गये हैं, जैसे 'लक्ष्मण' का 'लक्षण' हुआ और फिर केवल 'लक्' रह गया। थाई भाषा में वर्ग के तृतीय और चतुर्थ अक्षर को एकसा बोलते हैं, जैसे 'ग' और 'घ' दोनों को लिखते तो ठीक हैं, परन्तु उच्चारण करते हैं संस्कृत 'ख' का। भरत को बरत लिखते हैं और फ्रोत पढ़ते हैं।

ई. कुछ नाम सर्वथा भिन्न हैं। संभवतः इसका कारण यह है कि राम की कथा इस देश में कई मार्गों से आई है और हरेक मार्ग का कुछ-कुछ प्रभाव पड़ा है, जैसे 'रामकीर्ति' में कुबेर के स्थान में 'कुपेरन' है। तमिल भाषा में भी 'कुपेरन' ही है। अतः प्रतीत होता है कि यह शब्द तमिल से लिया गया है।

मैं बैंकाक में ३ मार्च, १९५२ को आया और थाई भारत सांस्कृतिक भवन के अध्यक्ष पं० रघुनाथ शर्मा के आतिथ्य में थाई भारत सांस्कृतिक भवन में रहा। पंडितजी ने मुझे 'राम-कीर्ति' की एक प्रति दी। मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई कि रामायण का स्याम देश पर इतना प्रभाव है। अतः मैंने उचित समझा कि भारतीयों की जानकारी के लिए इसका हिन्दी में अनुवाद कर दिया जाय।

स्यामी भाषा न जानने के कारण मैं मूल पुस्तक से मिलान नहीं कर सका, परन्तु यत्न किया है कि यथाशक्ति अंग्रेजी का ठीक-ठीक भाव हिन्दी में रख दिया जाय।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

—गंगाप्रसाद उपाध्याय

बैंकाक, १४-३-५२

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूमिका

जिन काव्य-रचनाओं ने विश्व-साहित्य पर अपनी अमिट छाप छोड़ी है, उनमें रामायण महाकाव्य का स्थान सर्वोपरि है। भारत ही नहीं, उससे बाहर के देशों को भी उसने प्रभावित किया है और अनेक सदियों की विपरीत परिस्थितियों के बावजूद वहां के धर्म, कला तथा साहित्य को सुव्यवस्थित किया है। विश्व में यदि कभी कोई ऐसा कवि उत्पन्न हुआ है, जिसने न केवल साहित्य के व्यापक क्षेत्र में, बल्कि धर्म और कला के क्षेत्र में भी अपनी अमर लेखनी से एक विशिष्ट सम्प्रदाय का निर्माण किया तो वह मानवता के आदि-कवि, संस्कृत काव्य के जनक वाल्मीकि ही हैं। विद्वत्ता यह पता लगाने में असमर्थ है कि महाकवि को किस भावना से ऐसी प्रेरणा मिली कि मात्र लेखनी के सहारे वह इतनी अखूट स्फूर्ति भर पाये, जिससे न केवल उनकी मातृभूमि भारत का बल्कि भारत से बाहर के देशों का भी सांस्कृतिक स्रोत सतत प्रवहमान है।

वाल्मीकि की मातृभूमि से दूर के देशों में भी कवियों ने उनकी अनुकृति के असीम भण्डार से रत्न चुन-चुनकर अपने साहित्य को समृद्ध किया है। कलाकारों ने उनसे चिरस्थायी कला की प्रेरणा लेकर अपनी कलाकृतियों को अमर बनाया है। यही नहीं, बल्कि खेतों में काम करने वाले किसान और नाव चलानेवाले लोग भी उनसे अप्रभावित नहीं रहे, जो उनके गीतों को गुनगुनाते हुए अपनी थकावट भूल जाते हैं। निस्सन्देह वाल्मीकि की लेखनी ने मानव-हृदय पर जिस सम्पूर्णता से प्रभाव डाला है वैसा प्रभाव और किसी कवि की लेखनी डालने में सफल नहीं हुई है।

राम इतिहासकालीन राजा थे या नहीं, इस बारे में कुछ व्यक्ति अभी भी शंकाशील हैं, यद्यपि कोई भी भारतीय उनके अस्तित्व को अस्वीकार नहीं करता। लेकिन ऐसे लोग भी इस बात से निश्चय ही

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहमत होंगे कि वाल्मीकि की लेखनी से उद्भूत राम का अस्तित्व था और भविष्य में भी सदा-सर्वदा उनका अस्तित्व बना रहेगा। राम जैसे कर्त्तव्य-परायण पुत्रों, सीता जैसी पतिव्रता पत्नियों और लक्ष्मण जैसे भ्रातृभक्त भाइयों की भारतीय इतिहास में कमी नहीं; लेकिन पुरातन-काल के इस महाकवि की अनुपम कृति के आगे उनकी आभा उसी प्रकार धीमी पड़ जाती है जैसेकि चन्द्रमा की रजत ज्योति के बढ़ते हुए प्रकाश में चमकते हुए तारों की आभा फीकी पड़ने लगती है। अपने प्रश्रयदाता राजाओं की यशःकीर्त्ति को अमर बनाने का अतीत में कवि-गण अपनी रचनाओं द्वारा बराबर प्रयत्न करते रहे हैं, लेकिन उनकी कृतियों को साहित्य के मृदु संगीत में एक सुरीली पर अगम्य तान जोड़ने से अधिक सफलता नहीं मिली। इसके विपरीत मानव-सभ्यता के अस्पष्ट बाल्यकाल में और इतिहास के उन अस्पष्ट दिनों में, जिन्हें हम बहुत-कुछ भूल चुके हैं, जिस काव्य-संगीत ने जन्म लिया वह दूरवर्त्ती थाई देश सहित अनेक देशों के साहित्य-संगीत को अभी भी झंकृत कर रहा है।

थाई देश के रामायण-साहित्य में एक विशिष्टता है। वह यह कि 'रामायण' शब्द उसमें कहीं नहीं मिलता और उसके रचयिता के बारे में भी सामान्यतः कोई कुछ नहीं जानता। थाई लोग तो 'राम-कीर्त्ति' को ही जानते हैं, क्योंकि इसी रूप में वहां रामायण का प्रचार है। यह श्रेय तो थाई देश के छठे राम राजा को ही है कि उन्होंने 'राम-कीर्त्ति' के मूल का पता लगाकर उसका पाण्डित्यपूर्ण विश्लेषण किया। तभी जाकर 'राम-कीर्त्ति' के मूल रूप रामायण का पता लगा और उसके रचयिता वाल्मीकि के बारे में मालूम हुआ। लेकिन तब भी यह जान-कारी उन्हींतक सीमित रही, जो थाई देश के उच्च साहित्य में विशेष रुचि लेते हैं। जहांतक सर्वसामान्य का सम्बन्ध है, उन्हें अभी भी राम-कीर्त्ति के मूल नाम और उसके रचयिता के बारे में कुछ भी पता नहीं है।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.
कोई लोकप्रिय गीत जब लोगों को अपने माधुर्य से मोह लेता है और वे उसके सम्मोहन में फंस जाते हैं तो धीरे-धीरे इस बात

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को वे भूल जाते हैं कि उसका रचयिता कौन है, वाल्मीकि के बारे में भी ऐसा ही हुआ है। उनकी रचना के सम्मोहन से लोग इतने मुग्ध हो गये हैं कि उसके लेखक की खोज करने का उन्हें भान ही नहीं रहा। वह कवि सचमुच धन्य है, जो अपनी काव्य-प्रतिभा के अरुणोदय में भी उसी प्रकार अस्पष्ट रहता है, जिस तरह चकाचौंध करनेवाली किरणों से घिरा हुआ सूर्य। सूर्य के उज्ज्वल प्रकाश का तो हम उपयोग करते हैं, किन्तु उसकी ओर देखने पर हमारी आंखें चौंधियाने लगती हैं, जिससे उसकी ओर देखने का साहस नहीं करते।

ऐसी स्थिति के बावजूद थाई देश की संस्कृति पर रामायण का जो प्रभाव पड़ा, वह इन तीन क्षेत्रों में बिल्कुल स्पष्ट है—साहित्य, कला और नाटक। थाई देश में रामायण के प्रभाव का सर्वप्रथम समावेश यों तो ईसाई संवत् की तेरहवीं सदी में ही खोजा जा सकता है, लेकिन राम-कीर्त्ति का सुन्दर महाकाव्य में समावेश रत्न कोषिन्द्र-काल (लगभग १७८१ ईस्वी) के प्रारम्भ में ही हुआ और वह महाकाव्य आज भी थाई देश के श्रेष्ठ साहित्य का महारत्न माना जाता है। प्राचीनकाल से रामायण का कितना प्रभाव वहां चला आ रहा है इसका पता अक्सर उस समय के राजाओं और राज-पुरुषों के नामों तथा तत्कालीन साहित्य के उद्धरणों से लगता है। राम-कीर्त्ति के आदि कवि होने का श्रेय प्रथम राम राजा को है, जो इस समय शासन कर रहे चक्री-वंश के संस्थापक थे। काव्य को नाटयरूप उनके पुत्र द्वितीय राम राजा (१८०६-१८२४ ई०) ने दिया और मुखौटे लगाकर खेले जानेवाले नाटक का उसने रूप लिया। अभिनय करनेवाले पात्र-पात्रों की भड़कीली पोशाक, तालसुर के साथ उनके कोमल शरीर की मोहक गतिविधि और संलग्न संगीत की सुरीली तान के साथ मुखौटेवाला यह अभिनय सार्वजनिक समारोहों के समय अब भी खेला जाता है और चलचित्रों के इस जमाने में भी बहुसंख्यक दर्शकों को आकर्षित करता है।

यह यहां बता देना आवश्यक है कि मुखौटे वाले अभिनयों के लिए सर्वप्रथम साहित्य अयोध्या-काल (सन १३४६-१६४७ ईस्वी) में सामने आया। लेकिन रामायण पर आधारभूत अनेक नाटकों की तरह

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
उस समय जो नाटक लिखे गये उनकी कथावस्तु रामायण की छुटपुट घटनाओं तक ही सीमित रही और उस तरह की क्रमबद्धता का उनमें अभाव है, जैसी उसके बाद रचित द्वितीय राम राजा के मुखौटा-नाटक में हम पाते हैं। यों प्रथम राम राजा से ठीक पहले राज करनेवाले धोनबरी के राजा ने भी रामायण की कुछ घटनाओं को पद्यबद्ध करने का प्रयास किया था। उनके बनाये हुए पद्य अब भी विद्यमान हैं।

लेकिन मुखौटेवाले अभिनय के बहुत पहले थाई देश में एक ऐसा अभिनय प्रचलित था, जिसे थाई भाषा में हूंन (Hnang) कहते हैं। हूंन का अर्थ खाल है, और इस अभिनय में रामायणकालीन सभी पात्रों को खाल काटकर तथा उसे पात्र विशेष के रंग में रंगकर—जैसे राम को हरे रंग में, लक्ष्मण को सुनहरी रंग में, आदि—उस पात्र का रूप दिया जाता था। ये पात्र बहुत कुछ कठपुतलियों की तरह होते थे, फ़र्क सिर्फ यह था कि सभामंच पर कठपुतलियों का नियंत्रण जहां डोरी द्वारा किया जाता है, वहां इन्हें हाथ से हिलाया-डुलाया जाता था। इस तरह का अभिनय सामान्यतः रात्रिकालीन समारोहों में किया जाता था। लेकिन अब तो यह समय के साथ लगभग विलीन ही हो गया है और इसमें काम आनेवाली खाल की मानवाकृतियां संग्रहालयों में थाई कला के अद्‌भुत नमूनों के रूप में ही शरण पा रही हैं। यहां यह बता देना भी आवश्यक है कि इस तरह का अभिनय थाई देश में जावा से आया और वह संस्कृत के छायानृत्य का ही परिवर्त्तित रूप था।

ललितकलाओं पर भी हमें रामायण का पूरा प्रभाव दिखलाई पड़ता है। भगवान बुद्ध के रत्नजटित मंदिर के गलियारे की दीवारों पर जो रामायण की घटनाओं के चित्र बनाये गए हैं उनका महत्व इस दृष्टि से सर्वाधिक है। इस चित्रावली में कोई दोसौ चित्र हैं, जो प्रथम राम राजा के समय के बने हुए हैं। पंखों, तकिये के खोलों वगैरा पर भी रामायणकालीन आकृतियां काढ़ी जाती हैं तथा कमर पर बांधी जानेवाली पट्टी में लगी धातु और सिगरेट की डिब्बी वग़ैरा पर उन्हें करीने से खोदा जाता है। इस तरह हम निश्चय ही यह कह सकते हैं कि राम की महाकीर्त्ति को लेकर ललित कलाओं में एक ऐसी विशिष्ट कला
CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का विकास हुआ है, जिसे निश्चित रूप से ललितकला का रामायण से प्रभावित रूप कहा जा सकता है। इस तथ्य से कोई इन्कार नहीं कर सकता कि थाई देश से राम-कीर्त्ति और थाई देश की संस्कृति के विभिन्न क्षेत्रों पर पड़नेवाले उसके प्रभाव को हटा लिया जाय तो थाई देश अपने उच्च साहित्य की महानता से बहुत हद तक वंचित हो जायगा। यह राम-कीर्त्ति ही है, जिससे उसे अनुकरणीय व्यक्तियों की कल्पना और उत्तम शब्दावली तथा श्रेष्ठ विचारों और स्फूर्ति की सतत उपलब्धि होती रही है। यही कारण है कि पश्चिम की चकाचौंध में पूर्व का गौरवमय अतीत जब धीमा पड़ रहा है। ऐसे समय में भी उसका काव्य-गान शिक्षित-अशिक्षित सभी तरह के लोगों को मंत्रमुग्ध कर देता है।

राम की महिमा का जैसा बखान थाई देश में पाया जाता है, उसपर रामायण का सीधा प्रभाव कभी नहीं पड़ा। राम-कीर्त्ति में तो ऐसी कहानियों का समावेश है, जो उत्तर भारत से लेकर मलाया तक अनेक देशों में लोकप्रिय हैं। इससे निश्चय ही यह स्पष्ट है कि थाई देश में राम की कथा अनेक देशों में होती हुई पहुंची। जहांतक कथा-वस्तु का सम्बन्ध है वह तो यद्यपि रामायण की मुख्य कथा से पूरी तरह मेल खाती है, तथापि विस्तार की बातें मूल कथा से एकदम भिन्न हैं और उससे मेल नहीं खातीं। यही कारण है कि उसे पढ़ते हुए हमें कुछ ऐसा लगने लगता है मानो राम का रामायण से बिल्कुल भिन्न कोई वर्णन पढ़ रहे हैं। संस्कृत रामायण का प्रारम्भ वाल्मीकि द्वारा नारद से किये गए प्रश्न से होता है, जबकि 'राम-कीर्त्ति' में नारायण के तृतीय अवतार से कथा का आरम्भ किया गया है। इसका आधार 'नारायण सिप्पंग' (नारायण के दस अवतार) नाम के प्राचीन ग्रंथ पर है, जिसमें नारायण रूपी भगवान के इस क्रम से दस अवतारों का उल्लेख है—(१) वाराह, (२) कच्छप, (३) मत्स्य, (४) वृषभ, (५) त्रिपुंट से शिवलिंग लेने के लिए तपस्या करनेवाला संन्यासी, (६) हिरण्यकश्यपु को मारने के लिए सिंह (नरसिंह), (७) राक्षस तावन (बलि) को छलने के लिए बामन (८) कृष्ण (९) अप्सरा (चौथे हस्तिलेख के अनुसार) और (१०) राम। दूसरी रोचक विशेषता यह है कि रामायण के सभी

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
भारतीय वर्णनों में जहां राम या नारायण को सभी देवताओं से ऊंचा स्थान दिया गया है वहां राम-कीर्त्ति में हम उन्हें देवताओं में सबसे बड़े माने जानेवाले ईश्वर से नीचे पाते हैं।

राम-कीर्ति में आये रामायणकालीन नामों के बारे में भी संक्षेप में यह विचार कर लेना ठीक होगा कि मूल नामों से उनमें अन्तर क्यों है। राम-कीर्ति पुस्तक को देखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि उसमें व्यक्तियों और स्थानों के नामों के सम्बन्ध में तीन विशिष्ट पद्धतियां अपनाई गई हैं। प्रथम तो यह कि राम, हनुमान आदि कुछ नाम उनके मूल रूप में ही रखे गये हैं। दूसरी यह कि मूल नामों को बिल्कुल बदल दिया गया है, जैसे मंथरा को कुच्ची लिखा गया है, जो स्पष्टतया संस्कृत कुब्जी का बिगड़ा हुआ रूप है। तीसरी यह कि मूल नामों को संशोधित रूप में लिखा गया है, जैसे शत्रुघ्न को शत्रुद और कुबेर को कुपेरन। ऐसे परिवर्तनों और संशोधनों का एक कारण भाषा की ध्वनि सम्बन्धी विशेषता भी हो सकता है। कभी-कभी दो व्यंजनों के बीच आये 'अ' स्वर को निकालकर दोनों व्यंजनों को ही संयुक्त कर लिया जाता है, इसके विपरीत अन्त में आये 'अ' का बोलते वक्त हम उच्चारण नहीं करते--जैसाकि बंगला भाषा में हम अक्सर देखते हैं। गरुड़ को इस प्रकार वहां ख्रुत कहा जाता है। इसके अलावा थाई भाषा मूलत: एकाक्षरी भाषा होने के कारण और उसका झुकाव सही अक्षरविन्यास के बजाय शब्दध्वनि पर होने से शब्दों को उसमें अक्सर हम उनके संशोधित रूप में पाते हैं तथा उनके उच्चारण में भी संक्षिप्तीकरण की प्रवृत्ति है। इसी दृष्टि से लक्ष्मण को लक्षण लिखा जाता है, जो थाई भाषा का एक सामान्य शब्द है, पर बोला खाली लक जाता है—यानी शब्द के सिर्फ पहले अक्षर की ध्वनि रखकर बाकी सबको छोड़ दिया जाता है। थाई भाषा की दूसरी विशेषता यह है कि वर्णमाला के तीसरे और चौथे अक्षरों का उच्चारण एक ही तरह किया जाता है, जिनकी ध्वनि संस्कृत वर्णमाला के दूसरे अक्षर की तरह होती है। इसके अनुसार 'ग' 'घ' का उच्चारण संस्कृत के 'ख' की तरह होता है। रामायणकालीन नामों को संशोधित रूप देने में यह भी एक

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारण रहा है। इसीलिए हम देखते हैं कि भरत को बरत लिखा गया है और उसका उच्चारण फ्रोत होता है। प्रसंगवश यह बतला देना ठीक होगा कि 'अ' का उच्चारण 'ओ' के हलके रूप में किया जाता है।

लेकिन अनेक परिवर्तित और संशोधित नाम ऐसे हैं, जिनकी भाषा की ध्वनि-सम्बन्धी विशेषता से कोई संगति नहीं बैठती। इन नामों पर विचार करें तो हम रामायण के थाई रूप के स्रोतों के बहुत निकट पहुंच जाते हैं, क्योंकि उससे राम-कीर्ति की कथावस्तु पर पड़े विविध प्रभावों का स्पष्ट भान हो जाता है। उदाहरण के लिए हम कुपेरन नाम को लें। थाई भाषा की अनेक रचनाओं में हमें संस्कृत शब्द 'कुबेर' मिलता है, पर राम-कीर्ति में धन-सम्पत्ति के देवता के लिए हर जगह कुपेरन शब्द ही आया है, जोकि तमिल भाषा का शब्द है और उससे तमिल प्रभाव के अवशेष का सरलता से बोध होता है। इस तरह राम-कीर्ति में आये रामायणकालीन नामों का सूक्ष्म अध्ययन करने पर हमें इस बात का आसानी से पता चल सकता है कि थाई भाषा में राम की गौरव-गाथा किन सूत्रों के आधार पर लिखी गई। लेकिन यह ऐसा विषय नहीं, जिसे भूमिका के अन्दर कुछ पंक्तियों में पूरी तरह समझाया जा सके।

इस पुस्तक की दृष्टि से तो हमारा मात्र यही उद्देश्य है कि राम-कीर्त्ति की विशेषताओं को ज्यों-का-त्यों सुरक्षित रखते हुए हम पाठकों को उसका स्पष्ट वर्णन प्रस्तुत करें, कारण कि इन विशेषताओं को कायम रखने पर ही हमें इस बात का पता लग सकेगा कि राम-कीर्त्ति में इन अतिरिक्त कथाओं का प्रवेश मूलत: कहां से हुआ।

अन्त में मैं उन महानुभावों का उल्लेख किये बिना नहीं रह सकता, जिनके सहयोग से ही मैं इस कार्य को पूरा कर सका हूं। फया अनुमान राजधन और फया सार प्रसेरत से मुझे बहुमूल्य सुझाव मिले, इन महानुभावों को मैं हार्दिक धन्यवाद देता हूं।

—स्वामी सत्यानन्द पुरी

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

१. अयोध्या का पहला राज — १
२. राम जन्म — ४
३. लंका की उत्पत्ति — ६
४. दशकंठ का हाल — ९
५. दशकंठ और मण्डो का विवाह — ११
६. बाली और सुग्रीव की उत्पत्ति — १६
७. हनुमान का जन्म — २१
८. अंगद की उत्पत्ति — २३
९. दशकंठ को वरदान — २४
१०. सीता-जन्म — २५
११. रामा-काकनासुर-युद्ध — २८
१२. राम-सीता-परिणय — ३०
१३. राम-रामासुर-युद्ध — ३२
१४. राम-वनवास — ३३
१५. राम-पादुका — ३५
१६. गोदावरी के तट पर राम — ३७
१७. सम्मनखा — ३९
१८. सीता-हरण — ४२
१९. सीता की खोज — ४५
२०. राम और सुग्रीव की भेंट — ४८
२१. बाली का पतन — ५२
२२. युद्ध की तैयारी — ५४
२३. हनुमान की लंका-यात्रा — ५६

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२४. लंका-दहन ६१
२५. विभेक वीर रामभक्ति ६५
२६. सेतुबंध ७०
२७. राम का हरण ७३
२८. कुम्भकरण की मृत्यु ७६
२६. लक्ष्मण और इंद्रजित का युद्ध ८५
३०. इंद्रजित का अंत ६०
३१. युद्धभूमि में दशकंठ और उसके मित्र ६५
३२. मलिवग्गब्रह्मा का न्याय १०१
३३. महास्त्र कपिलबद १०४
३४. अमृत १०६
३५. आत्मा का पिंजड़ा १११
३६. दशकठ-वध ११७
३७. सीता की अग्नि-परीक्षा १२४
३८. राम का अयोध्या लौटना १२७
३६. लंका में विद्रोह १३१
४०. सीता-वनवास १३६
४१. मङ्कुट और लव की उत्पत्ति १४३
४२. रामाश्वमेध १४५
४३. सीता का पाताल-प्रवेश १५०
४४. राम की वन-यात्रा १५२
४५. राम और सीता का पुनर्मिलन १५४

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राम-कीर्ति

•

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: १ :

अयोध्या का पहला राजा

बहुत दिन की बात है। संसार की बाल्यावस्था थी। चक्रवाळ पर्वत की चोटी पर एक राक्षस रहता था। उसका नाम हिरन्तयक्ष[1] था। उसका हिरण्यमय चेहरा ऐसा तमतमाता था कि लोग देखकर ही डर जाते थे। उसे ईश्वर की ओर से वरदान मिला था कि उसको कोई पराजित न कर सकेगा, पर इतने से ही उसको सन्तोष न हुआ। उसने भूमि के तीन भागों अर्थात् जम्बूद्वीप, उत्तरकुरु और अमर गोयान को भूमि में से काटकर चटाई के समान लपेट लिया और बगल में दबाकर पाताल लोक को चला गया।

परन्तु अपराजित होने का वर पाकर भी उसके नाश के दिन निकट आ गये। उसकी उद्दंडता और धृष्टता ने देवताओं के हृदयों को भी कम्पायमान कर दिया। वे ईश्वर से संरक्षण के लिए याचना करने के हेतु कैलाश को चल पड़े। ईश्वर तो स्वभावतः ही दयालु हैं। जब उन्होंने तीन लोक के निवासियों के दुःख के समाचार सुने तो उनका हृदय द्रवित हो गया। उन्होंने नारायण को बुलाया और कहा, "तुरन्त जाओ और संसार को हिरन्त के अत्याचार से मुक्त करो।" फलतः नारायण ने शूकर का रूप धारण किया और पाताल में उस

१. हिरण्याक्ष

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थान पर जा पहुंचे, जहां अपनेको सुरक्षित समझकर हिरंत निवास करता था। उन दोनों में घोर युद्ध हुआ। अन्त में नारायण की विजय हुई और हिरन्त मारा गया।

उसके बाद नारायण अपने निवास-स्थान क्षीरसागर को चले आये और वेद-गान में लीन हो गये। जब नारायण की वेद-ध्वनि से चारों दिशाएं गूंज रही थीं, ऐसे समय में समुद्र के तल पर एक सुन्दर कमल का फूल प्रकट हुआ। उसकी सुगन्धित सुन्दर पत्तियों में से एक बच्चा निकला, जिसका रूप अद्वितीय तथा मनोहर था। नारायण उस बच्चे को गोद में लेकर ईश्वर से भेंट कर आने के विचार से कैलाश की ओर चल पड़े।

ईश्वर की आज्ञा हुई कि इस बालक को संसार का सबसे प्रथम सम्राट् नियुक्त किया जाय। उसने राक्षसों से संसार की रक्षा करने के लिए नारायण-वंश की नींव डाली।

यह निश्चित हुआ कि इस चमत्कृत बालक का शासन जम्बूद्वीप में आरंभ होना चाहिए। इन्द्र को आज्ञा हुई कि इसके लिए एक सुन्दर राजधानी का निर्माण किया जाय।

ईश्वर की आज्ञा का पालन करने के लिए इन्द्र जम्बूद्वीप में आये और अचनगवि, युगाग्र, दाह और याग नाम के ऋषियों से मिले। उन्होंने इन्द्र को परामर्श दिया कि हमारे निवास-स्थान द्वारावती में राजधानी बनाओ। तदनुसार नारायण-वंश के राजाओं की राजधानी, जहां द्वारावती का वन था, वहां बनाई गई। उसका नाम अयुध्या हुआ, क्योंकि अयोध्या शब्द उन चार अक्षरों से बनता है, जो इन चार ऋषियों के नाम के पहले अक्षर हैं।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालक का नाम अनोमातन रक्खा गया और उसको अयोध्या के राज-सिंहासन पर बिठा दिया गया। लोग उसको नारायण का अवतार मानने लगे, क्योंकि वह राक्षसों और दानवों से मनुष्यों की रक्षा करने के हेतु आया था। इस दिव्य कर्त्तव्य को पूर्णतया पालन करने के हेतु उसको चार साधन प्रदान किये गए—तीर, त्रिशूल, गदा और चक्र। इन्द्र ने इसके अतिरिक्त राजा को एक महारानी भी दी, जिसका नाम मणिकेसर था, जिससे अनोमातन की मृत्यु के पश्चात उसके वंश का नाश न हो सके। उनके अजपाल नाम का एक पुत्र उत्पन्न हुआ। जब अजपाल युवा हो गया तो अनोमातन ने अयोध्या का राज उसे दे दिया और स्वयं स्वर्ग-लोक को चला गया।

अजपाल ने भी अपने पिता के समान संसार को राक्षसों से सुरक्षित रखने के लिए इस प्रकार शासन किया कि देव और मनुष्य सभी संतुष्ट हो गये। इसी समय असुरब्रह्म नामक एक राक्षस था, जिसको किसी वरदान में ईश्वर ने एक गदा दी थी। इस गदा को लेकर असुरब्रह्म अत्याचारी हो गया। उस समय राजा अजपाल ने मालीवग नामक एक दूसरे देव की सहायता से, जो सत्यपथ का अनुगामी था, ईश्वर से एक तलवार प्राप्त की और उस तलवार से असुरब्रह्म को मार डाला। अजपाल ने बहुत वर्षों तक यशपूर्वक राज किया और इसके उपरान्त वह भी स्वर्गवासी हो गया। उसके सुपुत्र दशरथ ने उसके पश्चात् वंश-परम्परा को जारी रक्खा।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: २ :

राम-जन्म

अजपाल की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र दशरथ अयोध्या की गद्दी पर बैठा । उसके तीन रानियां थीं । कौसुरिया, समुद्रा, कैय्यकेशी । यद्यपि उसको राज के सभी सुख प्राप्त थे और उसकी पत्नियां भी हर प्रकार से पतिभक्ता थीं, तथापि उसको एक शोक निरन्तर चिन्तित करता था । उसकी किसी भी रानी से कोई पुत्र न जन्मा, जो उसका उत्तराधिकारी हो सकता ।

अन्त में उसने चार ऋषियों अर्थात् वशिष्ठ, स्वमित्र, बज्जवग्ग और भरद्वाज से परामर्श किया । यद्यपि वे हर प्रकार से राजा की सहायता करने के इच्छुक थे, तथापि उनमें ऐसी शक्ति न थी कि वे उस वंश के अनुरूप एक उत्तराधिकारी की उत्पत्ति करा सकें, जिससे नारायण-वंश की परम्परा जारी रखी जा सके तथा जिसके द्वारा राक्षसों से संसार की रक्षा हो सके ।

उस समय राक्षस लोग प्रबल हो रहे थे और सर्वत्र संसार के मनुष्यों को पीड़ा दे रहे थे । अयोध्या की गद्दी पर ऐसा कोई राजा नहीं था, जो राक्षसों का दमन कर सके ।

एक ऋषि थे सिंगमुनि । उनका पुत्र था कलैकोटी । वह हिरनी के पेट से पैदा हुआ था । उसका शरीर तो मनुष्य का-सा था, परन्तु उसका मुंह हिरन का-सा था । बाल्यावस्था में

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसका तप इतना उग्र था कि रोमवत्तन नामक देश में जहां वह तपस्या करता था, उस तप के तेज से घोर अकाल पड़ गया। उस देश के राजा ने अपनी कन्या को भेजा कि वह ऋषि-पुत्र के तप को भंग करके उसे गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने के लिए प्रेरित करे। स्त्री के लावण्य ने ऋषिपुत्र को सहज ही प्रभावित कर दिया। ऋषि ने अपना तप छोड़ दिया। फलस्वरूप देश में विपुल वर्षा हो गई और वह ऋषि-पुत्र जामाता के रूप में राजमहलों में रहने लगा।

राजा दशरथ के निमंत्रण पर वह ऋषि-पुत्र अयोध्या आया और सुवेष्टियज्ञ की तैयारी में लग गया। उन चार ऋषियों को लेकर वह कैलाश पर्वत पर गया। उस समय कुछ देवों के प्रताप से राक्षसों को विशेष वरदान मिले हुए थे, जिनके द्वारा वे मनुष्यों पर बड़े-बड़े अत्याचार कर रहे थे। परिणाम-स्वरूप जगत् उनकी उद्दंडता से महती पीड़ा का अनुभव कर रहा था। उनकी शक्ति इतनी बढ़ गई कि किसी में उनको पराजित करने का सामर्थ्य न था। अतः ऋषि कलैकोटी ने ईश्वर से प्रार्थना की कि महाराज, आप नारायण को मृत्युलोक में भेजिये, जिससे वह दशरथ के पुत्र के रूप में अवतार लें और पृथ्वी को विपत्ति से मुक्त करावें।

नारायण को जब इस काम के लिए प्रेरणा दी गई तो वह राजी हो गये। परन्तु उनकी शर्त यह थी कि लक्ष्मी, अनन्तनाग, गदा, चक्र और शंख, ये भी उनके साथ-साथ अवतार लें। ईश्वर ने उनकी इस शर्त को मान लिया और उनको भी अवतार लेने की आज्ञा मिल गई।

ईश्वर ने ऋषियों से कहा कि आप मिलकर यज्ञ आरम्भ

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करें। यज्ञ की अग्नि में से एक देवता का प्रादुर्भाव होगा। उनके सिर पर एक पात्र होगा और उसमें चार रोटियां होंगी। उसी समय एक कौआ उस पात्र पर झपट्टा मारेगा और आधी रोटी लेकर दक्षिण की ओर भाग जायगा। शेष रोटियों को दशरथ की रानियों में बांट दिया जाय। उसके फल-स्वरूप रानियों के चार पुत्र उत्पन्न होंगे।

ईश्वर की आज्ञा का अक्षरशः पालन किया गया और जैसाकि पूर्व-कथित था वैसा ही ठीक-ठीक घटित हुआ। नारायण ने कौसुरिया के पुत्र के रूप में अवतार लिया। वह हरे वर्ण के थे। चक्र ने कैय्यकेशी के पेट से भरत के रूप में जन्म लिया। वह रक्त वर्ण के थे। नाग और शंख दोनों ने संयुक्त होकर समुद्रा के पेट से लक्ष्मण के रूप में जन्म लिया। वह पीत वर्ण के थे। गदा ने भी समुद्रा के पेट से जन्म लिया। उसका नाम शत्रुद था। यह बैंगनी वर्ण के थे। इन चार पुत्रों में राम सबसे बड़े थे। उनके पश्चात् भरत, लक्ष्मण और शत्रुद क्रमशः एक दूसरे से छोटे थे।

: ३ :

लंका की उत्पत्ति

भविष्यवाणी के अनुसार देवता के प्रकट होते ही कौआ भी प्रकट हुआ और वह आधी रोटी लेकर दक्षिण की ओर भाग गया। इसी रोटी से लक्ष्मी की सीता के रूप में उत्पत्ति होनी थी।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
दक्षिण में राक्षसों की राजधानी लंका थी। इस कौए की लंका के अधिपति दशकंठ ने इसलिए भेजा था कि वह दैवी भोजन में से एक अंश ले आवे और उसकी महारानी मण्डो उसको खा सके।

यहां प्रसंग-वश हमको यह भी बताने की आवश्यकता है कि दशकंठ को लंका की गद्दी किस प्रकार मिली और मण्डो किस प्रकार उसकी रानी हुई।

पहले लंका का नाम रंगका था। नीलकाल पर्वत के ऊपर एक कौए का बहुत बड़ा घोंसला था, जिसके कारण उसका यह नाम पड़ा।[1] सहपति (सहस्रपति) ब्रह्मा ने इसको अपने एक भक्त सहमलिवन के लिए बसाया था और वही लंका का पहला राजा हुआ, परन्तु नारायण के डर से उसने अपनी राजधानी छोड़ दी और पाताल देश में रहने लगा।

ब्रह्मा ने देखा कि उसकी सृष्टि पर कोई शासन करने-वाला नहीं रहा तो उसने विश्वकर्मा को आज्ञा दी कि नील-काल पर्वत पर एक अति सुन्दर नगर बसाओ। इस नगर का नाम विजय लंका पड़ा और ब्रह्मा ने राज का कार्य अपने एक दूसरे भक्त के सुपुर्द किया, जिसका नाम चतुर्वक्र था। उसकी रानी का नाम था मालिका। चतुर्वक्र की मृत्यु के उपरान्त उसका पुत्र लस्तियन् गद्दी पर बैठा। यह बड़ा शक्तिशाली राक्षस था। इसके पांच रानियां थीं। श्री सुनन्दा कुपेरन की मां थी। चित्रमाली देवनासुर की, स्वर्णमालै

---

१. स्यामी भाषा में 'का' का अर्थ है कौआ और 'रंग' का अर्थ है घोंसला।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंशधाता की, वरप्रभा मारन की। पांचवीं रानी का नाम रजटा था। उसके छ: पुत्र और एक पुत्री थी। पुत्रों का नाम था—दशकंठ, कुम्भकर्ण, विभेक, दुखन, खर और सुमनक्खा।

उस समय पाताल का राजा कालनाग था। हम ऊपर बता चुके हैं कि लंका के पहले राजा सहमलिवन ने भागकर पाताल में शरण ली थी। कालनाग को इस राजा का पाताल-लोक में रहना अभीष्ट न था। उसको भय था कि कहीं यह राजा इतना बलवान् न हो जाय कि मुझे गद्दी से उतार-कर स्वयं ही राजा बन बैठे। अतः अवसर पाकर उसने सह-मलिवन पर चढ़ाई कर दी। उस समय सहमलिवन की लंका के वर्तमान राजा से मैत्री हो गई थी और उसने लंकाधिपति चतुर्वक्र की अधीनता भी स्वीकार कर ली थी। अतः इस अवसर पर उसने लस्तियन् से सहायता की याचना की। उसकी सहायता से कालनाग सहज ही पराजित हो गया। जब कालनाग ने देखा कि लस्तियन् के शस्त्र से उसका जीवन समाप्त होने से बच सकेगा तो उसने अपनी लड़की काल-अग्गी लस्तियन् को समर्पित कर दी और अपनी जान लेकर भाग गया। लस्तियन् ने इस लड़की को ले लिया और अपने पुत्र दशकंठ से उसका विवाह कर दिया।

जब लस्तियन् वृद्ध हुआ तो उसने अपना राज अपने दशों पुत्रों में बांट दिया, जिससे उसकी मृत्यु के उपरान्त उनमें परस्पर युद्ध न हो। यह बंटवारा इस प्रकार हुआ—दश-कंठ लंका का राजा हुआ; कुपेरन कालचक्र का अधिपति बना, और पुष्पक विमान भी उसीके हाथ आया; देवनासुर के भाग में चक्रवाल का राज आया; अंशधाता बादकन का राजा

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ। मारन सीलाश का, दवर रोमगल का, दुशन चारिक का—जो जनपद में है, तिशिरा मज्जवारी का राजा हुआ। सम्मनक्खा का विवाह राजा जिव्हा से कर दिया गया।

: ४ :

दशकंठ का हाल

दशकंठ अपने सगे और सौतेले भाइयों में सबसे अधिक शक्तिशाली था। उसका शासन इतना कड़ा था कि क्या सेना और क्या प्रजा, सभीको उसकी आज्ञा अक्षरशः माननी पड़ती थी। परन्तु यह शक्ति उसने इस जन्म में उपार्जित नहीं की थी। वस्तुतः किसी पूर्व-जन्म में जब वह स्वर्ग में रहा करता था, किसी सुकर्म के फलस्वरूप उसको यह शक्ति प्राप्त हुई थी।

कैलाश पर्वत पर एक देव रहता था, जिसका नाम नन्दक था। नन्दक का काम था कि जो देव ईश्वर के दर्शनार्थ कैलाश पर्वत पर आते, उनके वह पैर धोता। जो देव कैलाश आते, वे अपनी रुचि के अनुसार इस सेवा-कार्य में नन्दक को छेड़ा करते। कोई उसके सिर पर चपत मारता तो कोई उसके बाल नोंचता। इस प्रकार भिन्न-भिन्न रीति से वे उसके साथ विनोद किया करते थे। परिणाम यह हुआ कि उसके सिर पर एक भी बाल शेष न रह गया और वह गंजा हो गया। अत्यन्त पीड़ित होकर उसने ईश्वर की शरण ली और

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रार्थना की कि महाराज, मुझे ऐसा वरदान दीजिए कि मैं जिसकी ओर अंगुली से संकेत कर दूं वह वहीं गिर कर मृत्यु का ग्रास बन जाय।

बहुत दिनों की निरन्तर सेवा से प्रसन्न होकर ईश्वर ने नन्दक की प्रार्थना स्वीकार कर ली और उसको अपना इच्छित वरदान मिल गया। देवताओं को इस वरदान का पता न था। वे अपनी पुरानी आदत के अनुसार उसे परेशान करते और नन्दक को मिले वरदान के फलस्वरूप उन्हें अपने प्राणों से हाथ धोने पड़ते।

इन्द्र ने जब देखा कि बहुत-से देवता इस प्रकार मर गये हैं तो ईश्वर से प्रार्थना की कि महाराज, किसी प्रकार अपने इस भक्त से इस वरदान को वापस लें। तब ईश्वर ने नारायण को आदेश दिया कि वह नन्दक को परास्त करके देवों की रक्षा करें। नारायण ने अप्सरा का रूप धारण किया और नन्दक को मोह में फंसाने लगे। नन्दक मोहित हो गया और उसने अप्सरा को प्राप्त करना चाहा, लेकिन अप्सरा ने कहा, "पहले तुम मेरे साथ नाचो, उसके बाद मैं तुम्हारे साथ विवाह कर लूंगी। नन्दक इसके लिए राजी हो गया और नाच आरंभ हुआ। नाच में अप्सरा ने अपनी अंगुली अपने पैरों की ओर दिखाई। नाच की धुन में नन्दक को अपने वरदान का स्मरण नहीं रहा और उसने भी अनुकरण के रूप में अपनी अंगुली अपने पैरों की ओर दिखाई। फलतः उसकी टांगें टूट गई। अप्सरा ने अपना असली रूप धारण कर लिया और नारायण नन्दक को मारने दौड़े। नन्दक ने नारायण को बहुत बुरा-भला कहा और बोला कि तुमको मेरे साथ इस प्रकार धोखा नहीं करना

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
चाहिए था। यह वीरोचित काम नहीं है। नारायण ने कहा कि अगले जन्म में तुम्हारे दस सिर और बीस भुजाएं होंगी, परन्तु मैं तुमको एक सिर और दो भुजाएं धारण करके ही मारूंगा। इस प्रकार नारायण द्वारा दिये गए पूर्वजन्म के वरदान के फलस्वरूप दशकंठ इतना बलशाली हुआ।

जब ईश्वर ने देखा कि दशकंठ के रूप में नादक का अवतार हो गया है तो वह सोचने लगे कि नारायण को भी अवतार लेने के लिए अवसर दिया जाय। उन्होंने एक देव वैस्सुन्नान को आज्ञा दी कि तुम दशकंठ के भाई के रूप में अवतार लो, जिससे नारायण राम का अवतार धारण करके लंकेश को मारने आवें तो उनकी सहायता कर सको। वैस्सुन्नान ने विभेक के रूप में जन्म लिया। उसके पास एक चमत्कृत शीशा था, जिसमें वह भविष्य की सब घटनाओं को यथावत् देख सकता था। यही कारण था कि विभेक को दशकंठ के सभी षड्यंत्रों का पता लग जाता था और उसी भेद को प्रकाशित करके विभेक ने लंका के राजा रावण का विनाश करने में राम की सहायता की।

: ५ :

दशकंठ और मण्डो का विवाह

दशकंठ का पहला विवाह पाताल की राजकुमारी काल-अग्गी के साथ हुआ था, परन्तु उसकी दूसरी रानी मण्डो थी, जिसके साथ उसका विवाह ईश्वर की प्रेरणा से हुआ।
CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मण्डो साधारण स्त्री न थी। उसका जन्म उन चार ऋषियों के चमत्कार के कारण हुआ था, जो हिमालय के जंगलों में तपस्या करते थे। ये ऋषि गायों का दूध पिया करते थे। ये गायें स्वयं रोज़ सुबह आकर शीशे के पात्र में अपना दूध डाल जाया करती थीं। जब ऋषि दूध पी चुकते तो जो कुछ बचता वह एक निकट में रहनेवाली मेंडकी को दे दिया जाता था।

उस समय पाताल-लोक में एक नागकन्या रहती थी, जो अत्यन्त विषयी थी। इसकी मदन-कामना कभी सन्तुष्ट नहीं हो सकती थी। इसलिए वह पाताल-लोक से निकल-कर मृत्युलोक में आ गई। यहां उसको कोई ऐसा पुरुष नहीं मिला, जो उसकी काम-वासना की तृप्ति कर सके। अन्त में उसको एक सांप मिला। उसने सांप से कहा कि तू मेरे साथ सहवास कर।

चारों ऋषि अपने दैनिक कृत्यों के लिए जंगल से फल-फूल लेकर आ रहे थे तो उन्होंने इस नाग-कन्या को कुकृत्य में लवलीन देखा। उसकी इस दुरवस्थिति का बोध कराने के लिए उन्होंने उसकी पूंछ में कुछ मार दिया। नाग-कन्या को लज्जा आ गई कि इन ऋषियों ने मेरे दुष्कृत्य को देख लिया। अतः वह वहां से भागकर वापस पाताल-लोक को चली गई, परन्तु यह सोचती रही कि इन ऋषियों से इस अपमान का बदला किस प्रकार लेना चाहिए। अवसर पाकर वह फिर मृत्युलोक में आ गई और ऋषियों के दूध के पात्र में विष मिला दिया।

मेंडकी, जो ऋषियों से बचा हुआ दूध पीती थी, देख

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रही थी कि उस दुष्टा ने ऋषियों का वध करने के हेतु दूध में विष मिला दिया है। वह ऋषियों की बड़ी भक्त थी। इसलिए वह पात्र में कूद पड़ी और दूध के विषाक्त होने के कारण तुरंत मर गई।

चारों ऋषि नित्य की भांति जब दूध पीने आये तो देखा कि मरी हुई मेंडकी दूध पर तैर रही है। उन्होंने समझा कि मेंडकी दूध के लालच में फंसकर मर गई। उनको उस पर दया आई और उन्होंने उसे मंत्रों द्वारा पुनर्जीवित कर दिया।

मेंडकी ने देखा कि ऋषियों ने मुझे लालची समझकर मेरे साथ अन्याय किया है, अतः उसने ऋषियों को सारा हाल कह सुनाया। यह सुनकर ऋषि उसपर बड़े प्रसन्न हुए और कृतज्ञता प्रकट करके उसको एक वर दिया, जिससे वह एक सुन्दरी कन्या बन गई। वही मण्डो थी। ऋषियों ने मण्डो को ईश्वर को समर्पित कर दिया और ईश्वर ने मण्डो को उमा को दे दिया कि वह उससे सेविका का काम लिया करें।

इधर कैलाश पर्वत पर एक दूसरी ही घटना घटी। दिशाओं का एक अधिपति देव वीरुल्हक ईश्वर के दर्शनार्थ ऊपर चढ़ रहा था। यह सोचकर कि ईश्वर महाराज पर्वत की चोटी पर देवताओं का नमस्कार ग्रहण कर रहे हैं, वह सीढ़ियों पर चढ़ता जा रहा था और हर सीढ़ी पर नमस्कार के लिए सिर झुकाता जाता था।

संयोग से ईश्वर महाराज वहां न थे। एक देव था सरभू। सरभू ने देखा कि ईश्वर तो यहां हैं नहीं, यह किसे नमस्कार कर रहा है? उसने वीरुल्हक को चिढ़ाना शुरू

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया। वीरुल्हक ने सिर उठाया तो सरभू पर उसकी दृष्टि पड़ी। वीरुल्हक को उसपर बड़ा क्रोध आया। उसके गले में सांपों का हार था। उसने उनमें से एक सांप सरभू के ऊपर फेंक दिया। इससे सरभू तुरंत मर गया। परन्तु सांप ऐसे जोर से फेंका गया था कि पर्वत का एक कोना जमीन में नीचे धंस गया।

जब ईश्वर ने देखा कि पर्वत का एक कोना धंसा हुआ है तो उन्होंने आदेश दिया कि जो कोई इस पहाड़ को उठाकर पूर्व की भांति ठीक कर देगा उसको मुंहमांगा इनाम दिया जायगा। देवों ने बहुत यत्न किया, परन्तु कैलाश टस-से-मस न हुआ।

तब ईश्वर ने दशकंठ को बुलाया। उसने पहाड़ को उठाने का वचन दिया। उसने अपने शरीर को ब्रह्मा के शरीर के बराबर बढ़ा लिया और पूर्ण बल से कैलाश को उठाने लगा। उसे सफलता प्राप्त हो गई। उसने पुरस्कार में ईश्वर से उमा की मांग की। ईश्वर अपने वचन को नहीं टाल सकते थे, अतः उमा उसके हवाले कर दी गई।

दशकंठ ने उमा को पकड़ लिया, परन्तु उसे अनुभव हुआ कि उमा का शरीर अग्नि के समान तप्त हो रहा है; फिर भी वह उमा को सिर पर रखकर लंकापुरी को चला।

देवों ने देखा कि ईश्वर के इस प्रतिज्ञा-पालन से तो बड़ा अनिष्ट होगा। वे सोचने लगे कि किसी प्रकार उमा को फिर ईश्वर के हवाले करना चाहिए। तब नारायण ने एक बूढ़े माली का रूप धारण किया और बाग में एक वृक्ष को इस प्रकार लगाने लगे कि जिसकी मूल ऊपर को रहे। जब

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
दशकंठ ने देखा तो वह उनको झिड़कने लगा—"अरे मूर्ख, तू यह क्या कर रहा है ? मूल ऊपर रखकर पत्तियों को जमीन में गाड़कर पेड़ रोप रहा है ?" इसपर नारायण ने उत्तर दिया कि तू तो मुझसे भी अधिक मूर्ख है, जो एक संतप्त दुष्टा स्त्री को, जिसका शरीर जल रहा है, कंधे पर उठाये फिरता है। यह तो तेरे वंश का विध्वंस कर डालेगी। तुझे तो एक ऐसी अच्छी स्त्री मांगनी चाहिए, जैसी मण्डो है।

दशकंठ ने यह सुनकर उमा को तो लौटा दिया और उसके स्थान में मण्डो को मांग लिया।

जब वह आकाश-मार्ग से लंका को जा रहा था तो खीद्-खिन् (किष्किन्धा) के राजा बाली की मण्डो पर निगाह पड़ी। उसने कहा कि तू मेरे महल के ऊपर से यों क्यों उड़ा जा रहा है। पहले मुझसे युद्ध में निपटता जा। दशकंठ यह आह्वान सुनकर उतर आया। दोनों में युद्ध हुआ। दशकंठ हार गया और मण्डो बाली के हाथ लग गई, उसकी स्त्री बन गई और दशकंठ पराजित होकर लंका को लौट आया। अन्त में उसके गुरु अंगद के बाली को समझाने-बुझाने पर मण्डो दशकंठ को लौटा दी गई।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: ६ :

बाली और सुग्रीव की उत्पत्ति

साकेत का राजा गौतम सन्तानहीन था। अतः राज से उसको कुछ सन्तोष नहीं होता था। अन्त में वह राज को त्यागकर संन्यासी हो गया। उसने दो सहस्र वर्षों तक तपस्या की। उसकी दाढ़ी इतनी बढ़ गई कि गोद को छूने लगी और दो बया पक्षियों ने उसमें घोंसला बना लिया। एक दिन बया की मादा ने कुछ अंडे दिये। चिड्डे ने चिड़िया से कहा कि तू अण्डे को से और मैं हिमवान पर जाकर झील में से कुछ भोजन की वस्तु ले आऊं।

झील में सुन्दर कमल खिल रहे थे। वह उस सौन्दर्य पर मोहित हो गया और एक कमल के ऊपर जा बैठा, जो पूर्ण विकसित हो रहा था। फूल के चारों ओर उसे पर्याप्त भोजन मिल गया और वह इस नये स्थान के सौन्दर्य में इतना मुग्ध हो गया कि उसे यह याद नहीं रहा कि संध्याकाल निकट आ रहा है। संध्या आई तो कमल की पंखुड़ियां बन्द हो गई और वह पक्षी उसमें कैद हो गया।

दूसरे दिन जब वह घर लौटा तो उसका शरीर कमल की सुगंध से सुगन्धित हो रहा था। उसकी स्त्री ने उसको सूंघा और समझा कि उसके पति ने पिछली रात किसी अन्य चिड़िया के सहवास में बिताई है। वह अपने पति को दोष देने लगी। पति ने कसम खाई कि यह बात बिलकुल

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
झूठ है। यदि मैं झूठ कहता हूं तो इस साधू के सारे पाप मेरे ऊपर आ जायं।"

यह 'पाप' का शब्द सुनकर गोतम को बड़ा दुःख हुआ। वह तो यह समझता था कि मैंने कभी कोई पाप किया ही नहीं है। उसने चिड़िया से पूछा। उसने बताया कि उसका निःसन्तान होना ही उसका पाप है।

गोतम ने तपस्या छोड़कर एक यज्ञ रचा और यज्ञ की अग्नि में से एक सुन्दर कन्या उत्पन्न हुई, जिसका नाम काल-अचना था। गोतम ने उसके साथ विवाह कर लिया। उससे उसके एक लड़की हुई। पिता ने उसका नाम 'स्वाहा' रक्खा।

इधर इन्द्र और अन्य देवता इस सोच में थे कि हम अपने कर्मों का बटवारा किस प्रकार करें कि जिससे मृत्यु-लोक में सैनिकों के रूप में जन्म लें, जो लड़ाई में परस्पर सहायता कर सकें। उनकी दृष्टि काल-अचना पर पड़ी। इन्द्र नीचे आया और अपनी दैवी शक्ति से उसको गर्भवती बना दिया। कुछ दिनों के पश्चात् उनके पुत्र हुआ, उसका नाम काकाश रक्खा गया। उसके कुछ काल बाद आदित्य भी उधर आ गये और उन्होंने उससे एक दूसरा पुत्र उत्पन्न किया, जिसका नाम सुग्रीव हुआ। गोतम को कुछ पता ही न चला कि ये पुत्र किसके हैं। उसने उन दोनों को अपना ही पुत्र मान लिया, परन्तु स्वाहा तो अपनी माता के दुष्कृत्य की जानकार थी।

एक दिन गौतम नहाने जा रहे थे। सुग्रीव गोद में था। काकाश कंधे पर बैठा था और स्वाहा उंगली पकड़े जा रही
CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी। उस समय स्वाहा के हृदय में डाह उठी। वह सोचने लगी कि मेरा पिता अपनी संतान को तो पैदल चला रहा है और दूसरों के बच्चों को गोद में ले रहा है। गोतम को इस बात पर आश्चर्य हुआ। उन्होंने स्वाहा से पूछा तो उसने सब बात पिता को बता दी। परंतु गोतम को इसपर विश्वास नहीं हुआ कि मेरी पत्नी इतनी पापिनी है। वह उन सब बच्चों को नदी पर ले गया और उनको नदी में फैंककर कहने लगा कि जो मेरी सच्ची संतान होगी वह तैरकर मेरे पास लौट आयगी और जो दूसरे किसीकी संतान होगी वह बंदर बनकर जंगल में चली जायगी। परिणामस्वरूप काकाश तथा सुग्रीव बंदर बनकर जंगल में रहने लगे।

गोतम घर लौटे तो उन्होंने अपनी स्त्री को शाप दिया कि तू पत्थर बन जा। जब नारायण राक्षसों का संहार करने के लिए संसार में अवतरित हों और लंका पर चढ़ाई करें तब तू सेतु के बांधने में काम आवेगी और सदा समुद्र में डूबी रहेगी।

काल-अचना को अपनी लड़की स्वाहा पर बड़ा गुस्सा आया, क्योंकि उसने उसका भेद खोल दिया था। उसने उसे शाप दिया कि तू सदा एक टांग पर खड़ी रहेगी, एक हाथ में वृक्ष की शाखा पकड़े रहेगी और वायुमात्र ही तेरा भोजन होगा। तेरा शाप तब छूटेगा जब तू एक अतुल बलधारी बन्दर को उत्पन्न करेगी।

जब इन्द्र और आदित्य ने देखा कि हमारी संतान इस प्रकार भटक रही है तो उन्होंने उनके लिए एक सुन्दर नगर बसाया, जिसका नाम खीदुखिन था। फिर उन्होंने मन्त्र द्वारा

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसार-भर के बन्दरों को बुलाया और आदेश दिया कि तुम सब यहीं बस जाओ और काकाश को, जो बड़ा था, अपना राजा बना लो।

अब एक घटना हुई, जिसके कारण काकाश और सुग्रीव की ख्याति बढ़ गई। स्वर्ग में उस समय वसन्त ऋतु थी और समस्त देवगण वसन्तोत्सव मना रहे थे। समुद्र की देवी मणिमेखला भी वहां आने को थी। उसके पास एक दैवी मणि थी, जिसकी ख्याति संसार-भर में फैली हुई थी। एक अपूर्व बलशाली असुर, जिसका नाम रामसुर था, उसने मणिमेखला को मार्ग में मणि से खेलते हुए देखा। उसने चाहा कि मणि को ले ले। अतः उसने उस देवी का पीछा किया। रामसुर अत्यन्त बली था। अत: सब देवी-देवता डरकर अपने-अपने घरों को भाग गये, परन्तु अपने पीछे एक बली असुर को दौड़ता देखकर मणिमेखला को आनन्द आ गया और वह अपनी मणि से असुर को चिढ़ाने लगी। रामसुर बहुत दौड़ा पर फिर भी मणिमेखला उसके हाथ नहीं आई। मणिमेखला उस मणि को उसकी ओर करती, पर वह उसके इतनी पास न आती कि असुर उसे पकड़ सके। इस तरह करने से वह क्रोध से भर गया और अपना परशु फैंककर उसको मारना चाहा। परन्तु परशु उसका कुछ भी न बिगाड़ कर सका। उसपर उसका क्रोध और भी बढ़ गया और वह क्रोध के मारे पागल हो गया।

उसी समय एक और अर्जुन नाम का बली देव उधर होकर गुजरा। यह देख असुर को अपना क्रोध उतारने के लिए एक और व्यक्ति मिल गया और उसने अर्जुन को सुमेरु पर्वत पर

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पकड़ लिया। इस प्रकार अपने क्रोध को ठण्डा करके रामसुर अपने स्थान पर वापस चला गया।

इधर जब ईश्वर ने देखा कि सुमेरु का कोना झुका हुआ है, तो उन्होंने उसको ठीक करने के लिए सब देवताओं को बुलाया। उन्होंने मेरु को सांप से बांधा और खींचने लगे, परन्तु उनको सफलता न मिली। मेरु पर्वत पूर्ववत् झुका ही रहा। यह देख सुग्रीव ने अपनी सेवाएं इसके लिए ईश्वर को अर्पित कीं। उसने सांप की नाभि को ज़रा दबाया तो सांप को गुलगुली लगी। उसने अपने शरीर से मेरु जकड़ लिया। काकाश ने एक ओर से कंधा दिया और सुमेरु ठीक हो गया। ऐसे बल का प्रदर्शन देखकर ईश्वर दोनों भाइयों पर बड़े प्रसन्न हुए और उनको पुरस्कार देने का विचार किया। काकाश को एक त्रिशूल मिला और उसका नाम बाली रखा गया। सुग्रीव उस समय उपस्थित न था। अतः उसके लिए एक रूपवती स्त्री तारा उसके भाई बाली को दी गई। बाली ने तारा को एक हांडी में रख दिया। यह नारायण को बुरा लगा। उन्होंने कहा कि किसी युवती को किसी युवक को सौंपना ऐसा ही है जैसे किसी भौंरे को कोई फूल देना। इसपर बाली ने आश्वासन दिया कि मैं अपने वचन का पालन करूंगा। यदि न करूं तो मैं राम के बाणों से मारा जाऊं।

बाली घर आया तो तारा के रूप पर मुग्ध हो गया। उसपर तारा के रूप का ऐसा प्रभाव पड़ा कि वह अपने वचन को भूल गया और तारा को सुग्रीव को न देकर उसे उसने अपने ही घर में डाल लिया।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: ७ :

हनुमान का जन्म

जब बाली खीद्खिन की गद्दी पर जम बैठा तो उसका एक दूसरे बलवान् बन्दर से परिचय हुआ, जिसका नाम हनुमान था। यह बाली का भानजा होता था, क्योंकि यह बाली की सौतेली बहन 'स्वाहा' का बेटा था।

यह कथा पीछे आ गई है कि स्वाहा को उसकी माता काल-अचना ने शाप दिया था कि जबतक कि इसके एक पुत्र न हो जाय वह एक टांग के बल एक हाथ में वृक्ष की शाखा लिये खड़ी रहेगी। ईश्वर ने उसकी दयनीय अवस्था देखी तो उन्हें उसपर तरस आ गया। इसके अतिरिक्त उन्होंने यह भी सोचा कि क्यों न इसीके द्वारा राम की सहायता का साधन उपस्थित किया जाय। अतः ईश्वर ने अपनी तथा अपने सब दैवी शस्त्रों की कुछ शक्ति को अलग किया और वायु को आदेश दिया कि तुम इन सब शक्तियों को ले जाकर स्वाहा के मुख में भर दो, जिससे वह एक ऐसा पुत्र जन सके, जिसमें सब शस्त्रों की शक्ति एकत्र हो जाय। गदा को उसकी रीढ़ की हड्डी बना दो, जिससे वह आकाश में यात्रा कर सके। त्रिशूल से उसका शरीर तथा उसके हाथ और पैर बन जायं और वह शस्त्र सदा उसकी छाती से चिपका रहे, जिससे समय पर उसका प्रयोग किया जा सके। चक्र से उसका सिर बने और वायु उसका पिता बने।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वायु ने तुरन्त ईश्वर की आज्ञा का पालन किया और स्वाहा गर्भवती हो गई। तीस मास के पश्चात् उसके एक सफेद बन्दर उत्पन्न हुआ, जो सोलह साल के लड़के के समान शक्तिशाली था। परन्तु वह साधारण रीति से नहीं जन्मा। उसका जन्म उसकी माता के मुख से हुआ। उसके पिता वायु ने उसका नाम हनुमान रखा। उसकी माता ने उसे बताया कि तुम्हारे शरीर पर कुछ विशेष चिह्न हैं, अर्थात् कानों में दो बालियां, दो चमकदार दांत और एक श्वेत घुंघराला बाल। इनको नारायण के सिवा और कोई नहीं देख सकता है। जिस व्यक्ति को ये चिह्न दिखाई दे जायं, उसीको तुम नारायण का अवतार समझकर उसकी सेवा करना। इस पुत्र के जन्म के उपरांत स्वाहा का शाप छूट गया।

एक दिन हनुमान बाग में स्वभावतः बन्दरों के समान खेल रहा था। वह बाग उमा का था। उमा ने देखा कि यह बंदर तो बाग में तोड़-फोड़ कर रहा है, तो उसने उसे शाप दिया कि आज से तेरी शक्ति आधी हो जाय, परन्तु जब हनुमान ने उमा से प्रार्थना की तो उमा ने कहा, "अच्छा जिस दिन नारायण राम के रूप में अवतार लेकर तुम्हारे शरीर को सिर से पैर तक छुयेंगे उसी दिन तुम्हें अपनी पुरानी शक्ति ज्यों-की-ज्यों प्राप्त हो जायगी।"

कुछ दिनों के बाद हनुमान का पिता वायु उसे देखने आया और वह उसे ईश्वर के पास ले गया। ईश्वर ने उसे अंतर्धान होने की विद्या सिखाई और उसे अमर होने का वरदान भी दिया।

हनुमान बाली और सुग्रीव दोनों का मामा था, इसीलिए

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
ईश्वर ने उन दोनों को भी कैलाश पर बुलाया और उनका हनुमान से परिचय करा दिया। ईश्वर ने अपने चमड़े से बाली की सहायता के लिए एक और बंदर उत्पन्न किया, जिसका नाम था जम्बुवान। यह बड़ा अच्छा चिकित्सक था।

बाली और सुग्रीव के कैलाश पहुंचने पर ईश्वर ने उनको इस बंदर को दिया और कहा कि इसको पुत्र के समान रक्खो। यों हनुमान और जम्बुवान् दोनों बाली और सुग्रीव के साथ खीद्खिन् को चले गये।

: ८ :

अंगद की उत्पत्ति

जब मण्डो बाली के पास से दशकंठ के पास आई तो उस समय वह गर्भवती थी। बाली के कहने से अंगद ने उसके गर्भाशय से गर्भ निकालकर एक बकरी के गर्भाशय में रख दिया। जब जन्म का समय आया तो उसने बकरी के पेट से निकाल लिया और उसे अपना ही नाम अंगद देकर उसके असली पिता बाली को लौटा दिया।

जब वह बच्चा दस साल का था तो स्नान कराने उसे नदी पर ले गये। वहां दशकंठ ने इसे देखा और सोचा कि जबतक यह बालक जीवित है, मण्डो के दोष का चिह्न बना ही रहेगा। अतः इसे मार डालना चाहिए। इसलिए दशकंठ ने एक कैंकड़े का रूप धारण कर लिया और जल में जा

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छिपा । बन्दरों को इसका पता चल गया, परन्तु वे भरसक प्रयत्न करने पर भी उसे पकड़ न सके ।

बाली को जब इसकी खबर हुई तो वह वहां आया । उसे देखते ही लंकेश ने अपना निज रूप धारण कर लिया और दोनों में युद्ध होने लगा । दशकंठ हार गया और उसे बन्दी बना लिया गया । सारे बंदर उसकी हँसी उड़ाने लगे । सात दिन तक घोर अपमान सहने के पश्चात् दशकंठ को छोड़ दिया गया और वह अपना-सा मुंह लेकर लंका को वापस चला गया ।

: ६ :

दशकंठ को वरदान

दो बार बाली से अपमानपूर्वक पराजित होने के बाद दशकंठ ने अपने गुरु अंगद से परामर्श किया । अंगद ने अपने प्रिय शिष्य को आदेश दिया कि यज्ञ करो । इससे तुमको ऐसी शक्ति प्राप्त होगी कि तुम अपने आत्मा को अपने शरीर से निकालकर अन्यत्र सुरक्षित स्थान में रख सकोगे और यदि युद्ध में तुम्हारा शरीर आहत भी हो जाय तो भी तुम मरोगे नहीं । दशकंठ ने इस आश्वासन पर यज्ञ किया और उसे यथेष्ट शक्ति प्राप्त हो गई । लगभग अमरत्व के समान ऐसी चमत्कृत शक्ति को प्राप्त करते ही दशकंठ का दिमाग आसमान को चढ़ गया । उसके अत्याचार और भी बढ़ गये और मृत्युलोक

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
ही नहीं अपितु स्वर्ग-लोक भी उसके उत्पात से पीड़ित होने लगा।

सबसे पहले उसने अपने ही भाई कुपेटन पर चढ़ाई इसलिए कर दी कि पुष्पक विमान उसके हवाले कर दे। युद्ध करने की सामर्थ्य न देखकर वह बेचारा पुष्पक को वहीं छोड़कर वायु-यात्रा से ईश्वर के पास आया। क्रोध में आकर ईश्वर ने दशकंठ की छाती पर हाथी के दांत से आक्रमण किया। आहत होकर दशकंठ लंका को भागा और विश्वकर्मा को आज्ञा दी कि हाथीदांत को काटकर निकाल दो।

स्वस्थ होने पर दशकंठ ने नर मछली का रूप धारण कर लिया और एक मछली से सहवास किया। उनके संयोग से एक मत्स्यपरी उत्पन्न हुई, जिसका नाम था स्वर्णमच्छा। तत्पश्चात् वह हाथी बन गया और एक हथिनी से संयोग किया। उस हथिनी से उसके दो बच्चे हुए। उनके शरीर तो राक्षसों के-से थे, परन्तु चेहरा हाथियों का-सा था। एक का नाम था किरीधर और दूसरे का किरीवन्।

: १० :

सीता-जन्म

यद्यपि दशकंठ के महल में बहुत-सी स्त्रियां थीं, परन्तु महारानी मण्डो उसको सबसे प्रिय थी। वह महारानी को प्रसन्न करने के लिए छोटी-से-छोटी बात पर प्राणतक न्योछावर करने को तत्पर रहता था।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब राजा दशरथ ने यज्ञ किया था तो अग्नि व ा में उठी दैवी सुगन्धि लंका जा पहुंची। इस दैवी भोजन की सुगंध मण्डो को इतनी अच्छी लगी कि वह दशकंठ से उसकी प्राप्ति की याचना करने लगी। प्राणप्यारी मण्डो की इस प्रार्थना को वह टाल न सका। उसने एक राक्षसी काकना को आज्ञा दी कि वह कौए का वेष धारण करके उस दैवी भोजन को चुरा लाये। वह उस पुरोडास का केवल थोड़ा-सा भाग ही ला सकी। दशकंठ ने उसे मण्डो को समर्पित कर दिया।

फलतः रानी मण्डो गर्भवती हो गई और समय पाकर उसके एक कन्या उत्पन्न हुई। वह साक्षात लक्ष्मी का अवतार थी। उत्पन्न होते ही लड़की चिल्ला उठी, "दशकंठ को मारो, दशकंठ को मारो, दशकंठ को मारो।" लेकिन उसकी यह आवाज़ उसके मां-बाप को सुनाई नहीं पड़ी।

उसके जन्म पर ज्योतिषी बुलाये गए। विभेक भी उनमें से एक था। उसने भविष्यवाणी की कि इस लड़की के द्वारा दशकंठ के सारे परिवार का सबीज नाश हो जायगा। यह भयानक भविष्यवाणी सुनकर दशकंठ डर गया और उसने विभेक को वह लड़की देकर कहा, इसको ले जाओ और इसके साथ जैसा चाहे व्यवहार करो। विभेक ने उसको एक हांडी में बन्द किया और एक राक्षस को आदेश दिया कि वह उसे नदी में बहा दे।

उस लड़की की दैवी शक्ति से नदी के तलपर एक कमल दिखाई दिया। वह हांडी बहती हुई उसपर टिक गई। समुद्र की देवी मणिमेखला ने अन्य देवियों के सहयोग से उस बच्ची

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
की रक्षा की और लक्ष्मी की दैवी शक्ति से वह हांडी एक ऋषि के स्नान करने के घाट से जा लगी। दैवयोग से यह ऋषि महाराज जनक थे।

जनक मिथिला के राजा थे। राजकीय सुखों से थककर राजा जनक तपस्वी हो गये थे और एक नदी के किनारे रहकर तपस्या करने लगे। एक दिन जब राजा नदी पर स्नानार्थ गये तो उन्होंने अपने सामने एक हांडी को तैरते देखा। उत्सुकता से राजा जनक ने वह हांडी पकड़ ली और उसे खोला तो उसमें एक बच्ची को देखा। यह महारानी मण्डो की पुत्री ही थी। राजा जनक के पास बच्चे को पिलाने के लिए दूध न था। अतः उन्होंने ईश्वर से प्रार्थना की कि मेरी उंगलियों में दूध पैदा हो जाय, जिसे पीकर लड़की के जीवन की रक्षा हो सके।

जनक न तो अपने राज्य को लौटना चाहते थे और न अपनी तपस्या को भंग करना चाहते थे। अतः वह उस लड़की को वन में ले गये और उन्होंने एक वृक्ष के नीचे एक गड्ढा खोदा और ईश्वर से प्रार्थना की कि यदि इस लड़की के भाग्य में नारायण के अवतार की पत्नी बनना लिखा हो तो इस गड्ढे से एक कमल उत्पन्न हो जाय जिससे यह हांडी उसपर रक्खी जा सके। प्रार्थना के फलस्वरूप तुरन्त एक कमल उत्पन्न हुआ और देवताओं की सहायता से जनक ने इस आशा से कि देवता इस लड़की की रक्षा करेंगे, उस हांडी को लड़की समेत कमल के पत्तों में छिपाकर गड्ढे को पाट दिया।

इस हांडी की प्राप्ति के पश्चात् राजा जनक को १६ साल तपस्या करते हो गये, परन्तु उनको आत्मतत्व का
CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाभ नहीं हुआ । इसलिए तपस्या से थककर उन्होंने चाहा कि अपने देश को लौट चलूं, परन्तु उहें उन्स हांडी से मोह हो गया था । अतः वह हांडी छोड़कर जाना नहीं चाहते थे । अतः उन्होंने अपने एक सेवक सोम को आदेश दिया कि वह ज़मीन खोदकर हांडी को निकाल ले । लेकिन यत्न करने पर भी हांडी हाथ न आई । राजा को बड़ा अचंभा हुआ और उसने अपने राज में आदमी भेजकर सैनिकों को बुलाया । वे साथ में खोदने और खेत जोतने के औजार भी लेते आये । वे भी यत्न करते रहे, परन्तु हांडी हाथ न आई । अन्त में जनक ने स्वयं हल पकड़ा और हांडी को खोजने के लिए जमीन जोतने लगे । तुरन्त ही लोग देखते क्या हैं कि हांडी प्रकट हो गई । उसपर एक कमल था और कमल में से एक अतीव सुन्दर कन्या निकली, जिसके लावण्य को देखकर उपस्थित लोग दंग रह गये । हल की लकीर से उत्पन्न होने के कारण लड़की का नाम सीता रखा गया । जनक अपनी इस धर्मपुत्री को लेकर अपने राज को लौट आये । अति शीघ्र ही सीता निस्सन्तान महारानी रत्नमणी की आंख का तारा बन गई और सब लोग उसको प्यार की दृष्टि से देखने लगे ।

: ११ :

राम-काकनासुरी-युद्ध

जब राम और उनके भाई बड़े हुए तो उनको शिक्षा के लिए गुरु वशिष्ठ और स्वमित्र के पास भेज दिया गया । थोड़े

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
ही दिनों में वे सब विद्याओं में निपुण हो गये। उनकी विद्या-प्राप्ति से सन्तुष्ट होकर गुरुओं ने एक यज्ञ रचा, जिससे ऐसे शस्त्रों की प्राप्ति हो सके, कि जिनसे राक्षसों का संहार हो जाय।

जब हवन की पवित्र अग्नि प्रज्वलित हुई तो ईश्वर ने उस अग्नि में बारह बाण छोड़े। इस प्रकार उस यज्ञ में से प्रत्येक भाई के लिए तीन-तीन धनुष-बाण निकले। उनपर हरएक भाई का नाम अंकित था। इनमें से राम के शस्त्र सबसे उत्कृष्ट थे। उनके नाम थे ब्रह्मास्त्र, अग्निवत् तथा ब्लैवत्।

इस प्रकार विद्याओं से अलंकृत और महास्त्रों से सुसज्जित होकर ये चारों भाई घर लौट आये। यह देख मां-बाप को अपार हर्ष हुआ।

कैय्याकेशी के पिता कैय्याकेश के कोई लड़का न था। राजा वृद्ध थे और उनको अपने राज्य को राक्षसों से सुरक्षित रखने में बड़ी कठिनाई होती थी। उन्होंने सुना कि उनका नाती भरत अस्त्र-शस्त्र-विद्या में बहुत निपुण हो गया है, अतः उन्होंने राजा दशरथ को लिखा कि राक्षसों से रक्षा करने के लिए आप भरत को मेरे यहां भेज दें। दशरथ मान गये और भरत अपने भाई शत्रुद के साथ कैय्यकेश देश को प्रस्थान कर गये।

इधर दशकंठ को भय हुआ कि ऋषि लोगों की तपस्या इतनी न बढ़ जाय कि वे शक्तिशाली हो जायं। अतः उसने उन ऋषियों की तपस्या भंग करने के लिए काकनासुरी राक्षसी को भेजा। काकनासुरी अपनी सहेलियों सहित कौओं
CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का रूप धारण करके ऋषियों के यज्ञ में विघ्न डालने लगी। ऋषि लोग इस दुष्कृत्य से तंग आकर वसिष्ठ और स्वमित्र के पास दौड़े गये। दोनों ऋषि राजा दशरथ के पास गये और उनसे प्रार्थना की कि महाराज आप राम और लक्ष्मण को हमारे साथ कर दें। ये दोनों राजकुमार परमार्थ के लिए सदा ही तत्पर रहते थे। उन्होंने तुरन्त ऋषियों के साथ प्रस्थान कर दिया। काकनासुरी राम के बाण से मारी गई और उसके दो पुत्र स्वाहू और मारीश अपनी माता का बदला लेने के हेतु युद्ध के लिए आगे बढ़े। स्वाहू तो मारा गया, परन्तु मारीश लंका को भाग गया।

: १२ :

राम-सीता-परिणय

सीता का रूप अत्यन्त सुन्दर था। अतः यह निश्चय किया गया कि सीता का पाणिग्रहण वही वीर पुरुष कर सकेगा, जो उसको सबसे अधिक वीरोचित उपहार दे सके। जनक के पास एक धनुष था, जो ईश्वर का था। ईश्वर ने इस धनुष से सोलाश देश के राक्षस त्रिपुरम् का वध किया था। युद्ध के पश्चात् ईश्वर ने इस धनुष को तो राजा जनक के पास भेज दिया और अपने शरीर-रक्षक अस्त्रों को ऋषि अगत् के पास भेज दिया, ताकि जब नारायण दशकंठ को मारने के लिए अवतार लें तो वे उनके काम आवें। राजा

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनक ने भूमंडल के राजाओं में घोषित कर दिया कि जो कोई ईश्वर के कोदंड को उठा सकेगा, सीता उसीसे ब्याह दी जायगी। बहुत से राजा आये और अपने बल की परीक्षा की, परन्तु सीता किसीसे ब्याही न जा सकी।

ऋषि वसिष्ठ और स्वमित्र ने सोचा कि राम बड़े पराक्रमी हैं। इनका विवाह सीता से होना चाहिए। अतः काकनासुरी के वध के पश्चात् वे राम और लक्ष्मण को राजा जनक के दरबार में ले गये। वे जब महल की खिड़की के सामने से गुजर रहे थे तो राम और सीता ने एक-दूसरे को देखा और शीघ्र ही एक-दूसरे पर मुग्ध हो गये, परन्तु सीता को प्राप्त करना तो तभी संभव था जब राम परीक्षा में उत्तीर्ण हो सकें।

जब दोनों राजकुमारों को धनुष के पास लाया गया तो लक्ष्मण ने पहले परीक्षा की। देखा कि धनुष उठाना कुछ कठिन नहीं है। पर लक्ष्मण ताड़ गये थे कि राम के हृदय में सीता के लिए प्रेम उत्पन्न हो गया है। अतः उन्होंने धनुष को उठाने का यत्न नहीं किया। जब राम की बारी आई तो उन्होंने धनुष को इस प्रकार उठा लिया मानो वह किसी पक्षी का पर है और इस प्रकार सीता के साथ राम के विवाह का निश्चय हो गया।

दशरथ को अयोध्या से बुलाया गया और बड़ी धूमधाम से विवाह-विधि संपन्न हुई। विवाह के उपरान्त राजा दशरथ खुशी-खुशी अपने पुत्र और पुत्र-वधू के साथ अयोध्या को लौट आये।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: १३ :

राम-रामासुर युद्ध

जब बारात जंगल में होकर गुजर रही थी तो एक अन्य देवता रामासुर ने उसे रोका। रामासुर का शस्त्र था परशु। वह बरात रोककर खड़ा हो गया और कहने लगा, बताओ इसका नेता कौन है। जब उसको राजा दशरथ का नाम बताया गया और राम के पराक्रम का वर्णन किया गया कि किस प्रकार ईश्वर के धनुष को उठाकर राम ने सीता के साथ विवाह किया तो रामासुर ने राम के बल की परीक्षा लेनी चाही। बड़ा युद्ध हुआ। अन्त में रामासुर ने अपनी पराजय स्वीकार कर ली। इसके पश्चात् राम नारायण के रूप में प्रकट हुए और रामासुर ने उनको प्रसन्न करने के लिए त्रिमेघ नामक अस्त्र दिया। यह त्रिमेघ रामासुर के पितामह को ईश्वर से प्राप्त हुआ था। राम ने त्रिमेघ को आकाश में फेंक दिया कि वह बिरुण के संरक्षण में रहे और जब कभी राम को उसकी आवश्यकता हो वह उसको ले सके। इसके बाद बरात अयोध्या को चल पड़ी और निर्विघ्न राजधानी में पहुंच गई।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राम-वनवास

राजा दशरथ वृद्ध हो चले थे। उनमें राज्यशासन की शक्ति न रही। अतः उन्होंने राम को उत्तराधिकारी बनाने का निश्चय किया। उन्होंने अपनी यह इच्छा सब दरबारियों पर प्रकट की। यह सूचना रानी कैय्यकेशी की बांदी कुच्ची के कान में भी पड़ी। कुच्ची को राम से वैर था। इसका कारण यह था कि कुच्ची की पीठ में एक कुब्ब था। राम ने एक तीर मारा जिससे कुच्ची का कुब्ब बाहर को निकल आया राम ने फिर एक तीर और मारा। इस पर बड़ी हँसी हुई। तब से कुच्ची राम से बैर रखने लगी।

कुच्ची को यह एक सुअवसर मिल गया। कैय्यकेशी को राजा दशरथ ने एक वर देने का वचन दिया था। बात यों है कि जब राजा दशरथ गद्दी पर बैठे तो एक दैत्य पद्दुतदन्त ने स्वर्ग पर चढ़ाई की। इन्द्र ने दशरथ की सहायता मांगी। दशरथ तुरन्त स्वर्ग को चल पड़े। तीनों रानियों में से केवल कैय्यकेशी ही उनके साथ गई थी। दैत्य ने एक बाण से दशरथ के रथ के पहिये का धुरा तोड़ दिया, जिसके कारण दशरथ की विजय में बाधा पड़ गई। पति को विपत्ति में देखकर कैय्यकेशी ने अपना हाथ पहिये में डाल दिया और ईश्वर से प्रार्थना की कि वह रक्षा करे। रानी की सहायता से दशरथ विजयी हुए। इसपर प्रसन्न होकर राजा ने रानी

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: १३ :

राम-रामासुर युद्ध

जब बारात जंगल में होकर गुजर रही थी तो एक अन्य देवता रामासुर ने उसे रोका। रामासुर का शस्त्र था परशु। वह बरात रोककर खड़ा हो गया और कहने लगा, बताओ इसका नेता कौन है। जब उसको राजा दशरथ का नाम बताया गया और राम के पराक्रम का वर्णन किया गया कि किस प्रकार ईश्वर के धनुष को उठाकर राम ने सीता के साथ विवाह किया तो रामासुर ने राम के बल की परीक्षा लेनी चाही। बड़ा युद्ध हुआ। अन्त में रामासुर ने अपनी पराजय स्वीकार कर ली। इसके पश्चात् राम नारायण के रूप में प्रकट हुए और रामासुर ने उनको प्रसन्न करने के लिए त्रिमेघ नामक अस्त्र दिया। यह त्रिमेघ रामासुर के पितामह को ईश्वर से प्राप्त हुआ था। राम ने त्रिमेघ को आकाश में फेंक दिया कि वह बिरुण के संरक्षण में रहे और जब कभी राम को उसकी आवश्यकता हो वह उसको ले सके। इसके बाद बरात अयोध्या को चल पड़ी और निर्विघ्न राजधानी में पहुंच गई।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: १४ :

राम-वनवास

राजा दशरथ वृद्ध हो चले थे। उनमें राज्यशासन की शक्ति न रही। अतः उन्होंने राम को उत्तराधिकारी बनाने का निश्चय किया। उन्होंने अपनी यह इच्छा सब दरबारियों पर प्रकट की। यह सूचना रानी कैय्यकेशी की बांदी कुच्ची के कान में भी पड़ी। कुच्ची को राम से बैर था। इसका कारण यह था कि कुच्ची की पीठ में एक कुब्ब था। राम ने एक तीर मारा जिससे कुच्ची का कुब्ब बाहर को निकल आया राम ने फिर एक तीर और मारा। इस पर बड़ी हँसी हुई। तब से कुच्ची राम से बैर रखने लगी।

कुच्ची को यह एक सुअवसर मिल गया। कैय्यकेशी को राजा दशरथ ने एक वर देने का वचन दिया था। बात यों है कि जब राजा दशरथ गद्दी पर बैठे तो एक दैत्य पदुत-दन्त ने स्वर्ग पर चढ़ाई की। इन्द्र ने दशरथ की सहायता मांगी। दशरथ तुरन्त स्वर्ग को चल पड़े। तीनों रानियों में से केवल कैय्यकेशी ही उनके साथ गई थी। दैत्य ने एक बाण से दशरथ के रथ के पहिये का धुरा तोड़ दिया, जिसके कारण दशरथ की विजय में बाधा पड़ गई। पति को विपत्ति में देखकर कैय्यकेशी ने अपना हाथ पहिये में डाल दिया और ईश्वर से प्रार्थना की कि वह रक्षा करे। रानी की सहायता से दशरथ विजयी हुए। इसपर प्रसन्न होकर राजा ने रानी

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को वचन दिया कि तुम जो बर मांगोगी वही दिया जायगा।

कुब्ची जानती थी कि राजा दशरथ वचनबद्ध हैं अतः उसने कैय्यकेशी को इस बात के लिए राजी किया कि राजा से यह वर मांगे कि राम को वनवास हो और भरत गद्दी पर बिठाया जाय। कैय्यकेशी राजी हो गई। और आंखों में आंसू भरकर याचना करने लगी कि राम को चौदह साल का वनवास दीजिये और मेरे पुत्र भरत को गद्दी पर बिठाइए। राजा ने रानी को बहुत समझाया कि ऐसा अनुचित वर मत मांगो। परन्तु रानी हठ कर गई। राजा बचनबद्ध थे अतः वह वचन को न तोड़ सके। उन्होंने दुखी हृदय से राम को चौदह साल का वनवास दे दिया। राम तो पितृभक्त थे। वह नहीं चाहते थे कि उनके पिता अपने वचन से फिर जायं अतः वह हर्ष-पूर्वक राजा के आदेश को स्वीकार करके अपनी पतिप्रिया सीता और अपने भाई लक्ष्मण के साथ वन को चल दिये। राम तो सदैव मनुष्य की भलाई में तत्पर रहा करते थे। उन्होंने इस वनवास के अवसर को भूमि को राक्षसों से मुक्त करने के उद्योग में लगाने का निश्चय किया।

राम के वियोग से राजा दशरथ को इतना दुख हुआ कि उनका हृदय टूट गया और वह मृत्यु को प्राप्त हो गये।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: १५ :

राम-पादुका

राम अपने भ्रातृभक्त लक्ष्मण और प्यारी पत्नी सीता के साथ वन को रवाना हुए। चलते-चलते वे सतोंग नदी के तट पर पहुंचे, जहां अहेरियों का राजा खुखन रहता था। वह राम का भक्त था। अतः उसने राम से प्रार्थना की कि आप यहां रहें और मेरे बजाय इन जंगलियों पर राज करें। यह स्थान अयोध्या के निकट था। अतः राम ने धन्यवादपूर्वक इस भेंट को अस्वीकार कर दिया। खुखन के साथ उन्होंने नदी पार की और ऋषि भरद्वाज के आश्रम में पहुंचे। वहां भी ऋषि ने उनका बड़ा आतिथ्य-सत्कार किया। ऋषि ने परामर्श दिया कि आप ऋषि सरभंग के आश्रम में जाइये। फलस्वरूप राम वहां से चलकर यथासमय सरभंग के आश्रम में पहुंचे। ऋषि ने उनको वहां ठहरने के लिए कहा परन्तु यह स्थान भी अयोध्या के निकट था और भय था कि भरत यहां भी उनका पीछा करेंगे। अतः वह वहां बसने के लिए राजी न हुए। तब ऋषि ने कहा कि आप शतकूट पर्वत पर जाइये। वहां देवों ने आपके लिए घर बना रखा है। यह खुशखबर सुनकर राम हर्षपूर्वक वहां से शतकूट पर्वत की ओर चल पड़े और एक लम्बी यात्रा के बाद वहां जा पहुंचे। और वहां एक सुरम्य स्थान देखकर रहने लगे।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इधर भरत और शत्रुद ने सुना कि राम को गद्दी मिल रही है। इससे उनको अपार हर्ष हुआ और राम के अभिषेक में सम्मिलित होने के लिए वे दोनों भाई अयोध्या को चल पड़े। परंतु जब वह अयोध्यापुरी के निकट पहुंचे तो वहां हर्ष और उत्सव के बजाय रोना-पीटना मचा था। तुरन्त ही वे जान गये कि बात क्या है। भरत तो राम के बड़े भक्त थे। वह भला राम का राज कैसे लेते ? अतः उन्होंने निश्चय किया कि पिता की अंत्येष्टि में भरत और उसकी माता कुछ भी भाग न लेवें। अतः अंत्येष्टि का समस्त काम वसिष्ठ और स्वमित्र ने किया। जब यह काम समाप्त हो गया तो भरत और शत्रुद अपनी माताओं को साथ लेकर वहां जा पहुँचे जहां राम रह रहे थे। कई दिनों की पैदल यात्रा करने के उपरांत भरत ने शतकूट पहुंचकर राम से आग्रह किया कि महाराज आप देश को लौट चलें और अयोध्या में राज करें।

पर जहां भरत भ्रातृ-भक्त थे वहां राम पूरे पितृ-भक्त थे। उन्होंने किसी भी प्रकार वापस अयोध्या लौटना स्वीकार नहीं किया और न कैय्यकेशी से, जो उनकी विपत्ति का मूल थी, किसी प्रकार का द्वेष-भाव ही प्रकट किया। परंतु भक्ति में भरत भी किसी से पीछे न थे। वे भी राज करने पर राजी नहीं हुए। अंत में इस समस्या का यह समाधान किया गया कि राम अपनी पादुका भरत को दें। यह पादुका राम-के स्थान में गद्दी पर स्थापित की जायं और राम के प्रतिनिधि-स्वरूप भरत अयोध्या का शासन भार संभालें। राम ने यह बात मान ली। भरत ने अंत में प्रार्थना की :

"महाराज ! अब हम जाते तो हैं, परन्तु यदि १४ वर्ष

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
के बाद आप अयोध्या न लौटे तो हम अग्नि में जलकर मर जायंगे।"

इस प्रकार राम के वियोग से दुःखी होकर भरत अयोध्या लौट आये।

: १६ :

गोदावरी के तट पर राम

जब भरत और उनके साथी अयोध्या को लौट आये तो उन्होंने शतकूट से भी चलने का निश्चय कर लिया कि कहीं ऐसा न हो कि यहाँ फिर उनको अपनी दुखी माता से मिलना पड़े। अतः वह घने वन में घुस पड़े। वहां उनको एक राजा मिला जिसका नाम सुदर्शन था। यह अपनी रानी सुखई के साथ तपस्या का जीवन व्यतीत करता था। उसने राम से अपने साथ रहने को कहा। पर राम ने वहां रहना स्वीकार नहीं किया। अब वे बीरव नामक राक्षस के एक उपवन में आये। इस राक्षस को ईश्वर के वरदान से समुद्रदेव और अग्निदेव का बल प्राप्त था। इस कारण वह बड़ा बलशाली था। जब राम उपवन से गुजर रहे थे तो राक्षस के आदमियों ने उन्हें रोका। परन्तु लक्ष्मण ने उन सबको मार डाला। तब बीरव घर पर न था। जब वह लौटा और उसे ज्ञात हुआ कि उसके नौकरों के साथ ऐसा व्यवहार हुआ है तो उसने

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बदला लेने की ठान ली। परन्तु बली होने पर भी वह राम और लक्ष्मण के संयुक्त सामर्थ्य का सामना न कर सका और अन्त में मारा गया।

इसके बाद राम लक्ष्मण और सीता ने और घने वन में प्रवेश किया। रास्ते में उन्हें एक अप्सरा मिली। उसका नाम सोवरी था। ईश्वर की आराधना में उससे कोई त्रुटि हो गई थी जिसके कारण उसे शाप मिला था कि वह जलते हुए जंगल के बीच रहे। उसके शाप से छूटने की एक ही शर्त थी कि जब राम वन में आवेंगे और दावानल को बुझायेंगे तो उसकी मुक्ति होगी। सोवरी ने राम से प्रार्थना की कि वह वन की आग को बुझाने की कृपा करें और उसका इस संकट से उद्धार करें। परोपकारी राम ने दुखिया की टेर सुनी और आग को बुझाकर उस अप्सरा को फिर उसका दिव्य स्वरूप प्राप्त करा दिया।

चलते-चलते राम ऋषि अगत् के आश्रम में पहुंचे। ईश्वर ने अपना वह अस्त्र जिससे उन्होंने त्रिपुर को मारा था, इन्हीं अगत् के संरक्षण में रख दिया था, कि जब राम आयें तो वह उनको दे दिया जाय।

ऋषि से अस्त्र को लेकर राम अपने भाई और पत्नी के साथ गोदावरी के तट पर आये। वहां इन्द्र ने पहले से ही उनके रहने के लिए तीन पर्णकुटियां बना रक्खी थीं।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: १७ :

सम्मनखा

राम, लक्ष्मण और सीता ने गोदावरी के तट पर वास करना आरंभ ही किया था कि सम्मनखा और जिह्वा का पुत्र राक्षस कुम्भकश से उनका सामना हो गया।

कुम्भकश का उद्देश्य था कि तपस्या करके विपुल शक्ति अर्जित करें। उसकी तपस्या से ब्रह्मा प्रसन्न हुए और उसके सामने एक तलवार फेंक दी। राक्षस को इससे बड़ा क्रोध आया। उसने माना कि ब्रह्मा ने उसका अनादर किया है। ब्रह्मा को चाहिए था कि साक्षात सामने आकर तलवार को भेंट करता। इसकी बजाय उसने तलवार को उसके सामने फेंककर उसका अपमान किया। अतः उसने उस तलवार को स्वीकार नहीं किया।

उसी समय लक्ष्मण जंगल में फल-फूल लेने गये हुए थे। वहाँ जंगल में उस तलवार को पड़ा देखकर उठा लिया और योंही उसे हिलाने अगे। पास ही कुम्भकश समाधि में बैठा था। उसकी आंख खुली तो उसने लक्ष्मण को तसवार घुमाते देखा। कुम्भकश को क्रोध आ गया और दोनों में युद्ध छिड़ गया। उस युद्ध में लक्ष्मण के हाथों राक्षस मारा गया। जब पुत्र पर यह आपत्ति आई तो उसके पिता जिह्वा भी उसी प्रकार के दुर्भाग्य से बचा न रह सका।

उस समय दशकंठ वन-यात्रा की तैयारी कर रहा था।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसने लंका को जिह्वा के अधीन छोड़कर अपनी यात्रा प्रारंभ की। जिह्वा ने अपने कर्त्तव्य का साहस और बुद्धिमत्ता से पालन किया। एक सप्ताह तक उसकी आंख तक न झपकी। अन्त में प्रकृति ने विजय पाई और उसे नींद आ गई। परन्तु सोने से पहले उसने अपना शरीर इतना फैला लिया था कि उसकी जीभ ने लंका को चारों ओर से घेर लिया, जिससे उसके सोते हुए लंका पर कोई आक्रमण न कर सके।

दशकंठ जब वन-यात्रा से लौटा तो उस समय आधी रात थी। सारी लंका-नगरी सो रही थी। चारों और अंधकार था। जब नगरी में घुसने का उसे कोई मार्ग न मिला तो उसने समझा कि लंकापुरी को किसी शत्रु ने घेर लिया है। इसलिए उसने मार्ग बनाने के लिए अपना चक्र फेंका। वह चक्र जिह्वा की जीभ पर लगा और जिह्वा तुरंत मर गया। लंका में प्रवेश करने पर रावण को ज्ञात हुआ कि लंका के दिखाई न देने का क्या कारण था। दशकंठ को अपने बहनोई जिह्वा के मरने का बड़ा दुख हुआ। उसने जिह्वा की मृत्यु को वीर-मृत्यु का रूप देने का आदेश किया।

अपने पति के मर जाने पर सम्मनखा अकेली रह गई। उसका जीवन सदैव रंग-रेलियों में बीतता था। अब वैधव्य का क्लेश उसको संतप्त करने लगा। उसने अपने भाई दशकंठ से विदा मांगी कि वह जाकर अपने बेटे कुम्भकश को देख आये। असल में उसकी इच्छा थी कि वह किसी दूसरे पति की तलाश करे।

एक सुन्दर स्त्री का रूप धारण करके वह गोदावरी के तीर पर पहुंची जहां राम निवास करते थे। देखते ही वह

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अयोध्या के राजकुमार पर मोहित हो गई। परन्तु राम ने उसके हावभाव पर कुछ ध्यान नहीं दिया। जब सम्मनखा की आंख सीता पर पड़ी तो वह समझ गई कि इसीके कारण राम मेरी ओर ध्यान नहीं देते हैं। अत: उसने सोचा कि अगर सीता को समाप्त कर दिया जाय तो राम को उसकी ओर झुकना ही पड़ेगा। अत: वह राक्षसी का रूप धारण करके सीता को डराने और उनसे लड़ने-झगड़ने लगी। यह देख राम ने उसे मार भगाया और लक्ष्मण ने उसके हाथ-पैर और नाक-कान काट लिये।

सम्मनखा रोमगन नामक नगर में आई। वहां उसने अपने भाई खर से झूठ-मूठ ही कह दिया कि राम और लक्ष्मण उसे छेड़ते हैं और उसने उनके प्रेम को स्वीकार नहीं किया, इसी-लिए उन्होंने बदला लेकर मेरा अंग-भंग कर दिया। जब खर ने यह सुना उसे बड़ा क्रोध आया और अपनी बहन का बदला लेने के लिए वह निकल पड़ा।

खर और राम में लड़ाई होने लगी। खर ने एक ही प्रहार में राम के बाण के दो टुकड़े कर दिये। तब राम ने रामासुर का बाण लिया जो बिरुन के संरक्षण में था। खर उस प्रबल शस्त्र का सामना न कर सका और मारा गया।

उसकी मृत्यु पर उसके छोटे भाई दूषण ने युद्ध शुरू किया पर उसकी भी वही गति हुई।

यह खबर त्रिशिर के पास पहुंची। यह तीन सिर वाला राक्षस था। राक्षस का एक मुख तो क्रोध से इतना खुल गया कि वह देवताओं के लोक तक जा पहुंचा। दूसरे मुँह से प्रकट होता था कि राम ने शरीर के ऐसे बारीक टुकड़े कर डाले
CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जायेंगे कि वे कौओं की चोंच में भी न आ सके। तीसरे मुँह से उसने एक विशाल सेना को इकट्ठा होने की आज्ञा दी। इस सेना की विचित्रता यह थी इसके सैनिकों के मुख किसी भयानक पशु के समान थे और शरीर किसी अन्य पशु के समान था। परन्तु इन तीनों विचित्र शिरों और अद्‌भुत सेना के होते हुए भी त्रिशिर की वही दशा हुई जो उसके साथी खर और दूषण की हुई थी।

: १८ :

सीता-हरण

राक्षसों के इन तीन सेनापतियों की दुर्गति को देखकर सम्मनखा बड़ी भयभीत हुई और जल्दी-से-जल्दी लंका जा पहुंची। झूठ बोलने में वह दक्ष थी। उसने दसकंठ से कहा कि उसने जंगल में एक अतीव सुन्दर रमणी--सीता देखी है। उसने चाहा कि उस रमणी को पकड़कर दशकंठ के लिए ले आये। जब वह सीता को ला रही थी तो लक्ष्मण ने उसका अंग-भंग कर दिया और राम ने खर-दूषण तथा त्रिशिर को मार डाला। उसने दशकंठ को प्रेरित किया कि वह राम से युद्ध करके सीता को हर ले आये।

जब दशकंठ ने सीता के रूप का हाल सुना तो वह उस-पर इतना मोहित हो गया कि उसे अपनी बहन सम्मनखा के

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनादर का भी स्मरण नहीं रहा। वह यही सोचता रहा कि किसी प्रकार सीता का हरण किया जाय। उसने रानी मण्डो से भी परामर्श किया और कहा कि बहन का बदला लेने के लिए सीता को ले आना चाहिए। राम और लक्ष्मण को मारने से क्या प्रयोजन ? ये तो राक्षसों के सामने मक्खी के समान हैं। मण्डो ने बहुत समझाया परन्तु, दशकंठ ने उसकी बात न मानी। वह तो सीता के लिए विह्वल हो रहा था। उसने मारीश को आदेश दिया कि हिरण का रूप बनाकर जाओ और राम और लक्ष्मण को सीता से अलग कर दो। मारीश ने अक्षरशः उसकी आज्ञा का पालन किया।

वह हिरण का रूप रखकर सीता की कुटी के सामने घास चरने लगा। सीता ने ऐसा सुनहरा और चुलबुला हिरण देखकर इच्छा प्रकट की कि इसको तो पाल लेना चाहिए। उसने राम से कहा कि इसको पकड़ लाइए। राम ने बहुत समझाया, परन्तु सीता ने हठ पकड़ ली। अन्त में राम हिरण को पकड़ने चल दिये। उसका पीछा करते-करते वह घने जंगल में जा घुसे। राम के पीछा करने पर मारीश इतना थक गया कि हिरण के वेश को अधिक देर धारण न कर सका और अपने निज राक्षस रूप में प्रकट हो गया। राम ने पहचान लिया और एक ऐसा तीर छोड़ा कि उसके लिए वह घातक हो गया। अपने प्राणों को न बचता देखकर और फिर भी दशकंठ की सहायता के विचार से चिल्ला उठा, "लक्ष्मण बचाओ, लक्ष्मण बचाओ।"

यह आवाज सीता के कानों में पड़ी। वह समझी कि राम पर कोई विपत्ति आ गई। उसने लक्ष्मण से आग्रह

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया, वह शीघ्र ही अपने भाई की सहायता के लिए दौड़ जाय। परन्तु लक्ष्मण तो समझ गये कि ये राम के शब्द नहीं, बल्कि किसी राक्षस के हैं। उसके समझाने पर भी सीता आग्रह करती रही और लक्ष्मण को ताने मारती रही। अन्त में लक्ष्मण देवों से सीता की रक्षा की प्रार्थना करते हुए राम की तलाश में चल दिये।

अब दशकंठ को राम और लक्ष्मण की अनुपस्थिति से लाभ उठाने का अवसर मिल गया। वह एक साधु का रूप बनाकर सीता के समीप आया। एक साधु को देखकर सीता आतिथ्य करने के लिए उसे अपनी कुटी में ले गई। परन्तु साधु बोला, "अरी सीता, तुम जैसी सुन्दर स्त्री तो सब लोकों के राजा दशकंठ की रानी होने के योग्य है।" सीता ने साधु के के मुख से ऐसे अपशब्द सुने तो उसे क्रोध आया और उसको अपनी कुटी से बाहर निकाल दिया। रावण इस अपमान को न सह सका और अपने निज राक्षसीरूप में प्रकट होगया। उसने जबरदस्ती सीता को पकड़ कर अपने रथ पर बिठा लिया और लंका की ओर चल पड़ा।

उसी समय एक बलिष्ठ पक्षी शतायु, जो राम का मित्र था, राम के दर्शनार्थ उधर आ रहा था। उसने देखा कि दशकंठ उसके मित्र राम की भार्या सीता को आकाश मार्ग से लिये जा रहा है। उसने दशकंठ से कहा कि सीता को अभी छोड़ दो। उसके इन्कार करने पर शतायु ने लड़ाई करके दशकंठ की सेना को मार डाला और लंकेश से भी युद्ध छेड़ दिया। दशकंठ बड़े प्रबल अस्त्र छोड़ता था परन्तु पक्षी पर उनका कोई प्रभाव नहीं होता था। पक्षी [illegible] रहा था और

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कह रहा था कि मेरे ऊपर सिवाय उस अंगूठी के जो सीता के हाथ में है और किसी का प्रभाव नहीं होगा । शतायु के कथन का बुरा परिणाम हुआ । दशकंठ ने सीता के हाथ से अंगूठी छीन ली और पक्षी पर दे मारी जिससे वह गिर गया । परन्तु वह अपनी चोंच से अंगूठी पकड़े रहा और उसकी आत्मा राम की प्रतीक्षा में शरीर से चिपटी रही । इस प्रकार शत्रु से छुटकारा पाकर दशकंठ सीता को लंका में ले आया और उसको अपने एक सहस्र पुत्रों के संरक्षण में रख दिया ।

: १९ :

सीता की खोज

मारीश को मारकर राम लौट रहे थे कि मार्ग में लक्ष्मण मिले इससे उनको बड़ा भय मालूम हुआ । वह जान गये कि किसी चालाकी से लक्ष्मण को अलग किया गया है और सीता अकेली छूट गई होगी । दोनों भाई जल्दी से कुटिया की ओर दौड़े और देखा कि उनकी आशंका ठीक निकली । कुटिया सूनी पड़ी थी । आनन्द वर्धिनी सीता का वहां नाम निशान तक न था ।

राम-लक्ष्मण दोनों बड़े दुःखी हुए । उनकी समझ में नहीं आया कि क्या करें । परन्तु भाग्यवश तभी इन्द्र वहां आ गये और उन्होंने बताया कि सीता को इस मार्ग से ले जाया गया

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। राम और लक्ष्मण दोनों उसी राते चल पड़े और वहां आ पहुँचे, जहां घायल हुआ शतायु राम की प्रतीक्षा कर रहा था। पक्षी ने राम को सीता की अंगूठी दी और यह बताकर कि दशकंठ उसे हर ले गया है, अपने प्राण त्याग दिये। कृतज्ञ राम ने एक बाण छोड़ा जो अर्थी बन गया, और दूसरा बाण छोड़ा जिसने आग प्रज्वलित करके पक्षी के शरीर को जला दिया। फिर तीसरा बाण छोड़कर जलती हुई अग्नि को शान्त कर दिया।

इस प्रकार शतायु की अन्त्येष्टि करके राम-लक्ष्मण शतायु द्वारा बताये मार्ग की खोज करते हुए आगे चलने लगे। जब वह जा रहे थे कि मार्ग में एक और राक्षस मिला जिसका नाम कुम्बल था। उसको ईश्वर ने शाप दिया था कि जिसके कारण उसका केवल ऊपरी शरीर ही बना था। उसके लिए भी यही शर्त थी कि जब राम बन में आयेंगे तो उसको इस दुःख से छुड़ायेंगे। जब राम और लक्ष्मण उसके निकट आये तो उसने दोनों हाथों से उनको पकड़ लिया और चबा डालना चाहा। परन्तु उसका समस्त शरीर एक विचित्र भय से कंपायमान हो गया। उसने समझ लिया कि जिस मनुष्य को मैंने पकड़ा है, वह साधारण पुरुष नहीं, बल्कि मेरे मोक्षदाता राम ही हैं। उसने झट उनको छोड़ दिया। जब उसने राम की विपत्ति का हाल सुना तो उसने उनको परामर्श दिया कि खीद्खिन् देश में जाकर वहां के राजा बाली से सहायता लें, खीद्खिन् और जम्बू की सेनाओं को लेकर लंका पर चढ़ाई करें और सीता को छुड़ा लायें। कुम्बल से परामर्श लाभ करके राम ने राक्षस को पीड़ा से मुक्ति दिलाने के हेतु एक

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
तीर छोड़ा और वह मर गया।

जाते-जाते मार्ग में उनको एक और राक्षसी मिली, जिसका नाम था अशमुखी। वह भी देखते-ही-देखते इन दोनों भाइयों पर मोहित हो गई। उसने अपनी दैवी माया से चारों ओर अन्धकार कर दिया और लक्ष्मण को गोद में उठाकर आकाश में उड़ गई कि राम अपने भाई की सहायता के लिए दौड़ न सकें। परन्तु राम के बाणों ने अंधकार के बादल छिन्न-भिन्न कर दिये और लक्ष्मण को अपनी दशा का ज्ञान हो गया। उन्होंने कुछ मंत्र पढ़े, जिनके प्रभाव से वह लक्ष्मण सहित भूमि पर आ गिरी। लक्ष्मण ने उसकी भुजाएं काट डालीं। इसपर वह जान बचाकर जंगल को भाग गई।

इस विपत्ति के पश्चात् उनको एक छायादार वृक्ष दिखाई दिया। वे विश्राम के लिए वहां बैठ गये। दैवयोग से उस वृक्ष पर हनुमान बैठे हुए थे। दो अजनबी आदमियों को वृक्ष के तले देखकर उनका जी चाहा कि मालूम करें कि ये कौन हैं? अतः उनका ध्यान आकर्षित करने के लिए हनुमान ने एक शाखा को हिलाया। उस समय राम थककर ज़रा देर के लिए सो गये थे और लक्ष्मण उनका पहरा दे रहे थे। राम जग न उठें इसलिए लक्ष्मण ने बन्दर को भगाना चाहा, परन्तु बन्दर वहां से न टला। वह आग्रहपूर्वक शाखा को हिलाता ही रहा। अब तो लक्ष्मण ने धनुष-बाण उठा लिया, परन्तु हनुमान ने लक्ष्मण के हाथों से धनुष-बाण छीन लिया और लक्ष्मण को निश्शस्त्र कर दिया। इस विचित्र बन्दर की धृष्टता को देखकर उन्हें राम को जगाना ही पड़ा और उनसे सब हाल बताया। राम ने ऊपर को देखा तो बन्दर के शरीर पर

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्व निश्चित चिह्न दिखाई पड़े ।

जब हनुमान ने देखा कि उसके विशिष्ट चिह्न उन्होंने पहचान लिये, तो वह समझ गया कि यह अवश्य ही नारायण के अवतार राम हैं । हनुमान वृक्ष से उतर आये और अपनी सेवायें राम को समर्पित कर दीं ।

: २० :

राम और सुग्रीव की भेंट

जब हनुमान ने राम की विपत्ति का हाल सुना तो उन्होंने उचित समझा कि इन्हें अपने मित्र सुग्रीव से भी भेंट कराई जाय जो अपने भाई बाली-द्वारा अपमानित करके निकाल दिया गया था । ये दोनों भाई कैसे लड़ पड़े वह कथा इस प्रकार है :

कैलास पर्वत का एक द्वार एक राक्षस की देखभाल में था । जिसका नाम था नन्दकाल । एक दिन ईश्वर की अप्स-राओं में से एक उद्यान में कुछ फूल चुनने गई । राक्षस ने देखा कि एक चुलबुली स्त्री फूलों से लदी हुई उद्यान में घूम रही है । उसके मन में क्षोभ उत्पन्न हुआ और उससे प्रेम करने लगा । थोड़ी देर तक तो उसने अपनी इस मदन-वेदना को छिपाये रखा । परन्तु अपने भाव के वशीभूत होकर अन्त में उसने उस स्त्री की ओर एक फूल फेंका कि जिससे उसका

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ध्यान आकर्षित ही कर सके। दुर्भाग्यवश वह स्त्री प्रेम-भावना के वश में न थी। अत, इस प्रेम-प्रदर्शन से वह क्रुद्ध हो गई। वह कुपिता होकर ईश्वर के पास गई और उस राक्षस की शिकायत कर दी। ईश्वर को इस राक्षस की उद्दंडता पर क्रोध आया और उसको शाप दिया कि तू दरब नाम का भैंसा बन जा। तेरी यह योनि उस समय छूटेगी जब तेरा ही पुत्र दरबी तुझे मारेगा।

फलस्वरूप नन्दकाल को कैलाश छोड़ना पड़ा और वह भैंसा बन गया। थोड़े ही दिनों में वह बहुत से भैंसों का सरदार हो गया और बड़ा शक्तिशाली हो गया। अब वह अपने इस जीवन को इतना प्यार करने लगा कि इसे छोड़कर कैलाश जाने की भी उसे इच्छा नहीं रही। इसलिए जब कभी उसके नर बच्चा पैदा होता तो वह उसे मार डालता। जिससे उसको मारने वाला बेटा शेष न रहे। इससे उसके झुंड में जो भैंसें थीं उनको बहुत दुख होता था। इसलिए जब एक भैंस के बच्चा होनेवाला था तो वहां से हटकर एक खोह में चली गई कि कहीं वह नर बच्चा हुआ तो उसीका बाप उसे मार न डाले। बच्चा पैदा हुआ और उसका नाम दरबी पडा। उसकी मां ने उसको बता दिया कि उसके बाप की क्या गति हो चुकी है और उसने उसको देवों की रक्षा में छोड़ दिया।

जब वह बड़ा हुआ तो बाप से बदला लेने की बात सोचने लगा। यह देखने के लिए कि वह बाप के बराबर हुआ या नहीं, वह अपने खुरों के चिह्नों को अपने बाप के खुरों के चिह्नों से नापा करता था। जब दोनों के चिह्न बराबर

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिखाई पड़े तो उसने समझा कि अब वह अपने बाप के बराबर हो गया। इसलिए अब वह खुल गया और अपने बाप से युद्ध करना चाहा। इस प्रकार ईश्वर के निश्चय के अनुसार दरब अपने पुत्र दरबी के हाथ से मारा गया।

पहली ही लड़ाई में विजयी होने से दरबी के घमंड का पार न रहा। वह इतना उद्दंड हुआ कि एक बार उसने हिमालय के जंगल के देवताओं के साथ ही लड़ना चाहा। इसपर उन्होंने दरबी को परामर्श दिया कि वह पहले पंच गिरि के देवों से लड़े। जब बह वहां गया तो उन्होंने उससे कहा कि वह समुद्र के अधिष्ठाता देव से लड़े। परन्तु समुद्रदेव लड़ने के लिए तैयार न हुए। उन्होंने उसे ईश्वर के पास भेज दिया और कहा कि ईश्वर ही तुम्हारी युद्ध की पिपासा को तृप्त करेंगे। ईश्वर ने कहा कि तुम बाली के पास जाओ। उसके हाथ से मारे जाकर तुम खर के पुत्र बनोगे। तुम्हारा नाम मङ्करकंठ होगा और अन्त में तुम राम के तीर से मारे जाओगे।

अतः दरबी बाली के पास गया और उसे युद्ध के लिए ललकारा। खुले मैदान में लड़ाई हुई और दोनों बराबर रहे। बाली ने कहा कि कल प्रातःकाल खोह के बीच में लड़ेंगे। दरबी राजी हो गया। दूसरे दिन नियत खोह में लड़ाई हुई। परन्तु खोह के लिए प्रस्थान करने से पूर्व बाली ने सुग्रीव से कहा कि तुम खोह के द्वार पर खड़े रहना और बहते हुए रुधिर को देखते रहना। यदि रुधिर का रंग काला हो तो दरबी का रुधिर होगा। यदि रुधिर का रंग हलका हो तो समझना कि बाली मारा गया। उस समय तुम खोह का द्वार

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बन्द कर देना, जिससे संसार में कोई यह न जान पाये कि बाली इस दुर्गति से मरा।

सात दिन तक युद्ध होता रहा, परन्तु किसीकी विजय नहीं हुई। अन्त में बाली ने चाल चली। उसने दरबी से पूछा, "क्योंजी, तुममें इतनी शक्ति कैसे आ गई?" शक्ति के नशे में वह देवताओं की सहायता की कृतज्ञता को भूल गया और बोल उठा कि मेरी शक्ति मेरे सींगों में है। बाली ने देवों से कहा कि यह कृतघ्न है, इसका साथ छोड़ दो। देवों की सहायता से वंचित होते ही दरबी को बाली ने एक घूंसा मारा और वह मर गया।

उस समय वर्षा हो रही थी और उसका काला रंग फीका पड़ गया। सुग्रीव ने समझा कि यह मेरे भाई का ही रुधिर है। अतः उसने आदेशानुसार खोह का द्वार बन्द कर दिया और वहां से चला गया।

बाली ने दरबी का सिर काट लिया और खोह के द्वार पर आया। द्वार को बन्द पाकर उसे क्रोध आया। उसने समझा कि सुग्रीव मुझे मारकर मेरी गद्दी लेना चाहता है। उसने क्रोध में दरबी का सिर द्वार के पत्थर पर दे मारा जिससे खोह का द्वार खुल गया। महल में आकर उसने सुग्रीव को उसके अपराध में घर से निकाल दिया, जो वस्तुतः उसने नहीं किया था। घर से निकलकर सुग्रीव जंगल में भटक रहा था। वहां हनुमान से उसकी भेंट हो गई और दोनों साथ-साथ रहने लगे। दरबी ने दशकंठ के छोटे भाई खर और रजतासुर के घर में पुत्र के रूप में जन्म लिया।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

सुग्रीव ने अपनी दुख-गाथा राम को सुनाई। राम को

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह सुनकर बड़ा दुख हुआ। दोनों में यह निश्चय हुआ कि सुग्रीव राम की सहायता से बाली से लड़ें और राम की सुग्रीव की सहायता से दशकंठ को पराजित करके सीता को वापस लावें।

: २१ :

बाली का पतन

बाली के विरुद्ध सुग्रीव की सहायता करने में राम को एक संकोच था। उनकी बाली से कोई लड़ाई तो थी नहीं। सुग्रीव राम के इस संकोच को ताड़ गया। इसे दूर करने के लिए सुग्रीव ने कहा कि एक तो बाली ने प्रतिज्ञा-भंग करके मेरी पत्नी तारा का धर्म नष्ट किया है। दूसरे बाली को ईश्वर का यह अभिशाप है कि नारायण के अवतार के हाथों उसका बध होगा।

राम की शंका इस प्रकार दूर हो गई और वह सुग्रीव की सहायता को राजी हो गये। बाली को ईश्वर ने एक वर दिया था कि जिस किसीसे तुम लड़ोगे उसका आधा बल तुममें आ जायगा। अतः सुग्रीव को हानि से बचाने के लिए राम ने तीरों को जल में भिगोया और उस जल को सुग्रीव के सिर पर छिड़क दिया।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

अब वे खीदखिन् में गये और सुग्रीव ने बाली को युद्ध

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
के लिए बुलाया। राम ने सुग्रीव को बचन दिया था कि जब वह बाली से लड़ता होगा तब वह तीर मारेंगे।

बाली और सुग्रीव में कुश्ती होने लगी। दोनों भाई इतने तेज़ थे कि राम को यह पहचानना कठिन हो गया कि किस पर बाण छोड़ा जाय। बाली ने शीघ्र ही सुग्रीव को पछाड़ दिया और चक्रवाल पहाड़ पर दे मारा। परन्तु पवित्र जल ने सुग्रीव की रक्षा की।

जब सुग्रीव लौटा तो उसने शिकायत की कि राम ने बाण क्यों नहीं छोड़ा ? राम ने बताया कि वे बाली को पहचान न सके। अतः उन्होंने कपड़े की एक धज्जी ली और पहचान के लिए सुग्रीव के हाथ में बाध दी।

दूसरे दिन जब कुश्ती आरम्भ हुई तो राम ने बाली पर बाण छोड़ दिया। बाली इतना चालाक था कि उसने तीर पकड़ लिया। उसने देखा कि एक तपस्वी बाण छोड़ रहा है, तो वह राम को धिक्कारने लगा कि साधु होकर ऐसी असाधुता का काम करते हो। तब राम ने नारायण का रूप धारण कर लिया और उसको अपनी प्रतिज्ञा-भंग की याद दिलाई।

बाली डर गया। उसे ज्ञात हो गया कि दंड के दिन आ गये। अतः उसने सुग्रीव, अंगद और हनुमान को राम की शरण में सौंपा और अपना अन्त करने के लिए तैयार हो गया। राम ने उसकी क्षति को समझा और चाहा कि उसका प्राणान्त न हो। राम ने बाली से कहा कि केवल एक बूंद रक्त की दे दो, जिससे ब्रह्मास्त्र का प्रभाव बना रहे। तुम्हारे शरीर में बाल के सातवें भाग से अधिक घाव न होगा।
CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परन्तु जो यश के पुजारी हैं उनको मृत्यु प्यारी होती है। अपमान सूचक छोटा-सा घाव भी अंगीकृत नहीं है। बाली तो इन्द्र का बेटा था। भला वह इस अपमान को कैसे सह सकता था, जिससे देवों में उसकी हँसी हो।

अपने निश्चय पर दृढ़ होकर वाली ने सुग्रीव को उपदेश दिया[1] कि तुम राम की भक्ति करना। फिर उसने तीर लिया और अपने हृदय में वेध कर सदा के लिए आंखें बन्द कर लीं।

: २२ :

युद्ध की तैयारी

वाली की अन्त्येष्टि के पश्चात सुग्रीव ने राम को खीद-खिन् में रहने के लिए बुलाया; परन्तु राम ने स्वीकार नहीं किया। अतः सुग्रीव ने कहा कि आप गँधामास में रहिये। मैं खीदखिन से सेना लाता हूँ।

जब राम गँधामास में ठहरे हुए थे तभी उनको एक मोर मिला, जिसने सीता की सूचना दी, और एक बन्दर मिला जिसकी ओर सीता ने एक वस्त्र फेंक दिया था कि राम को दे देना।

---

१. थाई भाषा में एक पुस्तक है 'बाली की भाई को शिक्षा।' इसमें वर्णन है कि सेवक का स्वामी के प्रति क्या कर्त्तव्य है।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राम ने सात दिन प्रतीक्षा की। सुग्रीव के लौटने के कोई लक्षण दिखाई न पड़े। अन्त में लक्ष्मण उसकी तलाश में निकले। सुग्रीव ने बताया कि समस्त देश में गड़बड़ मची हुई है। सेना एकत्रित करने में कुछ समय लगेगा। परन्तु उसने वचन दिया कि वह कल राम से अवश्य मिलेगा।

प्रातःकाल ही सुग्रीव और हनुमान राम से मिलने चल दिये। गँधामास में पहुँच कर सुग्रीव ने बताया कि वाली का मित्र जम्मू राजा अपने मित्र की मृत्यु का बदला लेने के खीदखिन के लोगों को इकट्ठा करना चाहता है। इसलिए राम ने पत्र लिखकर उसको बुलाया। जम्बू को पत्र तो मिल गया परन्तु उसको विश्वास नहीं हुआ कि यह राम का ही पत्र है। अतः वह स्वयं तो नहीं आया परन्तु अपनी भक्ति का आश्वासन दिया। परन्तु हनुमान इससे संतुष्ट नहीं हुए। उन्होंने माया के बल से महल के सब लोगों को सुला दिया और जिस पलंग पर जम्बू सो रहा था उसे उठाकर राम के पास ले आये।

जब जम्बू जागा और देखा कि वह तो नारायण के सामने हैं, तो उसने निःसंकोच अपनी भक्ति प्रकट की।

प्रातःकाल जब रानी ने अपने पति जम्बू को महल में नहीं पाया तो वह जान गई कि अवश्य ही हनुमान उनको उठा ले गया। इसलिए उसने राजा के भतीजे नीलबद् से कहा कि वह अपने चाचा की खोज में जाय। उसने मक्खी का रूप धारण किया और वहाँ जा पहुँचा, जहाँ जम्बू बैठा था। उसने जम्बू के कान के पास जाकर पूछा कि वह राजधानी से कैसे चले आये ? तो राजा ने सच बात बता दी और कहा

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि अब तो नारायण का काम पूरा करना है, अतः अभी राजधानी को नहीं लौटा जा सकता। उसने नीलबद् को राम से मिला दिया। नीलबद् ने जंबू के राम की सेवा करने से तो प्रसन्नता प्रकट की। पर उसका हनुमान के प्रति वैर-भाव कम नहीं हुआ।

राम ने नीलबद् और सुग्रीव से कहा कि वे अपनी-अपनी राजधानी को लौट जायं और अपनी सेना ले आयं। जम्बू वृद्ध था इसलिए राम ने उससे कहा कि वह तो अपनी राज-धानी लौट जाकर राज करे और खीदखिन में भी सुग्रीव का प्रतिनिधि बनकर शासन करे।

शीघ्र दोनों सेनाएं कट्ठी हो गई, जम्बू की सेना नील-बद् की अध्यक्षता में और खीदखिन् की सेना सुग्रीव की अध्यक्षता में। इनके अठारह सेनाध्यक्ष थे। यह सब गँधामास पर्वत की तलहटी में इकट्ठे हो गये।

: २३ :

हनुमान की लंका-यात्रा

जब सब तैयारियां हो गई तो राम ने तुरन्त ही लंका पर चढ़ाई करने का विचार किया। पहले सैनिकों और सेनाध्यक्षों की सभा बुलाई गई। यह निश्चय हुआ कि मुख्य सेना के कूच करने से पूर्व एक परीक्षक दल हनुमान, जम्बू

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बल, और नीलबद् की अध्यक्षता में भेजा जाय। उनका यह भी काम था कि सीता के निवास-स्थान का भी पता लगाकर सीता को सूचना दे दें।

राम ने हनुमान को अपनी अंगूठी और सीता का चीर दिया जिससे सीता पहिचान सके कि यह वस्तुतः राम का ही दूत है। परन्तु हनुमान को भय था कि शायद वह मुझे शत्रु समझे। क्योंकि इन चिन्हों को तो राक्षस भी कपट से प्राप्त कर सकता है। इसलिए राम ने हनुमान को कहा कि यदि सीता के मन में तुमरेह प्रति कोई शंका उठे तो मैं तुमको एक ऐसी गुप्त बात बताता हूं, जिसका पता मेरे और सीता के अतिरिक्त किसी अन्य को नहीं है। वह बात यह थी कि मिथिला के महलों की खिड़की में से उन दोनों ने किस प्रकार विवाह से पूर्व एक दूसरे को देखा था और किस प्रकार उनके हृदयों में परस्पर प्रेम का बीज उठा था। सीता की शंकाओं के निवारण करने की यह सब सामग्री लेकर हनुमान और उनके साथी चल पड़े।

बहुत दिनों की यात्रा के पश्चात ये सब लोग यमन नगर में आये। यह नगर उजड़ा हुआ था। यहां केवल पुषमाली नामक एक अभागी अप्सरा दिन काट रही थी जिसको किसी अभिशाप के कारण स्वर्ग से निकाल दिया गया था। इसका एक मात्र दोष यह था कि इसकी सहायता से यमन के राजा तवन ने स्वर्ग की अप्सरा रंभा को हथिया लिया था। इसके दंड स्वरूप ईश्वर ने उसके पूरे देश को विध्वंस कर दिया। पुषमाली वहीं अकेली रहने लगी। उसे यह कहा कि जब राम के सैनिक आयेंगे और उससे भेंट करेंगे तब उसकी

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुक्ति होगी। हनुमान उससे मिले और कहा कि मैं राम का दूत हूँ। परन्तु पुषमाली को शंका हुई। उसने कहा कुछ चमत्कार दिखाओ तब मैं जानूँ कि तुम राम के सच्चे दूत हो। यह सुन हनुमान ने चतुर्मुखी और अष्टभुजी विराट रूप धारण कर लिया और उनके चारों मुखों से अनेक सूर्य, चन्द्र तथा तारागण चमने लगे। पुषमाली मान गई और उसने हनुमान को लंका का रास्ता बता दिया। वह अप्सरा इतनी रूपवती थी कि हनुमान प्रेम के वश हो गया और पुषमाली ने भी प्रेम का उत्तर प्रेम से दिया। कुछ दिनों के प्रेम पूर्वक सहवास के पश्चात हनुमान ने उस अप्सरा को स्वर्ग भेज दिया और वह अभिशाप से छूट गई।

पुषमाली द्वारा बताये मार्ग पर चलते-चलते ये लोग महानदी पर आये। महानदी बड़ी तेज गतिवाली नदी थी। इसे पार करना बड़ा कठिन था। परन्तु हनुमान के लिए तो कुछ भी कठिन न था। उन्होंने अपनी पूंछ नदी के एक तट से दूसरे तट तक फैला दी। यह एक अच्छा पुल बन गया और समस्त सेना-दल नदी के पार उतर गया। इसके बाद वे हेमतीख पर्वत पर पहुंचे, जिसके तल बहुत मेंबड़ा समुद्र लहरें मार रहा था। अब तो फिर सेना की गति में बाधा पड़ गई। सामने कहीं भूमि दिखाई ही नहीं देती थी। अथाह और अपार सागर सामने लहरा रहा था।

अब क्या किया जाय? पराक्रमी हनुमान बोले कि शतायु के समान यशस्वी मृत्यु मुझे प्रिय हैं, परन्तु यह स्वीकार नहीं कि समुद्र से हार मान लूं। शतायु का नाम आते ही एक विचित्र जादू हो गया। निकटस्थ पहाड़ की एक खोह

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
में से समवादी नाम का एक पक्षी निकला, जो शतायु का बड़ा भाई था। उसके पर कटे हुए थे और वह विपत्तिग्रस्त मालूम होता था। जब शतायु अनजान बालक था तब उसने उषा काल में सूर्य को खिड़की जैसी चीज से बाहर चमकता हुआ देखा। उसने समझा कि कोई अच्छा फल है। उसे लेने के लिए वह उड़ा। अपने भाई को विपत्ति से बचाने के लिए समवादी ने उसको अपने पैरों में छिपा लिया। और सूर्य भगवान का समस्त क्रोध अपने ऊपर ले लिया। उसके सब पंख जल गये। यह देख सूर्य भगवान ने उसे बताया कि उसके नये पंख तभी उगेंगे जब राम का दल तीन बार स्वागत ध्वनि करेगा। अन्त में आज वह अवसर आ ही गया। यह समय शोक का भी था और हर्ष का भी। उन्होंने शतायु की मृत्यु के दुखद समाचार सुनाये। परन्तु साथ ही स्वागत-ध्वनि के द्वारा उसके नये पंख भी उपजा दिये जिससे उसमें नये जीवन और नई शक्ति का संचार हो गया और वह आकाश में उड़ने लगा।

कृतज्ञ पक्षी ने हनुमान से कहा कि मेरी पीठ पर बैठ जाओ और मैं तुमको गंध शिखर पर्वत पर लिये चलता हूँ, जो हेमतीरन और लंका के बीच में है। जब वे वहां पहुंचे तो समवादी ने हनुमान को नीलकाल पर्वत दिखाया, जिसकी ऊंची चोटियाँ आसमान से बातें कर रही थीं।

हनुमान ने एक छलांग मारी और वहां से निर्दिष्ट स्थान की ओर उड़ा। परन्तु मार्ग में एक बड़ी भयानक राक्षसी मिली, जिसको दशकंठ ने समुद्र को सुरक्षित रखने के लिए नियत किया हुआ था। हनुमान उसके मुँह में घुस गया और
CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसकी आंतें बाहर निकाल ली। इससे राक्षसी मर गई और समुद्र के जन्तुओं ने उसको चट कर दिया।

हनुमान की छलांग इतनी बड़ी थी कि वह नीलकाल पर्वत के भी आगे बढ़ गये। और सोलाह पर्वत पर जा पहुंचे जहां नारद ऋषि रहते थे। हनुमान ने वहां एक रात ठहरने की अनुमति मांगी। नारद ने एक झोंपड़ी बता दी। परन्तु हनुमान को नारद की महत्ता की परीक्षा लेनी थी। उन्होंने अपना शरीर इतना बढ़ाया कि वे झोंपड़े में नहीं समाये। अनन्त शक्ति वाले ऋषि के प्रताप से झोंपड़ी बड़ी होती गई, परन्तु हनुमान भी अपना शरीर बढ़ाते ही गये। यह देख ऋषि ने हनुमान को शिक्षा देने के हेतु इतना पानी बरसाया कि ठंड के मारे उनका शरीर ठिठुरकर फिर पहला जैसा ही हो गया। ऋषि हनुमान को झोंपड़े में जाड़ा खाते छोड़ एक तालाब में घुस गये और वहां एक लकड़ी को जोंक में परिवर्तित कर दिया।

हनुमान को यह बात मालूम न थी। वह स्वभावतः प्रातः काल तालाब पर नहाने गये। जैसे ही हनुमान ने गोता लगाया वह जोंक हनुमान की डाढ़ी से चिपक गई। हनुमान ने उसे छुड़ाना चाहा, परन्तु वह इतनी चिकनी और लचलचीली थी कि छुड़ाये न छूटी। अन्त में हनुमान ने सोचा कि अरे यह तो मेरी ही उद्दंडता का दंड है। हनुमान प्रायश्चित्त के रूप में ऋषि के पास गये और उनसे क्षमा मांगी। जोंक तभी छूट पड़ी।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: २४ :

लंका-दहन

हनुमान ने नारद से विदा ली और लंका को चल दिये। एक छलांग में वह नील-काल पर्वत पर चढ़ गये। उसके संरक्षक को, जो चतुर्मुख और अष्टभुजी था, मारकर हनुमान राक्षस के रूप में लंका में प्रविष्ट हुए। अंधेरी रात थी और सहपति ब्रह्मा की सृष्टि का सौन्दर्य दिखाई नहीं पड़ता था। हनुमान ने रात के अंधकार से लाभ उठाया। माया के जोर से सब लंका-वासियों को सुला दिया और हर्षपूर्वक दशकंठ के महलों में प्रवेश किया। वह एक दालान से दूसरे दालान और एक कमरे से दूसरे कमरे में फिरते रहे परन्तु सीता का कहीं कोई चिन्ह दिखाई नहीं पड़ा।

लज्जित होकर वह नारद के पास आये और ऋषि से परामर्श लिया। नारद के कहने से उन्होंने एक छोटे बन्दर का रूप धारण कर लिया और वाटिका में जा घुसे। वहां सीता इस प्रकार छिपी बैठी थी जैसे बादलों में चन्द्रमा छिप जाता है।

इतनी देर में दिन हो गया था। अतः हनुमान दिन भर छिपे रहे और अंधेरी रात की प्रतीक्षा करने लगे। जब रात का समय हुआ तो दशकंठ नारायण की पत्नी (सीता) को मनाने के लिए वाटिका में आया। सीता से उसने बहुत अनुनय तथा विनय के साथ प्रेम-याचना की। परन्तु भक्ति पूर्ण

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुद्ध हृदय में कोई बुरी भावना उठ नहीं सकती। दशकंठ निराश होकर लौट गया, परन्तु वह पहले से अधिक क्रुद्ध था।

इस सबसे सीता का धैर्य छूट रहा था। उसे निरन्तर इसी प्रकार अपमान-सूचक अनुनय-विनय सुनने को मिलती थी। इस कारण अब उसने ठान लिया कि इस शरीर का शीघ्र ही अंत कर देना चाहिए। इस विचार के आते ही वह एक वृक्ष के नीचे गई और वहां अपने को फांसी लगानी चाही। यह देख हनुमान चौंक पड़े। उन्हें आशा न थी कि सीता इस प्रकार अपने प्राण देने के लिए उद्यत हो जायगी।

वह वृक्ष पर चढ़ गये और रस्सी की गांठ खोल दी। उसे बड़ी प्रसन्नता हुई जब यह मालूम हुआ कि सीता अभी जीवित है। उन्होंने सीता को अपना परिचय दिया और कहा कि राम लंका पर चढ़ाई करके आपको छुड़ाने का उद्योग कर रहे हैं।

जब सीता को हनुमान की सत्यता पर विश्वास हो गया तो उनके मुख पर हर्ष के आंसू बहने लगे। निराशा की लम्बी अंधियारी के पश्चात यह आशा की पहली झलक थी। सीता ने समझ लिया कि अब उसको अपमानित करनेवाले अजेय राक्षस का भी राम के बाणों से अन्त होनेवाला है। हनुमान ने चाहा कि सीता को अपनी हथेली पर बिठाकर राम के पास ले जाय। परन्तु सीता इसके लिए राजी नहीं हुई। दश-कंठ के द्वारा हरण किये जाने से उसका बहुत बड़ा अपमान हो चुका था। वह यह नहीं चाहती थी कि अब दूसरी बार किसी पर पुरुष के साथ वह भाग निकले। उसने कहा कि

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
उसके आश्वासन से उसके हृदय में नई आशा की किरण उत्पन्न हो गई है। अतः अब वह राम के लिए जीवित रहेगी।

इतना पता लग जाने के बाद हनुमान ने सीता से बिदा ली और हिमतीरन पर्वत की ओर चल पड़े। परन्तु नगर को छोड़ने से पूर्व वह अपने आने के कुछ चिन्ह भी छोड़ जाना चाहते थे। अतः उन्होंने छलांग मार-मार कर दशकंठ के बाग के बहुत से पेड़ उजाड़ दिये। उन्हें पकड़ने के लिए बहुत-से राक्षस झपटे, परन्तु सबको अपनी जान गवांनी पड़ी। दशकंठ के हजार पुत्र (सहस्र कुमार) भी कुछ न कर सके। यह देख इन्द्रजित आगे बढ़ा। इसने युद्ध में देवलोक के अधिपति के भी दांत खट्टे कर दिये थे। राक्षसों की शक्ति की परीक्षा लेने के हेतु हनुमान इन्द्रजित की रस्सी से बंध गये और लंका के राजा दशकंठ के सामने लाये गए। दशकंठ ने हनुमान की वीरता की प्रशंसा की और कहा कि तुम हमारी सेना में सम्मिलित हो जाओ। परन्तु हनुमान ने कहा कि दूसरे की दासता करने से तो मर जाना अच्छा है। क्या वह उसकी पूंछ से रुई लपेट कर उसको आग लगा देंगे? राक्षसों ने ऐसा ही किया और बन्दर का समस्त शरीर जल उठा। इसके बाद हनुमान पर्वताकार हो गया और उसके शरीर से अग्नि की ज्वालायें निकलने लगीं। एक झटके से उसने अपने बंधन तोड़ दिये और लंका की गलियों में घूमने लगे। वायु-पुत्र हनुमान एक छत से दूसरी छत पर कूदने लगे और इस प्रकार सारी लंका पुरी में आग लग गई। आन की आन में सारे राजमहल जलकर राख हो गये और सोने की लंका राख का ढेर बन गई।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लंका को जलाकर हनुमान ने समुद्र में कूदकर आग बुझाई। परन्तु उनकी पूंछ तो अब भी जल रही थी। कोई पानी उसे बुझा न सका। हताश होकर हनुमान ने नारद से परामर्श लिया। नारद बोले––

"अरे हनुमान, तू इतना मूर्ख है। तुझे अपने छोटे-से कुएँ का पता नहीं ?"

हनुमान समझ गये और पूंछ को अपने मुँह में रख लिया। आग तुरंत बुझ गई। इसके बाद अपने पराक्रमों का साथियों के सामने वर्णन करते हुए वे सब हर्ष के मारे कूदते-फांदते राम को सूचना देने के लिए गँधामास पर्वत पर लौट आये।

राम ने जब हनुमान के पराक्रम सुने तो उनको भय हुआ कि सीता को कुछ हानि न पहुंचे। वह तो अब भी शत्रु के हाथ में है।

"हनुमान तुमने बुरा किया।"

"महाराज, मैंने यह थोड़े ही बताया है कि मैं राम का दूत हूं। दशकंठ को क्या पता कि मैं कौन हूं।" हनुमान बोले।

राम की सेना लंका पर चढ़ाई करने चल पड़ी और कुछ ही दिनों के पश्चात उस स्थान पर डेरा डाला, जहां समुद्र देव लंका को घेरे हुए लहरें मार रहे थे।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: २५ :

विभेक की रामभक्ति

दशकंठ आराम से सो रहा था। उसे पता भी नहीं था कि कोई विपत्ति आने वाली है। लंका-दहन से नगर को हानि अवश्य हुई थी, परन्तु जिस दशकंठ के बस में समस्त देवता थे, उसके लिए हनुमान की इस उद्दंडता के चिह्नों को साफ कर डालना क्या कठिन था! शीघ्र ही लंका का पुर्ननिर्माण कर दिया गया और वह पहले से भी अधिक सुन्दर नगरी बन गई।

इसी बीच एक रात को दशकंठ ने एक भयानक स्वप्न देखा। स्वप्न यह था कि स्वर्ग में दो चीलें लड़ पड़ीं। काली चील पश्चिम से आई और सफेद चील दक्षिण से। काली चील मर गई और उसके शरीर से एक राक्षस उत्पन्न हुआ। साथ ही उसने एक दृश्य और देखा कि उसने एक नारियल में कुछ तेल डाला और बत्ती रखकर उसे अपने हाथ में उठा लिया। एक स्त्री आई और उसने बत्ती जला दी। बत्ती ने समस्त दीपक को जला दिया और आग उसकी हथेली तक पहुंच गई। उसके सारे शरीर में जलन होने लगी। तभी दशकंठ की आंख खुल गई और वह भय से कांपने लगा। उसकी बीसों आंखों से भय के चिह्न दिखाई पड़ रहे थे।

सुबह होने पर दशकंठ ने विभेक को बुलाया और पूछा कि इस स्वप्न का क्या अर्थ है। विभेक ने बताया कि काली

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चील दशकंठ है और सफेद चील राम। राम दशकंठ को पराजित करेंगे। नारियल लंका है, तेल दशकंठ का वंश है और बत्ती दशकंठ है। जिस स्त्री ने बत्ती जलाई वह सम्मनखा हैं और जो ज्वाला उठी वह सीता है। स्वप्न इसलिए हुआ है कि नक्षत्रों द्वारा दशकंठ पर जो विपत्ति आनेवाली है उसकी सूचना पहले से हो जाय। ज्योतिष-शास्त्र में कोई ऐसा उपाय नहीं है, जिससे इस आपत्ति से बचाव हो सके। इसका एक ही इलाज है कि सीता को लौटा दिया जाय और राम से क्षमा मांग ली जाय।

परन्तु जैसे मृत्यु का ग्रास ओषिध-सेवन से इन्कार करता है, इसी प्रकार दशकंठ ने विभेक की बात नहीं मानी। उल्टा विभेक पर ही उसे क्रोध आया। विभेक का भला यह साहस कि वह मुझे राम से भी निर्बल समझे! उसने उसके सामने उसके शत्रु राम की प्रशंसा कैसे की? क्रोध से आग बबूला होकर दशकंठ ने विभेक को लंका से निकाल दिया और उसकी स्त्री त्रिजटा को सीता पर पहरा देने को नियुक्त किया।

देश और घर से निकाला जाकर विभेक बन्दरों की छावनी में आया और राम की शरण ली। परन्तु जब उसने सुग्रीव की सेना देखी तो बड़ा अचम्भा हुआ। लंका का राजा तो इतना बलवान है कि देवेन्द्र इन्द्र भी उससे भय खाते हैं। क्या ये सब बन्दर हनुमान-जैसे ही बली हैं? विभेक की इस शंका को दूर करने के हेतु सुग्रीव ने बन्दरों को आज्ञा दी कि वे अपनी शक्ति का प्रदर्शन करें।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

बन्दरों की शक्ति का प्रदर्शन देखकर बड़े-से-बड़े साहसी

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
दंग रह गये ! किन्हीने पहाड़ उठाकर हथेली पर रख लिया तो किन्हीं ने सूर्य को छिपाकर संसार को अंधकारमय बना दिया। किन्हीं ने समुद्र को सुखा डाला तो किन्हीं ने इतना बड़ा तूफान खड़ा कर दिया मानो प्रलय ही आनेवाला है।

इस प्रदर्शन से इतना जबर्दस्त कोलाहल हुआ कि दशकंठ तक इसकी खबर जा पहुंची। दशकंठ के बीसों कान खड़े हो गये। यह कैसा कोलाहल है, जो लंका की शांति को भंग कर रहा है ? क्या मृत्युदेव ने अपना नगाड़ा बजाया है ? मंत्रियों ने उसे बताया कि यह कोलाहल राम के दल का है। लेकिन दशकंठ को विश्वास नहीं हुआ कि सचमुच राम की सेना इतनी विशाल होगी। कहीं ढोल की पोल तो नहीं है ? इसका ठीक-ठीक पता लगाने के लिए दशकंठ ने राक्षस शुक्र-सर को भेजा कि शीघ्र जाकर देखें और तुरन्त खबर दे। राक्षस ने चील का रूप धारण किया और राम के दल के समीप जा पहुंचा। वहां जाकर यह बन्दर बन गया और बंदरों के बीच में रहने लगा, परन्तु विभेक ने जान लिया कि यह तो राक्षस है और हनुमान को इसकी सूचना कर दी। हनु-मान ने तुरन्त अपनी हथेली इतनी बड़ी बना ली मानो वह कोई बड़ा तम्बू हो और उससे समस्त सेना को ढक लिया। सारे बंदर एक-एक करके उसकी उंगलियों में से होकर निकलने लगे। अंत में बंदर के रूप में शुक्रसर निकला। परंतु उसमें और दूसरे बंदरों में भिन्नता थी। एक तो उसकी छाया नहीं पड़ती थी, दूसरे उसकी आंखों की पलकें झपकती नहीं थी। वह तुरन्त पहचान लिया गया। उसपर बड़ी मार पड़ी, परन्तु उसको छोड़ दिया गया कि जाकर अपने

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजा को सब हाल बता दे।

जब उसके सेवक को कुछ सफलता न मिली तो दशकंठ स्वयं साधु का वेश बनाकर आया। साधु का वेश देखकर राम ने उसका सम्मान और आतिथ्य-सत्कार किया, लेकिन विभेक ने उसको पहचान लिया। फिरभी वह कुछ बोल नहीं सका, क्योंकि उसके भाई दशकंठ ने अपनी माया से उसे गूंगा बना दिया था। ऐसा करने में दशकंठ का एकमात्र उद्देश्य यह था कि वह राम से कहे कि वह लंका पर चढ़ाई न करें। परन्तु उसका यह परिश्रम व्यर्थ हुआ, क्योंकि राम तो पीछे हटना जानते ही न थे। तब दशकंठ चिन्तित होकर लंकापुरी को लौट गया।

दशकंठ चालाक तो था ही, घर जाकर उसे एक चाल सूझी। उसने विभेक की लड़की बेन्चकाय को आज्ञा दी कि तू सीता का रूप रखकर शत्रुदल के निकट की जलधारा में इस तरह पानी पर तैरने लग कि जिससे लोग यह समझें कि सीता मर गई है।

प्रातःकाल नित्य के समान जब राम नहाने आये तो जलधारा में उन्होंने सीता की लाश को पानी पर तैरते देखा। यह देख उनको बड़ा दुःख हुआ, मानो उनके प्राण ही निकल रहे है। वह वहीं विलाप करने लगे। उसे सुनकर लक्ष्मण भी वहां आ गये और दोनों दुःखी होकर रोने लगे। उनकी इस यात्रा का क्या यही अंत होना था? सैकड़ों यातनाएं सहीं, जंगलों में भटके, क्या इसीलिए कि सीता की यह गति हो! उसकी अस्थियों के लिए कोई अस्थि पात्र न मिले। विदेशों में उसकी लाश पानी पर तैरती रहे! उसकी विदाई पर

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समुद्र की लहरों की आवाज को छोड़कर कोई बाजा भी न बजे ! उसकी अंतिम शय्या[1] पर कोई छतरी तक न हो सिवा जंगली वृक्षों की डालियों के ! यह सब सोचकर उनका हृदय विदीर्ण हो गया और वह निरन्तर विलाप करते रहे। यह सुनकर हनुमान, विभेक और अन्य सेनाध्यक्ष भी वहां पर आ गये। हनुमान को देखते ही राम का क्रोध उबल पड़ा। उन्होंने सोचा कि इस बन्दर की धृष्टता के कारण ही यह सब कुछ हुआ और लंका-दहन का बदला दशकंठ ने सीता की हत्या करके लिया।

लेकिन हनुमान खड़े-खड़े तैरती हुई लाश को देखते रहे। उनको एक शंका हुई कि यह लाश अभी सड़ी तो है नहीं। फिर वह नदी पर तैर कैसे सकती है, और वह भी बहाव के ऊपर की ओर। उनकी इस शंका को सुनकर सबके चेहरों पर आशा की रेखा चमकने लगी। हनुमान की सूचना पर लाश को चिता पर रक्खा गया। तब तो बेन्चकाय चीख मारकर उठ खड़ी हुई और अपने असली रूप में आकर आकाश को उड़ गई। परन्तु पवन-सुत ने फौरन लपककर उसे पकड़ लिया। सुग्रीव ने ऐसी मार लगाई कि उसे बताना पड़ा कि वह कौन है ?

जब यह मालूम हो गया कि यह विभेक की लड़की है, तो राम ने कहा कि विभेक ही इसका न्याय करेंगे। विभेक ने पितृ-स्नेह को त्यागकर न्याय किया और कहा कि गुप्तचर के लिए यही सजा है कि उसे मृत्यु का दंड दिया जाय। राम

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

[1] थाई देश में अन्त्येष्टि संस्कार इसी प्रकार होता है। —ले०

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विभेक की निष्पक्षता से बड़े प्रसन्न हुए और उन्होंने आज्ञा दी कि इसे क्षमा कर दिया जाय और हनुमान जाकर इसे लंका पहुंचा आवे। मार्ग में हनुमान को उससे प्रेम हो गया। परिणाम यह हुआ कि लंका पहुंचने से पूर्व ही बेन्चकाय हनुमान की पत्नी बन गई और बाद में उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ, जिसका नाम असुरपाद रक्खा गया।

: २६ :

सेतु-बन्ध

अब यह निश्चय किया गया कि सेना पार करने के लिए समुद्र पर पुल बनाया जाय। तुरन्त हनुमान और नीलबद ने बन्दरों को इकट्ठा किया और अनन्त समुद्र को शान्त बनाने का उद्योग आरम्भ कर दिया। परन्तु यहां नीलबद के हाथ एक ऐसा अवसर आ गया कि जिससे हनुमान ने उसके चाचा जम्बू के साथ जो दुर्व्यवहार किया था, उसका बदला लिया जा सके। वह बड़ी-बड़ी चट्टानों को काट-काट कर डालने लगा और हनुमान को उनको उठाने और जमाने का काम दिया गया। नीलबद तो हनुमान को अपमानित करना चाहता था। इसलिए उसने इतनी जल्दी-जल्दी पत्थर गिराये कि हनुमान को उनके उठाने में कठिनाई होने लगी, परन्तु हनुमान शान्तिपूर्वक काम करते गये। उन्होंने सोचा कि मेरा भी दांव कभी लगेगा, तब मैं इसे मज़ा चखा दूंगा।

थोड़ी देर के पश्चात् उन्होंने काम की बदली कर ली।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हनुमान ने अब अपने एक-एक बाल से एक-एक चट्टान बांध ली और नीलवद् से कहा कि जल्दी-जल्दी ढोते जाओ। परन्तु नीलवद् के लिए ऐसा करना असम्भव था। पहले तो कहा-सुनी हुई, फिर हाथापाई होने लगी। जब राम को पता लगा तो उन्होंने कहा कि यह तो बुरी बात है कि दो बड़े सेनाध्यक्ष इस प्रकार से आपस में लड़ें। फिर दूसरे सिपाही ऐसा क्यों न करेंगे? नीलवद् को आज्ञा हुई कि वह देश को लौट जाय और सुग्रीव के स्थान में राज्य करे और वहां से सेना को रसद पहुंचाये। हनुमान को आज्ञा हुई कि जैसे बने सात दिन में पुल बना दो।

हनुमान बड़े जोर-शोर से काम करने लगे और समुद्र में चट्टानों की कतार लग गई। दशकंठ के कान में पुल बनाने का यह शोर सुनाई पड़ा और उसकी आंखों की नींद उड़ गई। उसने इस काम में बाधा पैदा करने की सोची। उसे मछली से उत्पन्न हुई अपनी लड़की स्वर्णमच्छा की याद आई। उसने उसे बुलाकर कहा कि तुम अपनी सहेलियों के साथ जहां पुल बन रहा है वहां जाओ और जो पत्थर समुद्र में गिरें, उन्हें हटाकर अलग पटकती जाओ।

हनुमान चकित रह गये, क्योंकि जो पत्थर वह गिराते, वही समुद्र की तह में लुप्त हो जाता। यह देख हनुमान नें समुद्र में गोता लगाया तो वहां उन्होंने स्वर्णमच्छा और उसकी सहेलियों को पत्थर हटाते देखा। हनुमान ने उनको बाधित किया कि वे पत्थरों को जहां-के-तहां लाकर लगा दें। हनुमान ने यहां भी रूपवती स्वर्णमच्छा से प्रेम निवेदन किया और वह राजी हो गई। फलस्वरूप जब वह अपने पिता के पास अपनी पराजय की बात कहने गई तो उस समय उसके पेट में हनुमान

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का मत्स्य पुत्र मच्छानु था। दशकंठ के डर से उसने उसे अपने गर्भाशय से निकालकर समुद्र के तट पर फेंक दिया था और देवताओं से अनुरोध किया था कि वे उसकी रक्षा करें।

इधर पुल तैयार हो गया और समुद्र पार जाने का मार्ग बन गया। इन्द्र ने राम को अपना रथ दिया, जिसको मातली हांक रहा था। इस प्रकार राम का दल पुल को पार करके लंकापुरी पहुंच गया।

एक रमणीक हरे-भरे स्थान पर, जहां मखमल के समान घास उगी हुई थी, सेना ने पड़ाव डाला। परन्तु यह तो एक माया-वन था। यहां न कोई पक्षी गीत गा सकता, न फल खा सकता था। दशकंठ ने भानुराज नामी राक्षस को आज्ञा दी थी कि "एक मायावी जंगल बनाओ और उसे अपने सिर पर उठाये रहो। जब राम की सेना उसपर पड़ाव डाले तब उसे जमीन में धंसा दो। परन्तु भानुराज में हनुमान जैसी बुद्धि न थी। हनुमान राक्षस की यह चाल समझ गये। वह भूमि के भीतर घुस गये और राक्षस को मार गिराया।

अब राम ने अंगद को दशकंठ के पास भेजा कि या तो वह सीता को वापस कर दे या लड़ाई करे। अनेक राक्षसों को मारकर अंगद दशकंठ के दरबार में पहुंचे। दशकंठ के दरबार में राम के दूत के लिए अंगद ने कोई स्थान न देखा तो उन्होंने अपनी पूंछ बढ़ा ली और उसीकी कुंडली बनाते-बनाते इतनी ऊंची गद्दी बनाई कि वह दशकंठ के मंच से भी ऊंची हो गई। उस गद्दी पर बैठकर अंगद ने राम का संदेश बड़ी तीव्र भाषा में कहना आरम्भ किया। दशकंठ को अंगद के कड़े शब्द सुनकर बड़ा क्रोध आया। उसने अपने चार

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
वीरों को आज्ञा दी कि वे अंगद को तुरन्त मार डालें। परन्तु अंगद ने सहज में ही उन चारों को मार गिराया और अपने दूत-कार्य की सूचना देने के लिए अपने पड़ाव पर लौट आये।

अब दशकंठ ने राम की सेना को मारने के लिए कोई माया रचने का स्वयं यत्न किया। ब्रह्मा ने उसको एक दिव्य छत्र दिया था। उसके खुलने से सूर्य छिप जाता और जगत-भर में अंधेरा हो जाता। उसने उस छत्र को खोल दिया। चारों ओर अंधेरा छा गया और राम तथा उनके दल को लंका दिखाई न पड़ी। परन्तु सुग्रीव उससे भी बली निकले। आकाश में जाकर उन्होंने छत्र तोड़ डाला। सूर्य की किरणें फिर निकल आईं और राक्षसों की राजधानी लंका फिर दिखाई पड़ने लगी। जब सुग्रीव आकाश से लौट रहे थे तो उन्होंने लंकापति के सिर से मुकुट छीन लिये और अपने महाराज राम के चरणों में लाकर रख दिये।

दशकंठ चिन्तित होकर अपने महलों में चला गया। अब उसको निश्चय हो गया कि लंका बचने की नहीं। यदि शत्रु को पराजित करना है, तो कोई और उपाय सोचना पड़ेगा।

: २७ :

राम का हरण

अपने महल में पड़े-पड़े दशकंठ को एक तरकीब सूझी। उसने मारीश के पुत्र वैयविक् को पाताल भेजा और सह-मालिवन के पुत्र अर्थात् महयप्म के पुत्र मैयराब को लंका

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुलाया। मैयराब पाताल में राज करता था। उससे सभी डरते थे। उसने अपने गुरु सुमेघ मुनि से युद्ध-विद्या के बहुत-से रहस्य सीखे थे। सुमेघ मैयराब से इतना खुश था कि उसने मैयराब के आत्मा को उसके शरीर से निकालकर भौंरे के रूप में त्रिकूट पर्वत पर छिपा दिया था। इससे मैय-राब लगभग अमर-सा हो गया था और उसको मृत्यु का भय न था। दशकंठ ने निराश होकर अमर मैयराब की शरण ली।

मैयराब के पास एक मायावी राख थी। उससे वह नींद बुला सकता था। वह इस राख को लेकर बन्दरों के पड़ाव में आया। बहुत सावधानी करने पर भी वह विभेक की आंखों से न बच सका। उसकी भावभंगी से स्पष्ट हो गया कि कोई विपत्ति आनेवाली है। उसने पहले से ही विपत्ति से बचने का उपाय सोच लिया। हनुमान ने ब्रह्मा के बराबर मुंह बड़ा कर लिया और राम को उसमें रख लिया। परन्तु मैयराब की माया के सामने उसकी कुछ न चली।

मैयराब बन्दर का रूप रखकर बन्दरों के दल में आया। वहां उसे मालूम हुआ कि विभेक ने पहले से ही उनको सचेत कर रक्खा है कि यह माया प्रातःकाल से पूर्व ही नष्ट हो जायगी।

मैयराब के पास माया की एक बांसुरी थी। वह सेनादल को छोड़कर पहाड़ पर चढ़ गया और बांसुरी उठाई। माया के जोर से आकाश एक स्थिर समुद्र जैसा दिखाई पड़ने लगा और प्रातःकाल का तारा चमकने लगा। बन्दरों ने हर्ष मनाते हुए सोचा कि रात बीत गई और उन्होंने निश्चिन्त होकर

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहरे को ढीला कर दिया।

अब मैयराव अपनी माया की राख को लेकर आया और बांसुरी बजाने लगा। धीरे-धीरे सब बन्दरों को नींद आ गई। सुग्रीव सोया पड़ा था। हनुमान मुंह बनाये निर्जीव-से दिखाई देते थे और सीता के प्राण-प्रिय राम बेहोश थे। सबोंको बेहोश देख मैयराव धीरे-धीरे आया और राम को उठाकर पाताल को ले चला।

जब बन्दर जागे तो उनको विपत्ति का पता लगा। परन्तु विभेक तो अपने दिव्य चक्षु से अदृश्य को भी देख रहा था। विभेक के बताये मार्ग से हनुमान दौड़े। वह एक तालाब पर पहुंचे, जिसमें बड़े-बड़े कमल खिल रहे थे। उन्होंने एक कमल का पत्ता तोड़ा और उसके डंठल में एक खोखला मार्ग दिखाई पड़ा। हनुमान उसमें होकर एक दीवार के पास पहुंचे जहां एक राक्षस पहरा दे रहा था। उन्होंने उसे एक लात मारी। राक्षस मर गया और दीवार टूट गई। हनुमान आगे बढ़े। वहां उनको एक मदमाता हाथी मिला। हनुमान ने उसको वहीं पछाड़ दिया।

हनुमान साहस कर आगे बढ़ते गये। वहां उनको एक पर्वत मिला, जिसपर आग की ज्वाला धधक रही थी। उन्होंने लातें मार-मारकर ही उस पर्वत की आग बुझा दी और फिर आगे चले। अब उनको मच्छर मिले, जो मुर्गी के बराबर बड़े थे। परन्तु जो हाथी और आग की ज्वालाओं से न डरा, वह इन बेचारे मच्छरों की कब परवा करता? हनुमान थके नहीं और आगे बढ़ते ही गये। रास्ते में एक दूसरा तालाब मिला, जिसमें कमल खिल रहे थे। यहां उनको

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक ऐसे व्यक्ति का सामना करना पड़ा जो उनकी जोड़ का था।

इस तालाब पर हनुमान के लड़के मच्छानु का पहरा था। जब स्वर्णमच्छा उसको समुद्र के तट पर छोड़कर चली गई थी तो मैयराब ने उसे अपने यहां पाला था। मच्छानु तालाब के किनारे पर टहल रहा था तो उसने देखा कि कोई अजनबी आ रहा है। उसने उसका सामना किया। पुत्र ने पिता से युद्ध किया और पिता को भी अपने ही अंग से उत्पन्न हुए व्यक्ति से लड़ना पड़ा।

युद्ध होता रहा, पर किसी की विजय न हुई। दोनों एक-दूसरे की वीरता को देखकर चकित रह गये और कुछ आशा दीख पड़ी कि शायद दोनों में मेल हो जाय। उन्होंने एक-दूसरे के विषय में पूछा और इस प्रकार बाप-बेटे का परिचय हो गया। अब तो जिन भुजाओं से युद्ध हो रहा था वे प्रेम में एक हो गईं।

हनुमान ने मच्छानु को बताया कि वह पाताल क्यों आया है। मच्छानु कृतघ्न न था। वह अपने पालनेवाले का भेद बता नहीं सकता था। परन्तु वह अपने असली पिता को भी निराश नहीं करना चाहता था। इसलिए उसने दुपल्ली बातें कहीं, 'अजी, मार्ग तो दीखता ही है, उसीपर क्यों नहीं चलते ?

हनुमान के लिए इतना काफी था। उसने एक कमल तोड़ा। उसके खोखले में एक मार्ग दिखाई पड़ा। उसी मार्ग से वह अन्त में पाताल लोक में जा पहुंचा। वहां उसे रोती हुई एक स्त्री की विलाप ध्वनि सुनाई पड़ी जो समस्त पाताल

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रदेश को गुंजा रही थी। यह मैयराब की बहन बीरवकन थी, जो अपने पुत्र के लिए शोक कर रही थी। उसको आज्ञा हुई थी कि वह एक कढ़ाई चढ़ाये और उसमें अपने पुत्र वैयविक् को राम के साथ भून डाले। परन्तु कोई माता ऐसी नहीं जो अपने हाथ से अपने पुत्र को ही मार दे। उसका हृदय विदीर्ण हो रहा था और वह रोने-पीटने लगी थी। परन्तु उसमें इतनी शक्ति न थी कि पाताल के राजा की बात न मानती। वह बिचारी रोती-पीटतीं अपने पुत्र को भूनने के लिए कढाई में पानी डालती जाती थी कि यकायक उसे चुपके से हनुमान आते हुए दिखाई पड़े। हनुमान ने मां को ढाढस दिया और कहा कि यदि तुम मुझे वहां ले चलो जहां राम को रक्खा गया है, तो मैं तुम्हारे पुत्र की जान बचा दूंगा।

यह काम बड़ा कठिन था क्योंकि मार्ग में बड़े-बड़े बली राक्षस पहरा दे रहे थे। वहां से गुजरने के पहले सबको एक तराजू में तुलना पड़ता था। वह तराजू ऐसी बारीक थी कि बाल बराबर भेद भी मालूम हो जाता था। जो उसके बोझ से तिल भर भी बढ़ती पाई जाय तो उसकी निश्चित मौत ही आ जाती। परन्तु हनुमान कोई बात सुननेवाले न थे। उन्होंने आग्रह किया कि किसी प्रकार उन्हें फाटक पर ले चले।

हनुमान ने एक बारीक कमल तन्तु का रूप धारण कर लिया और उसके वस्त्र में लग गये। परन्तु जब वह राक्षसी तराजू पर रक्खी गई तो तराजू टूट गई। उसी समय राक्षसों ने उसके मारने को तलवारें उठा लीं। परन्तु वह चिल्लाई कि इसमें उसका कोई दोष नहीं है। उसके पास कुछ नहीं

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। तराजू ही सड़ी थी, वह टूट गई, इसमें वह क्या करे ? उन्होंने उसकी तलाशी ली और एक कमल-तन्तु के सिवाय उसके पास कुछ न निकला। किसको पता था कि इसी कमल-तन्तु में नाश का सामान छिपा था। उन्होंने उसे जाने दिया।

इस प्रकार सुरक्षित निकल कर हनुमान वहां पहुंचे जहां ताड़ के वृक्षों में एक लोहे का पिंजड़ा रखा हुआ था। वहां राम पड़े सोरहे थे। उनको इस विपत्ति का पता तक न था। राम-भक्त हनुमान ने उनको धीरे से उठाया और सुरक्षित स्थान पर रख दिया। अब वह विपत्ति के मूल कारण मैयराब की तलाश में चले।

मैयराब मिल गया और उन दोनों में इतना घोर युद्ध हुआ कि सारा पाताल लोक हिल गया। हनुमान ताड़ के वृक्ष उठा-उठा कर मारते पर राक्षस पर उसका कोई भी प्रभाव न होता था। उस समय वीरक्कन ने स्मरण दिलाया कि मैयराब को एक वरदान है। यह सुनते ही हनुमान ने अपना शरीर बढ़ाया और अपना हाथ त्रिकूट तक फैलाया और मैयराब की आत्मा को जो भौंरे के रूप में छिपा था पकड़कर कुचल डाला। ज्यों ही भौंरा मरा मैयराब भी प्राणहीन होकर गिर पड़ा और लंकेश के दुष्ट मित्र का नाश हो गया।

तब हनुमान ने वैयविक को पाताल की गद्दी दी और मच्छानु को उसका युवराज बनाया।

अब हनुमान राम को लेकर बन्दरों की छावनी में आ गये। सबको बड़ी खुशी हुई। परन्तु राक्षसों को इस घटना से जो दुख हुआ उसका वर्णन नहीं हो सकता।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: २८ :

कुम्भकरण की मृत्यु

जब मैयराब की मृत्यु का समाचार मालूम हुआ तो सोने की लंका की गद्दी पर बैठा हुआ दशकंठ एक बार तो कांप गया।

"अरे! शत्रु इतना प्रबल है कि अमर और अजेय मैयराब भी उसके हाथ से नहीं बच सका। परन्तु अभी उसका भाई कुम्भकरण भी तो शेष है, जिसको जीतना किसीके भी वस में नहीं है।"

अतः उसने कुम्भकरण से कहा कि मैयराब का बदला लेने के लिए वह राम से युद्ध करे। परन्तु इस राक्षस के मन में न्याय के लिए श्रद्धा थी। वह यह नहीं चाहता था कि सीता न लौटाई जाय और राम से उसके लिए युद्ध किया जाय। उसे जो ठीक मालूम हुआ वह उसने स्पष्ट कह दिया। परन्तु दशकंठ को तो इससे और क्रोध हुआ और वह उसपर तीव्र शब्दों में दोष लगाने लगा।

"अरे! तू राम से ऐसा डरता है, जैसे सिंह की गंध से हिरण। अरे, क्या तू बच्चा है, जो तीर की आकृति देखकर डर गया। अभी तो शत्रु की पताका भी नहीं दीख पड़ी, और अभी से कांपने लगा?"

दशकंठ ने कुम्भकरण को इस प्रकार भल-बुरा कहा। लेकिन उसके लड़ाई न करने का तो कारण एक ही था। उसे

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्याय प्रिय न था।

इस अपमान को असह्य समझकर कुम्भकरण ने अन्त में शस्त्र उठा लिये और अपने भाई की सहायता करने को निकल पड़ा।

विभेक ने दूर से देखा कि उसका भाई कुम्भकरण सेना लिये आ रहा है। विभेक हाथ जोड़कर आगे बढ़ा। उसे आशा थी कि कुम्भकरण भाई के प्रेम से न्याय-प्रेम को अधिक मूल्य देगा, परन्तु न्याय-प्रिय होकर भी वह अपने राजा और देश से मुंह नहीं मोड़ सकता था। उसने विभेक को झिड़का और कहा कि, "राम की सहायता करने के लिए तुम्हारे पास इससे अधिक और कोई बहाना नहीं है कि राम नारायण के अवतार हैं।"

यह कह कुम्भकरण ताली बजाकर जोर से हँसा। वह बोला, "क्या राम सचमुच नारायण के अवतार हैं ? यह मैं तो तभी मानूंगा जब राम मेरे एक प्रश्न का समाधान कर दें—'मूर्ख साधु कौन ? सीधे दांतवाला हाथी कौन ? चालाक स्त्री कौन ? और दुष्ट मनुष्य कौन ?"

राम और उनके साथियों ने बहुत बुद्धि लगाई, पर किसीको उसका उत्तर न सूझा। तब अंगद से कहा गया कि वह जाय और कुम्भकरण को फुसलाकर उससे उत्तर ले आये। परन्तु कुम्भकरण अंगद की बातों में आनेवाला न था। अंगद ने कहा कि राम को तो उत्तर मालूम है। वह केवल सही उत्तर से मिलाना चाहते हैं। अत: बता दो कि तुम्हारा क्या आशय है ? कुम्भकरण ने राम की खिल्ली उड़ाई और अभिमान से कह उठा—"मूर्ख आदमी तो स्वयं राम हैं कि जो सीता को

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जंगल में छोड़कर चले गये। सीधे दांतवाला हाथी दशकंठ है, जो अपनी स्त्री से सन्तुष्ट न होकर दूसरे की स्त्री पर दृष्टि डालता है। चालाक स्त्री सम्मनखा है और दुष्ट मनुष्य विभेक है, जो अपने देश और नरेश का विरोधी है।"

अब सुग्रीव की कुम्भकरण से लड़ाई शुरू हो गई। कुम्भकरण सुग्रीव के बल को जानता था। उसने एक उपाय सोचा, जिससे सुग्रीव का बल पहले मन्द पड़ जाय। वह सुग्रीव के बल का मजाक उड़ाने लगा।

"क्या सचमुच तुम इतने ही बली हो जैसाकि लोग कहते हैं ?" सुग्रीव में बुद्धि की अपेक्षा बल अधिक था। वह तुरन्त पर्वत पर दौड़ गया और एक विशाल वृक्ष को उखाड़कर ले आया। दोनों में युद्ध होने लगा। परन्तु सुग्रीव तो पहले ही थक चुका था। अतः कुम्भकरण ने सुग्रीव को अपनी बगल में दबाया और लंका को चला।

हनुमान ने कपीश की दशा देखी तो उसकी सहायता को दौड़ पड़े। कुम्भकरण हनुमान का सामना न कर सका। उसे सुग्रीव को वहीं छोड़कर लंका को भाग जाना पड़ा। हनुमान ने कुम्भकरण के नाक-कान नोंच लिये और उनसे रुधिर बहने लगा।

जीतते-जीतते पराजित होना कुम्भकरण को बुरा लगा। उसने ठान लिया कि अपने यश की रक्षा करनी ही चाहिए। उसके पास एक अस्त्र था, जिसका नाम था 'मोक्खशक्ति'। इसका प्रभाव ऐसा था कि इससे शत्रु बच नहीं सकता था। परन्तु इस अस्त्र को चलाने से पूर्व उसको देवों की आराधना करनी आवश्यक थी। इसलिए एक शुभ मुहूर्त में वह नदी के

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किनारे गया और आवश्यक अनुष्ठान करने लगा। शीघ्र ही हवन की सुगन्ध वायु में फैल गई और फूल खिल गये। अस्त्र सामने रखा था और कुम्भकरण समाधि लगाये ध्यान में बैठा था।

यकायक कुम्भकरण की आंख खुली और उसे कुछ घबराहट महसूस हुई। नदी की ओर से एक दुर्गन्ध-सी आ रही थी, जो उसके यज्ञ की सुगन्धि को दूषित कर रही थी। उसे शुद्धि प्रिय थी, अतः वह दुर्गन्ध से घबरा गया। वह उठा और दुर्गन्ध का कारण खोजने लगा। उसने देखा कि मरे कुत्ते की लाश नदी के ऊपर तैर रही है। उसपर कौवा बैठा चोंच से मांस नोच-नोचकर खा रहा है। इस दुर्गन्ध से कुम्भकरण को घबराहट हो रही थी।

परन्तु यह सब माया थी। विभेक ने अपने शीशे में देखा तो उसको पता चल गया कि कुम्भकरण राम के दल को नष्ट करने के उपाय सोच रहा है। उसमें इनको बाधा डालनी थी। अतः हनुमान तो मरा कुत्ता बन गये और अंगद कौआ बनकर उसको नोचने लगे। इस प्रकार कुम्भकरण की समाधि टूट गई और कुम्भकरण को अस्त्र के महत्व का लाभ न मिल सका।

परन्तु इससे कुम्भकरण निराश नहीं हुआ। दूसरे दिन प्रातःकाल कुम्भकरण अपनी मोक्खशक्ति को लेकर शत्रुदल पर टूट पड़ा। लक्ष्मण ने सामना किया तो मोक्खशक्ति झट से उसके शरीर में घुस गई और समुद्रजा-नन्दन लक्ष्मण का रुधिर चूसने लगी। लक्ष्मण बेहोश होकर गिर पड़े और राम का बना-बनाया दुर्ग ढह गया। बन्दरों की सेना में निराशा

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छा गई।

परन्तु विभेक ने फिर गई आशा को पुनर्जीवित करने का उपाय निकाल लिया। उसने हनुमान को 'सर्वय' पर्वत पर भेजा कि लक्ष्मण को जिलाने के लिए अमर बूटी ले आओ, परन्तु शर्त यह थी कि सूर्य निकलने से पहले औषध आ जाय। सूर्य निकलते ही बूटी का प्रभाव नष्ट हो जायगा।

हनुमान वायु वेग से आकाश में उड़ गये। यकायक उनके श्वेत अंग पर लाली छा गई। उनको पता चला कि सूर्योदय होनेवाला ही है और सूर्य देव अपने रथ पर चढ़े आ रहे हैं। दिन निकलते ही सब आशाओं पर पानी फिर जायगा। वह सूर्य के रथ को रोकने के लिए आगे बढ़े, परन्तु सूर्य के ताप से झुलस गये। क्षण-भर में ही सूर्य को यह भेद मालूम हो गया। वह पछताने लगे कि मैंने राम के दूत को क्षति पहुंचा दी। सूर्य ने हनुमान के शरीर को स्वस्थ कर दिया। हनुमान ने प्रार्थना की कि "महाराज, थोड़ी देर अपनी गति को रोक दीजिये। परंतु मानवी दुःख या घृणा सृष्टि के नियम को रोक नहीं सकती। परन्तु सूर्य ने इतना मान लिया कि मैं चलता तो रहूंगा, परन्तु बादलों की आड़ में, जिससे संसार को दिन का पता ही न लगे।

हनुमान सन्तुष्ट होकर आगे बढ़े और शीघ्र सर्वय पर्वत पर पहुंचे। वहां वह बूटी को आवाज देने लगे। शीघ्र ही उत्तर आया 'मैं यह हूं।' जब हनुमान नीचे उतरे तो ऊपर से आवाज आई 'मैं यहां हूं।' इस प्रकार हनुमान हैरान हो गये। पता न चला कि बूटी कहां है। कभी नीचे से आवाज आती, तो कभी ऊपर से। यह देख हनुमान ने अपना शरीर

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतना बढ़ाया कि सारा पर्वत उन्होंने अपनी पूंछ में लपेट लिया। अब जिधर से आवाज आती उधर से ही बूटी को वे उखाड़ लेते। इस प्रकार अन्त में बूटी मिल गई। परन्तु अभी एक कसर और रह गई थी। पांच नदियों का जल, जो अयोध्या में भरत के अधिकार में था, लाना था। हनुमान हारना तो जानते ही न थे। तुरन्त अयोध्या को दौड़ गये और वह जल भी ले आये। बूटी आई। लक्ष्मण, राम और उनकी सेना में हर्ष का पारावार न रहा।

बन्दरों की हर्ष-ध्वनि कुंभकरण के कानों में पड़ी तो वह बदला लेने के लिए और सुदृढ़ हो गया। अब उसने निश्चय कर लिया कि सबको मार ही डालूंगा। न कोई बचेगा न उपाय कर सकेगा। अतः उसने अपना शरीर ब्रह्मा के बराबर बढ़ा लिया और पहाड़ की जिस नदी से सेना पीने का पानी लेती थी उसे रोक दिया।

सात दिन तक वह उसे रोके रहा। पानी की बूंद न रही। बन्दर प्यास के मारे मरने लगे। विभेक जानता था कि कुंभकरण की ही यह करतूत है। परन्तु उसे पता न था कि वह है कहां? स्थान का पता उसकी फूलदासियों को ही था। विभेक की सूचना पर हनुमान चील बनकर बाग में उड़ गये और एक फूलदासी को मार डाला और उसका रूप धारण कर लिया। अन्य पुष्प दासियों से मिलकर वह वहां पहुंचे जहां कुंभकरण पानी रोके पड़ा था। वहां पहुंचकर हनुमान अपने असली रूप में आ गये और कुंभकरण को ऐसी लात मारी कि वह एकदम खड़ा हो गया। पानी बहने लगा और मृत्यु टल गई। युद्ध में कुंभकरण हनुमान का सामना न कर

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सका और भाग खड़ा हुआ।

दूसरे दिन उसने फिर अपने अस्त्रों से बन्दरों की सेना पर आक्रमण किया। आज राम ने उसका सामना किया और नारायण के ब्रह्मास्त्र ने राक्षस का रुधिर चूसना आरंभ किया और अंत में वह मर गया। मरते समय कुंभकरण ने देखा कि साक्षात नारायण चारों हाथों में शंख, चक्र, गदा और त्रिशूल लिये खड़े हैं और उन्होंने पश्चात्ताप-शील राक्षस के लिए स्वर्ग का द्वार खोल दिया है।

: २९ :

लक्ष्मण और इन्द्रजित का युद्ध

कुंभकरण की मृत्यु के पश्चात युद्ध का भार दशकंठ के वीरपुत्र इन्द्रजित को सौंपा गया। यह मण्डो का पुत्र था। इसका पहला नाम रणवन्ना था। उसके पास तीन महा अस्त्र थे। ईश्वर से उसे ब्रह्मपाश मिला था, ब्रह्मा से नागपाश और विष्णु से विष्णुयनं। इन तीन महाअस्त्रों के बल से इसने देवों के देव इन्द्र को भी हराकर उसे अयशी बना दिया था और तब से लोग इसे इन्द्रजित कहने लगे थे। इसका रथ सिंह चलाते थे। राम-सेना को अब ऐसे महाबली से पाला पड़ा।

लक्ष्मण उसके साथ लड़ने आगे बढ़े। यह देख इन्द्रजित हँसा।

"अरे, सिंह से हिरण लड़ने आ रहा है! अरे भाई! तुम राम को क्यों नहीं आगे करते?"

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परन्तु राम के सामने तो इन्द्रजित की वही दशा थी, जो सूर्य के समक्ष जुगनू की। क्या वह राम का सामना कर सकेगा ? परन्तु इन्द्रजित राम के साथ लड़ने आ ही गया। एक बार तो उसके बाण ने चारों ओर मौत का शोर मचा दिया। जैसे आंधी में पीले पत्ते गिर जाते हैं उसी प्रकार इन्द्रजित के तीरों के सामने लड़ते हुए बन्दर एक-एक करके गिरने लगे। यह देख लक्ष्मण आगे बढ़े और उन्होंने चढ़ते हुए तूफान में कुछ रोक-थाम की। दोनों योद्धाओं में लड़ाई होती रही। उनके तीर कभी अग्नि और कभी पानी बरसाते रहे। लड़ते-लड़ते वे दोनों थक गये। विजय किसीको भी न मिली।

अपने सारे जीवन में इन्द्रजित के लिए यह पहला अवसर था जब वह विजयी होकर न लौटा हो। उसने घर आकर निश्चय किया कि उसे कुम्भनीय यज्ञ करना चाहिए। तभी उसके तीरों में जो अभिगुप्त शक्तियां हैं वे जाग्रत हो सकेंगी। अतः वह आकाश-गिरि पर्वत को चला गया और वहां यज्ञ करने लगा।

परन्तु एक कठिनाई थी। इन्द्रजित को लंका से अनुपस्थित जानकर बन्दर लंका पर चढ़ाई कर सकते थे। अतः दशकंठ ने खर के पुत्र मंकरकंठ को बुलाया और उसे आज्ञा दी कि वह शत्रु से लड़कर उसकी प्रगति को रोकता रहे। परन्तु मंकरकंठ को लड़ने भेजने का अर्थ था उसे मौत के मुंह में दे देना। वह तो पिछले जन्म में दर्वी था। और उसके लिए भविष्यवाणी थी कि वह राम के हाथ से मारा जायगा। राक्षस बहुत वीरता से लड़ा और एक बार तो राम के दल में उसने खलबली मचा दी। अनेक रूप धारण करके उसने सारा

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आकाश घेर लिया और राम के दल पर आग बरसाता रहा। परन्तु राम के ब्रह्मास्त्र ने उसे भी मार गिराया और वह जीवन के झंझट तथा अभिशाप दोनों से मुक्त हो गया।

अब राम के दल में यह चर्चा होने लगी कि इन्द्रजित कहां है? वह क्यों नहीं आता? विभेक जानता था कि वह कहां है और क्या कर रहा है? उसने राम को बता दिया कि इन्द्रजित के यज्ञ में कैसे बाधा डाली जाय। जिस वृक्ष के नीचे इन्द्रजित यज्ञ कर रहा है, उसे यदि कोई रीछ जाकर तोड़ दे तो यज्ञ भंग हो जाय। जम्बूवान् ने यह काम अपने ऊपर लिया और रींछ का रूप धारण करके निर्दिष्ट स्थान पर पहुंच गया।

उस समय इन्द्रजित ध्यान में मग्न था। उसके मंत्रों के प्रभाव से संसार-भर के सर्प इकट्ठे हो गये और वे नागपाश को घोर विषैला बनाने के लिए अपना-अपना विष प्रदान करने लगे। इतने में वृक्ष टूटकर आ गिरा। सर्पों ने समझा कि गरुड़ आ गया। इसलिए वे जल्दी से भूमि में समा गये। जम्बुवान झट आकाश में उड़कर अपने स्थान पर वापस आ गया। इन्द्रजित को इतना समय न मिला कि वह जम्बुवान का मार्ग रोक सकता।

इस विघ्न के होने पर भी इन्द्रजित अपने शक्ति प्रसुप्त वाणों को लेकर युद्ध के लिए चल पड़ा।

जब वह मार्ग में आ रहा था तो उसके साथ विरुणमुख की छोटी-सी सेना भी मिल गई। इस प्रकार अपार शक्ति से सम्पन्न होकर उसने राम की सेना पर चढ़ाई कर दी।

परन्तु लक्ष्मण के सामने राक्षस इस प्रकार मरने लगे

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैसे शेर के सामने हिरण मरते हैं। घोर युद्ध हुआ। किसी की जीत निश्चित न थी। उस समय इन्द्रजित ने विरुणमुख को परामर्श दिया कि वह इन्द्रजित का रूप धारण करके उसकी सेना को लेकर लड़ाई करता रहे और वह आकाश में जाकर नागपाश को छोड़ दें। लक्ष्मण को इसका पता न लग पाये कि इन्द्रजित कहां है। शीघ्र ही इस सूचना के अनुसार विरुण-मुख की सेना राम-सेना की ओर बढ़ी। असली इन्द्रजित को अवसर मिल गया और उसने आकाश में से जाकर वहां से नागपाश छोड़ दी। तुरन्त ही नागपाश में से सैकड़ों सर्प निकल पड़े और राम की वानर-सेना पर विष छोड़ने लगे। सांपों की लपेट में आकर वानर और लक्ष्मण दोनों बेहोश हो गये। इन्द्रजित विजय दुंदुभी बजाता हुआ घर लौट आया। वन्दर और लक्ष्मण वहीं रणक्षेत्र में पड़े रहे।

अब राम उस स्थल पर पहुंचे जहां लक्ष्मण और उनके प्राणशून्य वन्दर पड़े हुए थे। विभेक की प्रेरणा पर राम ने अपना बलैवत् तीर आकाश में छोड़ा। फलस्वरूप गरुड आ गये और सर्पों का सफाया करने लगे। लक्ष्मण और उसके साथी वन्दर ऐसे उठ खड़े हुए मानों वह सो रहे थे।

इन्द्रजित को बड़ा आश्चर्य हुआ। यह कैसे शत्रु हैं जो मृत्यु के द्वार से भी लौट आते हैं। अच्छा, अब मैं इनको मौत के जबड़ों में ही रख दूंगा। वहां से तो आज तक कोई नहीं लौटा है। यह कह वह समुद्र के तट पर गया और ईश्वर की आराधना करने लगा कि "भगवन् मेरे अस्त्र की प्रसुप्त शक्तियों को जागृत कर दो।"

परन्तु उसकी आराधना निष्फल हो गई, क्योंकि हनुमान

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने इसी बीच में कंपन को मार डाला और दशकंठ ने कम्पन की मृत्यु की सूचना इन्द्रजित को दे दी। यज्ञ के बीच में यदि कोई अशुभ सूचना मिल जाय तो यज्ञ खंडित हो जाता है। इस प्रकार इन्द्रजित का यज्ञ भी खंडित हो गया।

अब एक ही उपाय शेष था। वह यह कि एक काली गाय की बलि दी जाय। इन्द्रजित ने ऐसा ही किया और पाश की सुप्त शक्तियां जाग उठीं।

इस प्रकार अजेय ब्रह्मास्त्र को लेकर इन्द्रजित ने शत्रु पर आक्रमण किया। माया के बल से इन्द्रजित इन्द्र बन गया और समस्त देवगण अपने प्रकाशमय स्वरूपों के साथ उसके चारों ओर इकट्ठे हो गये। रणक्षेत्र क्षण-भर में स्वर्ग का दृश्य दिखाने लगा। लक्ष्मण जो वानर-सेना के सेनाध्यक्ष का कार्य कर रहे थे, क्षणभर के लिए भूल गये कि वह रणक्षेत्र में हैं और स्वर्ग में नहीं हैं।

इन्द्रजित ने भ्रम-ग्रस्त लक्ष्मण पर अपना ब्रह्मास्त्र छोड़ दिया और समस्त सेना धराशायी हो गई। परन्तु हनुमान अभी जीवित थे। उन्होंने देख लिया था कि अस्त्र किसने छोड़ा है। उसने आकाश में छलांग मारी और नकली इन्द्र के नकली ऐरावत की गर्दन तोड़ दी। परन्तु इन्द्रजित ने हनुमान को ऐसा घूंसा मारा कि वह भूमि पर गिर पड़े और इन्द्रजित अपनी विजय का डंका बजाता हुआ घर वापस आ गया।

राम को खबर लगी तो वह झट घटना-स्थल पर पहुंचे। वहां सबोंको मरा हुआ देखते ही वह पछाड़ खाकर ऐसे गिर पड़े जैसे कोई वृक्ष जड़ से उखड़कर गिर पड़ता है।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: ३० :

इन्द्रजित का अन्त

राम अपने प्यारे भाई लक्ष्मण की लाश के पास मूर्च्छित पड़े थे और उनके चारों ओर बन्दरों की लाशों के ढेर लगे थे। वही रणक्षेत्र, जो अबतक उनके विलक्षण पराक्रमों की क्रीड़ास्थली था, आज उन्हींके शवों से श्मशान बना हुआ था।

लंका के राजा के पास जब विजय की यह सूचना पहुंची तो उसकी बीसों आंखे हर्ष के मारे प्रकाशित हो उठीं। उसने सीता के पास संदेश भेजा। सीता एकान्त में बैठी हुई अपने पति की विजय के लिए अपने इष्ट देवों से प्रार्थना कर रही थी। राक्षस के मुख से जो अनिष्ट समाचार सुने तो सीता के ऊपर वज्र-सा गिरा। "तुम्हारे पति का अन्त हो चुका। बन्दर-सेना नष्ट हो चुकी। अब क्या शेष रहा? यह बात तो निश्चित रूप से ठीक है। पर तुम चाहो तो यह अपनी आंख से देख लो।"

त्रिजटा को साथ लेकर सीता पुष्पक विमान पर चढ़कर घटना-स्थली पर पहुंची। ज्योंही उसकी दृष्टि उस भयानक दृश्य पर पड़ी उसकी अन्तिम आशा का भी खून हो गया। "हाय! राम तो मरे पड़े हैं। अब प्यारे शब्द कहकर कौन मुझे ढाढ़स देगा? मेरे आंसुओं का पोंछनेवाला अब कोई नहीं है। इसमें संशय ही क्या है?" अयोध्या-नरेश राम की लाश रणक्षेत्र में पड़ी थी। सीता की आंखों से आंसुओं की

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
धारा बहने लगी और उसका हृदय टुकड़-टुकड़ हो गया।

इस समय त्रिजटा ने कुछ आशा दिलाई। ध्यान से देखो तो सही, राम मरे पड़े हैं या मूच्छित हैं। इसकी सबसे बड़ी पहचान तो पुष्पक विमान ही था। क्योंकि पुष्पक विमान किसी विधवा को लेकर आकाश में उड़ नहीं सकता। यदि राम मर गये होते तो तुम विधवा हो गई होतीं और विधवा को लेकर पुष्पक उड़ता कैसे? माण्डो ने इस बात की एक बार परीक्षा की थी। अब फिर इसकी जांच हो सकती है। सीता पुष्पक में बैठ गई और विमान तुरन्त उसको लेकर आकाश में चढ़ गया और थोड़ी देर में सीता को उसकी कुटिया में पहुंचा दिया। इससे उसने जान लिया कि राम मरे नहीं, मूर्च्छित हैं। किसी-न-किसी दिन विजयी होकर उसका दुःख दूर करेंगे।

इस समय विभेक सेना को रसद पहुंचाने के लिए किसी दूसरे स्थान को गये थे। वह लौटे तो उन्होंने सेना की यह दुर्गति देखी। परन्तु इससे वह निराश नहीं हुए। वह जानते थे कि हनुमान को तो ईश्वर की ओर से अमर होने का वर-दान है। वह कैसे मर सकते हैं। उन्होंने एक मंत्र पढ़कर हनुमान के शरीर की ओर एक फूंक मारी। हनुमान ने आंखें खोल दीं और मन्द दृष्टि से इधर-उधर देखने लगे। तुरन्त ही उनको परिस्थिति का पता लग गया और वह उठ खड़े हुए।

रात का समय था। संतप्त भूमि को ओस की बूंदें शीतल कर रही थीं। पड़ी हुई लाशों पर इन बूंदों का ऐसा प्रभाव हुआ मानों अमृत की वर्षा हो रही हो। एक-एक करके राम

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के सैनिक उठने लगे। मानों ओस की बूंदों में दैवी शक्ति आ गई। परन्तु अभी लक्ष्मण और अन्य सैनिक, जो ब्रह्मपाश से आहत हुए थे, उसी प्रकार पड़े हुए थे। ब्रह्मास्त्र से हुए व्रणों के ठीक होने का एक ही इलाज था कि पूर्व विदेह देश के आबुद्ध पर्वत की बूटियों का रस निकालकर इन घावों पर लगाया जाय। इन बूटियों को केवल जम्बुवान् जानता था, क्योंकि जब वह ईश्वर की सेवा किया करता था, उस समय उसका इन बूटियों से परिचय हुआ था। परन्तु बूटी के ऊपर एक चक्र था, जो घूमता रहता था। यदि कोई उस बूटी को लेने का यत्न करता तो चक्र उसको मार देता था। केवल हनुमान ही इसको ला सकते थे। हनुमान झट दौड़े गये और पर्वत पर जा पहुंचे।

थोड़ी ही देर में क्या देखते हैं कि चांद छिप गया और आकाश में अंधेरा हो गया। लोगों ने देखा कि पूरा पहाड़-का-पहाड़ उठाये हनुमान चले आ रहे हैं। अब एक और कठिनाई उपस्थित हुई कि यह पहाड़ रक्खा कहां जाय? लंका तो एक जंगमद्वीप था, उसपर यह पवित्र पर्वत टिकाया नहीं जा सकता था। अतः इसे उत्तर दिशा में टिकाया गया। इसकी बूटियों से जो सुगन्ध उठनी आरंभ हुई और रण-क्षेत्र पर पड़ी लाशों के ऊपर बहने लगी तो वानरों को ब्रह्मास्त्र द्वारा की हुई मूर्छा हटने लगी और शीघ्र ही सारी मृत सेना जीवित होकर उठ खड़ी हुई। लक्ष्मण और उनके सब साथी, जिनको ब्रह्मास्त्र व्याप्त हुआ था, जी उठे।

जब यहां भी उसे असफलता मिली तो इन्द्रजित ने विचार किया कि राम को लंका से भगाने का कोई और

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपाय सोचना चाहिए। राम ने लंका पर चढ़ाई तो सीता के लिए ही की थी। यदि सीता का ही अन्त कर दिया जाय तो युद्ध का भी अन्त हो जायगा। परन्तु दशकंठ यह नहीं चाहता था कि सीता मारी जाय। इसलिए एक नकली सीता बनाई गई। शुक्रसर ने अपने कर्त्तव्य का पालन नहीं किया था। अतः उसे प्राणदंड का हुक्म हो चुका था। इन्द्रजित ने एक नई तरकीब सोची। उसके सुझाव पर दशकंठ ने शुक्रसर को आदेश दिया कि वह सीता का रूप धारण करके इन्द्रजित के साथ उसके रथ में बैठ जाय। इस प्रकार नकली सीता को लेकर इन्द्रजित रणक्षेत्र में पहुंचा और लक्ष्मण का और उसका सामना हुआ।

परन्तु लक्ष्मण का तीर तो उसके धनुष में ही अटका रह गया। सीता के ऊपर जो लक्ष्मण की दृष्टि पड़ी और उनकी दुखित आकृति जो देखी तो लक्ष्मण के तो होश उड़ गये। इन्द्रजित ने जब उन्हें युद्ध के लिए ललकारा तब उन्हें होश आया। इन्द्रजित ने कहा, "अरे लक्ष्मण, आगे आ और सीता को ले जा। भले आदमी अब तो लंका का पिंड छोड़!" लक्ष्मण ने सहर्ष इस बात को स्वीकार कर लिया। परन्तु इन्द्रजित तो स्वयं सीता को शत्रु के हवाले करके अपने यश को बट्टा नहीं लगाना चाहता था। अतः उसने झट से नकली सीता का सिर तलवार से काटकर लक्ष्मण की ओर फेंक दिया। यह देख लक्ष्मण सुन्न रह गया। अब इन्द्रजित ने एक और दहाड़ भरी—"अरे, अभी क्या है? अभी तो मैं तुम्हारी राजधानी अयोध्या पर चढ़ाई करूंगा और तुम्हारे समस्त देश को तहस-नहस कर दूंगा।" इस प्रकार अपनी विजय पताका

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फहराता हुआ वह अपने स्थान को लौट गया।

परन्तु यह विजय तो कल्पना-मात्र थी। विभेक जानता था कि यह तो शुक्रसर का सिर है। असली सीता तो जीवित हैं और वह दशकंठ के बाग में क़ैद हैं। विभेक को यह भी निश्चय था कि इन्द्रजित अयोध्या पर चढ़ाई नहीं करेगा, क्योंकि उसे तो कुम्भनीय यज्ञ करना है, जिससे उसके दिव्य अस्त्रों में बल आ जाय, और उसके और उसकी सेना के कभी पराजित हो सकने का प्रसंग ही न उठ सके।

विभेक लक्ष्मण को उस स्थान पर ले गये जहां इन्द्रजित अपनेको सुरक्षित समझकर यज्ञ कर रहा था। एकाएक विघ्न पड़ता देखकर राक्षस इन्द्रजित उठ खड़ा हुआ और विघ्नकारियों को इधर-उधर खोजने लगा। परन्तु आज विजय देवी तो उसके अनुकूल न थी। उसके जी में पीड़ा होने लगी कि यदि आज उसकी मृत्यु हो गई तो उसके मां-बाप को कौन सान्त्वना देगा। उसने चाहा कि एक बार उनके दर्शन तो कर आये। अतः उसने माया से अन्धकार उत्पन्न कर दिया और अपने पिता दशकंठ तथा अपनी माता मण्डो के दर्शनार्थ चल पड़ा।

इस समय लक्ष्मण को अपनी विजय की इतनी आशा हो गई कि उन्होंने इन्द्रजित् का सिर काटने का पक्का इरादा कर लिया था। परन्तु ब्रह्मा की ओर से इन्द्रजित को एक वरदान था कि जिस दिन भूमि पर इन्द्रजित का सिर गिरेगा उसी दिन प्रलय की आग प्रज्वलित हो जायगी और समस्त संसार उसमें जल जायगा। इसलिए अंगद स्वर्गलोक को उड़ गये और वहां से ब्रह्मा का एक पात्र उठा लाये, जिससे इन्द्र-

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जित् का सिर भूमि पर न गिरने पावे। ज्योंही वह लौटे लक्ष्मण ने अपना ब्रह्मास्त्र छोड़ दिया और इन्द्रजित का सिर कटकर ब्रह्मा के पात्र में गिर पड़ा। अब राम ने एक ऐसा बाण छोड़ा कि उसमें से अग्नि उत्पन्न हुई और उसने इन्द्रजित् के सिर को जलाकर राख कर दिया। जगत् भस्म होने से बच गया। इन्द्रजित का सिर-रहित धड़ रणक्षेत्र में गिर पड़ा और वानर-सेना के हृदय में विजय की नई उमंगे उत्पन्न हो गईं।

: ३१ :

युद्ध-भूमि में दशकंठ और उसके मित्र

जब दशकंठ ने अपने पुत्र की मृत्यु का हाल सुना तो उसके हृदय में तीर-सा चुभ गया। 'मेरी यह कैसी दुर्गति हुई! लेकिन इस सबका मूल कारण तो सीता ही है! क्या यह उचित न होगा कि उसका ही अन्त कर दिया जाय। क्योंकि उसीने मेरे पुत्र की मृत्यु कराई है।' यह सोच वह सीता की कुटिया की ओर लपका, वह सीता को खत्म करने ही वाला था कि पौवनासुर ने उसे रोक दिया।

"अरे यह क्या करते हो? ऐसा करना तो नामर्दी है! क्या इससे तुम्हारा पुत्र जी उठेगा? अगर उसका बदला लेना है तो राम से जाकर लड़ो।"

इस तरह दशकंठ लड़ाई के मैदान में उतरा। उसके साथ उसके दस सेनाध्यक्ष और दस पुत्र भी थे, जिन्होंने पहले वायु, अग्नि, सूर्य और इन्द्र को पराजित कर दिया था। परन्तु

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वानर-सेना में भी वायु-पुत्र हनुमान, अग्नि-पुत्र नीलनन्द, सूर्य-पुत्र सुग्रीव और इन्द्र का पौत्र अंगद विद्यमान थे। यह मजे की बात थी कि जिन्होंने युद्ध में देवों को हरा दिया था, उनकी मृत्यु उन देवों की सन्तान के ही हाथों हुई।

दशकंठ दस भुजाओं से आक्रमण करता था और दस भुजाओं से दूसरों के आक्रमण को रोकता था। फिर भी उस की विजय न हुई !

वह लौट आया। न तो विजयी होकर, न हारकर। अब उसने अपने मित्र पंगताल के राजा मूलबलम को बुलाया। मूलबलम अपने बड़े भाई सहस्सतेज के साथ आया। सहस्सतेज एक राक्षस था, जिसको ईश्वर ने वरदान में एक सहस्र सिर और दो सहस्र भुजाएं दी थीं। उसका बल इतना अधिक था कि कोई भी शत्रु उसके सम्मुख टिक ही नहीं सकता था। इसके अतिरिक्त उसके पास एक ऐसी गदा थी, जिसके ऊपरी नुकीले सिरे से मृत्यु अवश्यम्भावी थी और निचले सिरे से मृत पुरुष जी उठता था।

बड़े उत्साह और अभिमान से दोनों भाई रणस्थली में आये। सहस्सतेज को देखते ही बन्दर ऐसे भागे जैसे भेड़िये के सामने से भेड़ें। परन्तु लक्ष्मण के तेज तीरों ने मूलबलम को ढेर कर दिया और हनुमान की बुद्धिमत्ता ने सहस्सतेज की प्रगति रोक दी। पवन-पुत्र ने चाहा कि उसका गदा छीन लें। अतः एक छोटे बन्दर का रूप धारण करके वह उसके रथ के आगे आगये। क्रोध के जोश में राक्षस ने अपना रथ रोका और बन्दर को उठा लिया। बन्दर ने कहा, "मैं बाली का सेवक हूं और अपने मालिक का बदला लेने आया हूं।"

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
राक्षस ने विश्वास करके उसे अपना मित्र बना लिया। उसकी खुशामदभरी मीठी-मीठी बातों में आकर उसने अपनी गदा दे दी और कहा कि जाकर इससे अपने स्वामी का बदला लो। गदा को पाते ही हनुमान ने अपना विकराल रूप धारण कर लिया और अपनी लम्बी पूछ से राक्षस को लपेटकर उसका हजार मुखवाला सिर काटकर राम के सामने रख दिया।

सहस्सतेज की मृत्यु के उपरान्त मकरकंठ का भाई सैंग्-आदित्य सामने आया। इस राक्षस के पास एक मायावी शीशा था। इसमें जिस वस्तु की छाया पड़ती, वही भस्म हो जाती थी। परन्तु अच्छी बात यह थी कि यह शीशा ब्रह्मा के पास रहता था। अंगद सैंग्-आदित्य के सेनाध्यक्ष का रूप धारण करके ब्रह्मा के पास गये और उस शीशे को ले आये। इस विषैले अस्त्र से वंचित होकर यह राक्षस भी शीघ्र ही राम के हाथों मारा गया।

इस प्रकार दशकंठ के सभी मित्र एक-एक करके समाप्त होते गये। अब कौन बचा था, जिसकी ओर उसकी दृष्टि जाती? अथवा जिससे उसे सहायता की आशा हो सकती? अचानक उसे याद आई कि चक्रवाल का राजा सतलुंग् और त्रिसिर का बेटा त्रिमेघ तो अभी शेष है। दशकंठ ने इन राक्षस राजाओं की सहायता मांगी और वे राजी हो गये।

सतलुंग् बहुत बड़ी सेना के साथ लंका को चल पड़ा। मार्ग में ही त्रिमेघ की सेना से उसकी भेंट हुई।

ये दोनों सेनाएं अपने संयुक्त बल के साथ राम और उनकी सेना को पराजित करने के लिए आईं। परन्तु वस्तुतः वे तो मृत्यु के मुख में ही जा रही थीं। राम ने तीर मारा

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो सतलुंग् तो मर गया और त्रिमेघ अपनी जान बचाने के लिए चक्रवाल पर्वत के रेतीले मैदान में जा छिपा। हनुमान ने वहां जाकर उसका पीछा किया और वह मृत्यु को प्राप्त हुआ।

अब मित्र हीन होकर दशकंठ ने अपनी शक्ति का ही आसरा लिया। उसको डर ही किसका था ? उसमें तो ऐसी शक्ति थी, जो अपने मांस को हीरा बनालें। और अपनी उंगलियों में मृत्यु-देव की शक्ति भर ले, जैसाकि वह नन्दक के रूप में ईश्वर की सेवा करने के समय किया करता था। परन्तु ऐसा करने के लिए शर्त यह थी कि उसका मन सात दिन तक प्रसुप्त सागर के समान शांत रहे। एक क्षण भी यदि उसे क्रोध आ जाय और मन में अशान्ति उत्पन्न हो जाय तो यह वरदान निष्फल हो जाता। अतः वह नीलकाल पर्वत की खोह में गया और घोर तप के साथ उसने यज्ञ आरम्भ कर दिया।

परन्तु दशकंठ हनुमान की शक्ति का अनुमान न लगा पाया था। यह तो उसके पीछे पड़ा ही रहा। बिभेक के बताने पर हनुमान और अंगद तथा नीलनन्द उस स्थान पर जा पहुंचे जहां दशकंठ तपस्या कर रहा था। परन्तु देखा कि उसने अपनी माया से खोह का द्वार बन्द कर रक्खा है। परन्तु यह द्वार भी खुल सकता था, यदि किसी स्त्री के पैर का अशुद्ध धोवन उसपर छिड़का जा सके। हनुमान अपनी राक्षसी स्त्री बेन्चकाय् के पास गया और उसके पैर धोने का पानी ले आया। उसके छिड़कते ही खोह का द्वार खुल गया। तीनों वन्दर उस खोह में घुस गये और कभी काटकर, कभी नोंचकर दशकंठ के क्रोध को भड़काने लगे। परन्तु राक्षसों का

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अधिपति विचलित नहीं हुआ और स्थिर बैठा रहा।

असफल होकर हनुमान ने एक नया उपाय सोचा। उसने खोह छोड़ दी और वहां जा पहुंचा जहां रानी मण्डो सो रही थी। उसके मुंह पर मोती के समान मुस्कराहट झलक रही थी।

माया से मूर्छित करके हनुमान ने उसे उठा लिया और दशकंठ के समक्ष ले आया।

अरे, लंका की रानी एक वानर के हाथ में? उसकी प्राणप्यारी एक पशु के चंगुल में? क्रोध के मारे दशकंठ ने हनुमान पर आक्रमण कर दिया। हनुमान ने तुरन्त ही रानी को छोड़ दिया और हर्षपूर्वक अपने पड़ाव पर लौट आये। क्रोध के आते ही दशकंठ का मन क्षुब्ध हो गया और साथ ही उसका वह वर भी जाता रहा, जिसके भरोसे वह अपनेको मृत्यु का साक्षात् रूप बनाना चाहता था।

हारकर दशकंठ ने अष्टांग राजा सद्धासुर और दूषण के पुत्र विरुण्चम्वंग् की सहायता ली। दोनों राक्षस तुरन्त ही उसकी सहायता को आ गये। सद्धासुर को ऐसा वर था कि वह समस्त देव-लोक के शस्त्रों को पा सकता था और विरुण्-चम्वंग् को ऐसा वर था कि वह और उसका घोड़ा दोनों अदृष्ट हो जाते थे।

हनुमान ने सद्धासुर का सामना किया और उससे देवास्त्रों को छीनने की एक तरकीब निकाली। उसने बन्दरों से कहा कि बादलों में छिप जाओ। जब सद्धासुर की प्रार्थना पर देव-लोक से देव अपने अस्त्र डालने लगें तो उनको बीच में ही लपक लेना। इसके पश्चात् एक भयानक बन्दर का

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूप धारण करके उसने सद्धासुर को ललकारा कि यदि तुझमें कोई मायावी शक्ति है तो उसका परिचय दे अब राक्षस ने देवताओं से अस्त्र मांगे परन्तु वह उसतक न पहुंच सके। बन्दरों ने उनको बीच में ही लपककर ले लिया। अब तो उसकी अपनी मायावी शक्ति पर भरोसा न रहा और उसने अपने ही शारीरिक बल से हनुमान पर आक्रमण किया। हनुमान ने उसको सहज ही में मार डाला और उसका सिर काटकर राम के हवाले कर दिया।

सद्धासुर के गिरते ही विरुण्चम्वंग् क्रोध करके वानरों पर आ टूटा। अपने अदृष्ट घोड़े पर सवार होकर वह बन्दरों को मौत के घाट उतारने लगा। राम की समझ में नहीं आया कि इस अदृष्ट शत्रु से कैसे लड़ा जाय। अन्त में उन्होंने अपना मौत का बुझा हुआ तीर छोड़ ही तो दिया। इससे राक्षस के सभी साथी मारे गये और उसका अदृष्ट घोड़ा भी नष्ट हो गया। यह देख अकेला राक्षस बड़ा भयभीत हुआ और शत्रु का सामना न कर सका। उसने अपना एक रुमाल निकाला और माया के जोर से उस रुमाल से अपनी ही एक नकली आकृति बनाली।

अब असली विरुण्चम्वंग् तो आकाश पर्वत पर भाग गया और उसकी नकली आकृति लड़ती रही। आकाश पर्वत पर उसे एक वानरिन नाम की अप्सरा मिली, जो पतित हो गई थी। उसने उसे समझाया कि वह समुद्र फेन में जा छिपे। परन्तु वहां भी वह हनुमान के चंगुल से न बच सका।

हनुमान आकाशपर्वत पर जा पहुंचे और वानरिन से

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भेंट की । यह कई युगों से बड़ी उत्सुकता से हनुमान की बाट जोह रही थी । जब वह ईश्वर के यहां उनकी सेवा कार्य में लगी हुई थी तब एक बार अपने किसी मित्र से बातचीत करते-करते वह ईश्वर की आज्ञा का पालन करना भूल गई । ईश्वर का कोप हुआ और उन्होंने उसे शाप दिया कि तू यहां से पृथ्वी पर चली जा । तेरा उद्धार तब होगा जब तू विरुण्चम्वंग् को खोजने में हनुमान की सहायता करेगी । हनुमान ने एक सुन्दर युवक का रूप धारण कर लिया और उनकी आकृति कामदेव से भी अधिक मनोहर हो गई । वह उस अप्सरा के पास गये और अपना मुंह खोलकर उसमें सूर्य, चांद, नक्षत्र चमकते दिखाये । उसे विश्वास हो गया कि यही वस्तुतः हनुमान हैं । वह उनकी बन गई और इस प्रकार उसका शाप छूट गया । इस अप्सरा के बताये मार्ग पर चलकर हनुमान वहां पहुंचे जहां विरुण्चम्वंग् समुद्र के फेन में छिपा पड़ा था । हनुमान पहुंचे ही थे कि उसने अपनी माया से समुद्र में एक छेद कर दिया और उसमें होकर समुद्र की तलहटी में भाग गया । परन्तु हनुमान ने अपनी पूंछ लम्बी बढ़ाई और उसे समुद्र की तलहटी से घसीटकर निकाल लाये । इस प्रकार विरुण्चम्वंग् की मृत्यु हो गई ।

: ३२ :

मलिबग्गाब्रह्मा का न्याय

सद्धासुर और विरुण्चम्वंग् की मृत्यु ने दशकंठ की बदला लेने की इच्छा को और भी तीव्र कर दिया । शत्रु की अजेयता

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के कारण उसको अपने अस्त्रों में श्रद्धा नहीं रही। अब वह कोई ऐसा उपाय सोचने लगा, जिससे वह राम के अस्तित्व को संसार से मिटा दे।

उसे अपने पितामह ब्रह्म मालीवराज की याद आई, जो देवों, गन्धर्वों और समस्त दिव्य योनियों के अध्यक्ष थे। वह ऐसे ब्रह्मा थे कि उनकी कोई बात झूठी नहीं निकलती थी। यदि वह किसी प्रकार राम को मृत्यु का अभिशाप देदें तो लंका सदा के लिए राम के पंजे से मुक्त हो जाती और दशकंठ सुख की नींद सो सकता।

इस काम को पूरा करने के लिए दशकंठ ने दो राक्षसों नन्यविक और वायुवेण को स्वर्ग में भेजा और उनके द्वारा ब्रह्मा से विनय की कि "महाराज, आप लंका आइये और मेरा और राम का न्याय कर जाइये, राम ने अन्यायपूर्वक मेरे ऊपर चढ़ाई कर दी है और वह लंका को घेरे पड़ा है।"

मालीवराज राम के पितामह महाराजा अजपाल का मित्र था। उसने तुरत न्यायाधीश बनने की स्वीकृति दे दी। वह देवी-देवताओं को साथ लेकर स्वर्ग से लंका आया, परन्तु यदि वह नगर में जाता तो राम को सन्देह होता कि शायद वह दशकंठ का पक्ष करे और यदि राम के पड़ाव में उतरता तो दशकंठ सोचता कि उसने राम का पक्ष लिया है। अतः इन दोनों शंकाओं को दूर करके वह रणक्षेत्र में उतरा, क्योंकि रणक्षेत्र तो किसी एक का न था।

दशकंठ तुरन्त आगया और कहने लगा कि देखिये राम ने मेरे साथ बड़ा अन्याय किया है और लड़ाई के लिए उतारू हो गया है। उसकी धारणा थी कि पहले से ही शिकायत की

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाय तो ब्रह्मा राम से क्रुद्ध हो जायंगे। परन्तु मालीवराज तो न्यायकारी थे। उन्होंने उचित समझा कि पहले सब देवी, देवताओं को इकट्ठा कर लिया जाय और उनके सामने राम को बुलाकर उनका पक्ष सुना जाय। तुरन्त ही रणक्षेत्र एक न्यायालय बन गया और देवों का दरबार लग गया। वहां मारकाट के स्थान में हर्षपूर्वक वार्तालाप होने लगा।

राम अपने साथियों और मित्रों के साथ वहां आये। मालीवराज ने जानना चाहा कि लड़ाई का सूत्रपात कैसे हुआ? दशकंठ ने कहा, "महाराज, सुनिये, राम ने व्यर्थ ही एक औरत के पीछे यह टंटा बढ़ा रक्खा है और इतनी सेना लेकर मेरी राजधानी को घेरे पड़ा है। बात तो बहुत छोटी-सी है। मैंने एक स्त्री को जंगल में अकेला देखा। उस बेचारी के साथ कोई न था। न उसका पति न पुत्र। मुझे उसपर दया आई और मैं उसे अपने नगर में ले आया, बात तो केवल इतनी-सी है।"

परन्तु राम ने सब बात ठीक-ठीक कह दी कि किस प्रकार दशकंठ सीता को चुराकर लाया और किस प्रकार उन्होंने चढ़ाई की।

अब सीता बुलाई गई, उसके साथ बन्दर भी थे और राक्षस भी, जिससे किसीको ऐसा अवसर न मिले कि मार्ग में सीता को सिखाया जा सके। सीता की गवाही और देवों की साक्षी से सिद्ध हो गया कि राम का पक्ष सत्य है। दशकंठ का मुंह बन्द हो गया, उसकी समझ में नहीं आया कि क्या किया जाय। उसके पास एक ही बहाना था कि चूंकि उसने देवताओं को कई बार पराजित किया है, अतः वे उससे ईर्ष्या

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रखते हैं और अनेक प्रकार से उसको सताने की बात सोचते रहते हैं।

परन्तु अब मालीवराज का विश्वास दशकंठ पर एकदम उठ गया और अन्तिम बात ने तो उसको स्पष्ट ही दशकंठ के विरुद्ध कर दिया। उन्होंने आज्ञा दी कि दशकंठ सीता को वापस दे दे और युद्ध समाप्त कर दिया जाय। परन्तु दशकंठ अड़ गया। अपनी इच्छा के सामने उसने सत्य और न्याय को त्याग दिया। उसने न्यायाधीश की बात को मानने से इन्कार कर दिया। अन्त में मालीवराज क्रुद्ध हो गये और यह निर्णय करके चले गए कि दशकंठ राम के हाथ से मारा जाय। मालीवराज के साथी देवता भी देव-लोक को चले गये।

: ३३ :

महास्त्र कपिलबद

मालीवराज के निर्णय को अपने विरुद्ध पाकर दशकंठ ने सोचा कि महास्त्र कपिलबद को जागृत करना चाहिए। उसे ईश्वर की ओर से वरदान मिला था कि इसके जागृत होने पर वह मालीवराज को देवों-सहित भस्मीभूत कर सकेगा।

उसने साधु का भेस बना लिया और मेरुपर्वत की तलहटी में आकर यज्ञ की अग्नि को प्रज्वलित करने लगा। उसने मिट्टी के देवों की मूर्तियां बनाईं और वेद मंत्रों का पाठ आरंभ किया। अग्नि में से ज्वाला उठने लगी और उसने एक-एक करके उन मूर्तियों को आग में डालना आरंभ कर दिया।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैसे-जैसे वे मूर्तियां अग्नि में पड़ती जातीं वैसे-वैसे देवों में खलबली मचती जाती। देवों के राजा ने देखा कि दशकंठ ने तो उन सबको भस्म करने की तैयारी कर रखी है। देव तुरन्त ईश्वर के पास दौड़े गये और उनसे सहायता मांगी।

दयालु ईश्वर ने बाली को, जो दूसरा जन्म लेकर देव बन गया था, आज्ञा दी कि जाओ और मेरु पर्वत को आग में झोंक दो।

शान्ति पूर्वक यज्ञ करते हुए दशकंठ ने बाली को आते देखा। परन्तु बाली था देव ! उसके सामने दशकंठ की क्या चलती। वह निराश होकर भाग निकला और लंका को भाग गया। जब दशकंठ ने देखा कि ईश्वर ने बाली को देव बना लिया है और वह राम का पक्ष लेते है, तो उसे बहुत बुरा लगा। परन्तु मण्डो ने उसे सान्त्वना दी और कहा कि शायद बिभेक के सुझाने पर हनुमान आया होगा और उसने बाली का रूप धारण कर लिया होगा। यह बिभेक सब बलाओं की जड़ है। हर विपत्ति में उसका हाथ है। अतः पहले उसको मारना चाहिए। दशकंठ ने इसपर विश्वास कर लिया।

दूसरे दिन प्रातःकाल दशकंठ अपने महास्त्र कपिलबद को लेकर बिभेक को मारने चल दिया। जब वह रणक्षेत्र में पहुंचा तो राम, लक्ष्मण और बिभेक तीनों ने उसका सामना किया। कपिलबद झट से बिभेक का रुधिर पी जाने के लिए लपका। परन्तु बिभेक ने तो वेग से अपनेको बचा लिया और लक्ष्मण ने महास्त्र को वापस भेज दिया। लक्ष्मण का तीर लगने से कपिलबद का मार्ग तो तिरछा पड़ गया, परन्तु दशकंठ का तीर आकर लक्ष्मण के लगा और वह मूर्छित होकर गिर पड़े।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लक्ष्मण को गिरता देखकर राम क्रोध से भर गये। उन्होंने आज राक्षसों के दल पर ऐसी बाण-वर्षा की जैसी इससे पहले कभी नहीं की गई थी। अब दशकंठ के सिवाय और कोई राक्षस जीता न बचा और दशकंठ के तरकश में एक भी तीर शेष नहीं रह गया था। तीरों की ऐसी भयानक वर्षा हुई कि उसके छक्के छूट गये और वह भागकर अपने महलों में जा छिपा।

जब युद्ध की गति कुछ शांति हुई तो बिभेक ने लक्ष्मण की जान बचाने का उपाय करना आरंभ किया। कपिलबद से हुए घाव को ठीक करने के लिए केवल तीन बूटियां थीं, एक 'तूतुआ', दूसरी 'संकरणी' और तीसरी 'त्रिजवा', परन्तु ये बूटियां उत्तर पुरुप्रदेश के संजीवसञ्जी पर्वत पर ही मिल सकती थीं। इन बूटियों को इन्द्रकाल पर्वत की गुफा में ईश्वर की गाय के गोबर में मिलाना पड़ता था। वहां जाने की सामर्थ्य केवल उसीको थी जिसके मुंह फाड़ने से चांद और नक्षत्र दिखाई पड़ें। हनुमान ही इस काम के योग्य थे। वह तुरन्त गये और क्षण भर में यथेष्ट बूटियां ले आये। इन बूटियों को पत्थर की सिल पर पीसना था। सिल थी पाताल के राजा कालानाग के पास और बट्टा था दशकंठ के पास। वह इसका तकिया बनाकर सोता था। हनुमान दौड़कर पाताल से सिल ले आये और बट्टा लेने के लिए दशकंठ के महल में घुसे।

उन्होंने माया से सबको सुला दिया और वहां घुस गये, जहां दशकंठ अपनी रानी मण्डो को गोद में लिये सो रहा था। उन्होंने दशकंठ के सिराहने से बट्टा खींच लिया और

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चलना चाहा। परन्तु इसी बीच उनको कुछ शरारत सूझी। उन्होंने राजा की लट रानी की लट से बांध दी और शाप दिया कि जबतक रानी राजा के तीन थप्पड़ न मारे लट न खुले। इतना कर हनुमान अपने पड़ाव को चल पड़े। परन्तु चलने से पहले उन्होंने उस अभिशाप को दशकंठ के माथे पर लिख दिया।

बूटियों के प्रयोग से लक्ष्मणजी उठे। सबको बड़ा हर्ष हुआ।

इधर दशकंठ की आंख खुली। उसने उठना चाहा, परन्तु लट तो बंधी थी रानी की लट से। झटका लगा। उसे बुरा लगा और बिगड़ कर दूसरी ओर सिर हटाया। उधर भी झटका लगा। अब उसे पता चला कि यह क्या हो गया। उसने लट की गांठ खोलनी चाही, परन्तु लट न खुली। उसने अपने सेवकों को बुलाया और अपने गुरु गोपुत्र को भी। ऋषि दौड़े आये। उनकी दृष्टि दशकंठ के माथे पर पड़ी। परन्तु वह करें तो क्या करें। एक स्त्री के हाथ से राजा के तीन थप्पड़ लगवाना भी तो राजा का घोर अपमान था। और ऐसा करना शुभ शकुन के भी विरुद्ध था। अतः गोपुत्र ने उस उपाय को तो छोड़ दिया, परन्तु अपनी दिव्य शक्ति का प्रयोग आरंभ किया। परन्तु उसका कुछ परिणाम न निकला और दोनों सिर लगातार टकराते रहे। दोनों को कष्ट पहुंचता रहा। अब तो हनुमान के निर्दिष्ट उपायों को छोड़कर और कोई उपाय न था। महाराज दशकंठ को झुकना ही पड़ा कि अपनी रानी के हाथ से तीन थप्पड़ खायें।

ये बन्दर कितने दुष्ट थे! हानि की हानि पहुंचाई और

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपमान का अपमान किया। इनका तो बीज नाश ही करना होगा।

बदला लेने के लिए दशकंठ ने चक्रवाल के राजा दबनासुर को बुलाया, जो उसका भाई था। भाई की विपत्ति का हाल सुनकर राक्षस दौड़ा आया और उसने अपना शरीर बढ़ाकर ब्रह्मा की काया के बराबर कर लिया और अपनी जीभ को निकाल उसमें सूर्य को छिपा लिया। उसका बोझ इतना था कि भूमि नीचे धंस गई और वह स्वयं भी आधा उसमें समा गया। अब उस धड़ में से दो बड़े-बड़े हाथ निकले जिन्होंने समस्त रामदल को घेर लिया। बंदर लोग एक-एक करके उसके मुंह में जाने लगे और वह बिना चबाये ही उनको निगलने लगा। समस्त वानर दल से चीख-पुकार उठने लगी। परन्तु राम को न भय था न निराशा। उनकी आज्ञा से सुग्रीव ने उसकी भुजाएं काट लीं। पीड़ा के मारे राक्षस परेशान हो गया और उसने अपना असली रूप धारण कर लिया। सारे जगत में यकायक रोशनी फैल गई। राम ने तुरन्त एक बाण छोड़ा, जो राक्षस के पेट में लगा। उसकी मृत्यु हो गई, उसके पेट से सारे बंदर निकल पड़े। परन्तु वे प्राणशून्य थे, राम ने एक तीर और छोड़ा जो इन्द्रपुरी पहुंचा। इन्द्र आ गये। इन्द्र ने जल के छींटे दिये और सारे बन्दर जी उठे। सारे वानर-दल में हर्ष के नारे लगने लगे।

●

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: ३४ :

अमृत

महारानी मंडो भी अपने पति की सहायता करने लगी। वह जानती थी कि मृत्यु को कैसे वश में किया जाय और मृतकों को कैसे पुनर्जीवित किया जाय। उसने उमा से अमृत बनाना सीखा था। यदि एक बार वह अमृत बनाने में सफल हो सके तो उसके छिड़कते ही उसके पति की सारी मरी हुई सेना उठ खड़ी होगी और फिर युद्ध होने लगेगा। उस अमृत के विरुद्ध तो राम के बाण भी कुछ न कर सकेंगे। सम्भव है कि राक्षस घायल होकर गिर पड़ें, परन्तु वे फिर उठ खड़े होंगे और अधिक बल से लड़ेंगे। यह सोच मण्डो ने अमृत बनाने के लिए 'संजीव' यज्ञ का आरम्भ किया।

इससे दशकण्ठ फिर आशान्वित होकर अपने दो पुत्रों, दशगिरीवन और दशगिरिधर के साथ रणक्षेत्र में आ गया। लक्ष्मण के बाणों ने दोनों भाइयों को भगा दिया और राम ने पिता का रास्ता रोक दिया।

इसी समय मण्डो का अमृत तैयार हो गया। अमृत को को छिड़कते ही समस्त राक्षस सेना जी उठी। कुम्भकरण भी जी उठा। सहस्सतेज अपने हजार सिरों के साथ उठ खड़ा हुआ। सैंग् आदित्य अपने मायावी शीशे के साथ और दूसरे सभी भयावह राक्षस फिर प्राण-सम्पन्न हो गये। युद्ध फिर जोरों से छिड़ गया। अब तो युद्ध का अन्त होना ही

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कठिन था, क्योंकि मरे हुए राक्षस अमृत के बल पर फिर जिलाये जा सकते थे।

इसके लिए एक ही उपाय शेष था। किसी प्रकार मण्डो के यज्ञ में बाधा डाली जाय। उसकी एक ही तरकीब थी। यदि मण्डो के मन में विषय-वासना जागृत हो जाय तो यह यज्ञ असफल हो सकता था, क्योंकि यज्ञ के लिए आत्म-संयम आवश्यक होता है।

इसके लिए हनुमान ने दशकंठ का भेष बनाया। नीलनंद उसका हाथी बना। जम्बूबन हाथी का महावत और बन्दर राक्षस बन गये। अब यह बनावटी दशकंठ अपने लश्कर को लेकर विजय की खुशी मनाता हुआ लंका जा पहुंचा।

जुलूस लंका की गलियों में होता हुआ वहां आया जहां मण्डो तपस्विनी बनी हुई अमृत बनाने में संलग्न थी।

"अब अमृत की क्या आवश्यकता ?" इस नकली दशकंठ ने मण्डो से कहा। "अब क्यों कष्ट कर रही हो ? राम और उसका भाई तो सेना सहित मरे पड़े हैं। मण्डो हर्ष के मारे उछल पड़ी और नकली दशकंठ के गले से लिपट गई। विषय-वासनापूर्ण चुम्बन उसके होंठ पर दिया गया और विषय-वासनापूर्ण आलिगन ने मण्डो की वृत्ति बदल दी। इस प्रकार हनुमान की चाचाकी ने मण्डो का काम बिगाड़ दिया। लेकिन दशकंठ रूपी हनुमान यह बहाना करके चल दिया कि अभी बिभेक जीता है। उसको भी समाप्त करके आऊंगा।

उधर दशकंठ अमृत की राह देख रहा था। जिलाये हुए राक्षस मर चुके थे और उनको फिर से जिलाना था। घंटों बीत गये। अमृत न आया। केवल हवा के झोंके आ रहे थे,

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जिनसे राक्षसों में प्राण आना कठिन था। दशकंठ अकेला रह गया। वह बार-बार देखता था कि अमृत अब आये, अब आये। परन्तु उसे कोई अमृत लाता हुआ दिखाई न दिया। अब वह मण्डो की यज्ञशाला की ओर लपका।

दशकंठ को छल का पता चला। हनुमान की शरारत पर उसे बड़ा क्रोध आया; मण्डो को जब ज्ञात हुआ कि उसका सतीत्व नष्ट हो गया, तो वह बेहोश होकर गिर पड़ी।

यह सबकुछ तो हुआ, परन्तु उन दोनों का परस्पर प्रेम ज्यों-का-त्यों बना रहा।

: ३५ :

आत्मा का पिंजड़ा

अपने सारे उपायों को निष्फल और अपनी महारानी को अपमानित देखकर दशकंठ को बड़ा क्रोध आया। वह फिर रणक्षेत्र की ओर चल पड़ा यह निश्चय करके कि अब की वार तो शत्रु का बीजनाश ही कर देना पड़ेगा।

दोनों दल लड़ने लगे। राम ने दशकंठ का सामना किया। दोनों ओर से तीर छूट रहे थे और आकाश में अंधेरा छा रहा था। राम अद्वितीय वीरता से लड़े, परन्तु दशकंठ पर असर न हुआ। उसका सिर कटकर गिरता था, तो फिर दूसरा तैयार हो जाता था। उसकी भुजायें कटती थीं और फिर जुड़

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाती थीं। कितना ही तीव्र शस्त्र क्यों न हो, वह राक्षस का कुछ भी बिगाड़ न कर सका।

अब बिभेक ने राम की सहायता की। उसने राम से कहा कि दशकंठ की आत्मा तो उसके शरीर से निकाल लिया गया है और वह उसके गुरु गोपुत्र के पास एक पिंजड़े में सुरक्षित रक्खा है। दशकंठ तो तभी मरेगा जब उसके आत्मा को मार डाला जाय।

हनुमान इस काम के लिए चल पड़े। परन्तु उन्होंने राम से कहा, महाराज एक बात है। इस काम के करने में कई चालें चलनी पड़ेगीं। आप मुझे शत्रु-दल में शामिल देखकर मेरी भक्ति पर सन्देह न करना।

राम को सचेत करके हनुमान गोपुत्र की कुटिया पर चले। वह जानते थे कि गोपुत्र मूर्ख है। हनुमान के साथ इन्द्र का पौत्र अंगद भी गया।

दोनों बन्दर गुरु की कुटिया पर पहुंचे। हनुमान ने झूठ-मूठ रोना आरंभ किया और बोले "महाराज! राम ने हमारे साथ बड़ा दुर्व्यवहार किया है। हमने तो आयु-भर उसकी सेवा की और उसके लिए अपनी जान भी जोखम में डालते रहे, परन्तु राम बड़े कृतघ्न निकले। अब हमसे राम की सेवा नहीं होती। इससे तो यही अच्छा है कि हम दशकंठ की सेना में आ जायें। वह तो अपने सेवकों को उचित रीति से पुरस्कृत करते हैं। परन्तु हमको भय है कि दशकंठ हमको शायद स्वीकार न करें क्योंकि हमने उनके पुत्रों और भाइयों का वध किया है। सम्भव है वह हमको देखते ही क्रोध करने लगें और हमको मार डालें। गुरुजी हम पर कृपा करके हमारे

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राम

सीता

लक्ष्मण

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवाह के उपरान्त राम का अयोध्या में आगमन (पृष्ठ ३२)

अशोक वाटिका से रावण का निराश होकर लौटना (पृष्ठ २०)

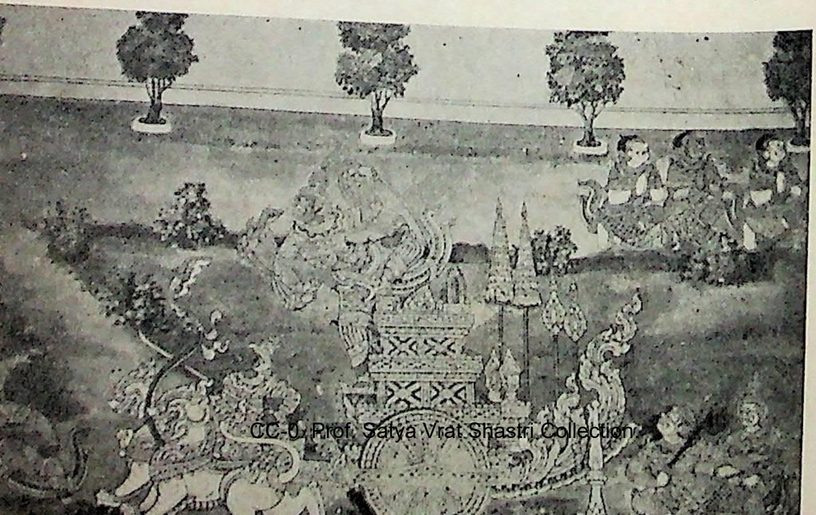

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

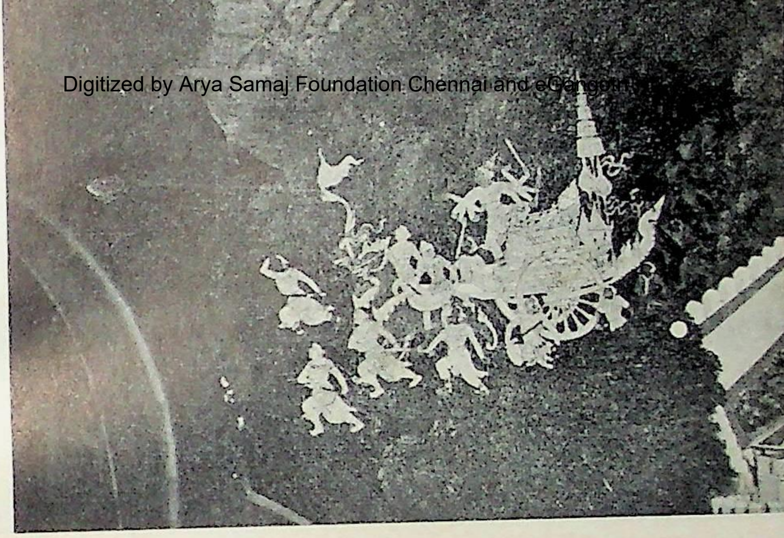

रावण के चक्र द्वारा
जिह्वा की मृत्यु
(पृष्ठ ४०)

मैयराव द्वारा
राम-लक्ष्मण का हरण
(पृष्ठ ९४)

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

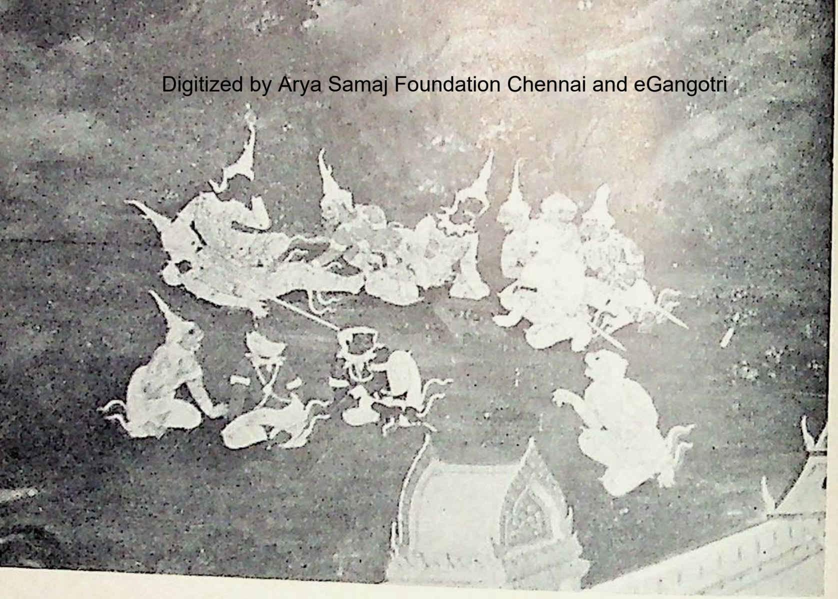

कुम्भकरण की मोक्ष-शक्ति के प्रहार से लक्ष्मण मूर्च्छित (पृष्ठ ८२)

हनुमान द्वारा सहस्त्रतेज का वध (पृष्ठ ९७)

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

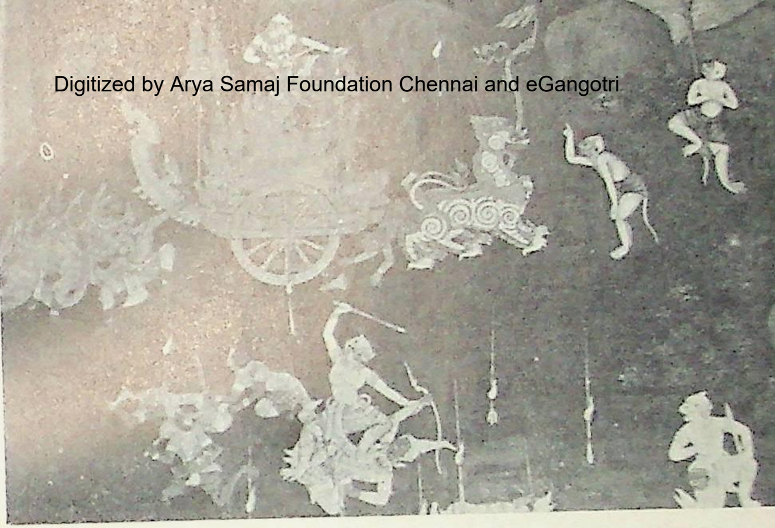

हनुमान और सिद्धासुर का युद्ध (पृष्ठ ९९-१००)

मालीवराज द्वारा राम एवं रावण के बीच समझौता कराने का प्रयत्न (पृष्ठ १०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

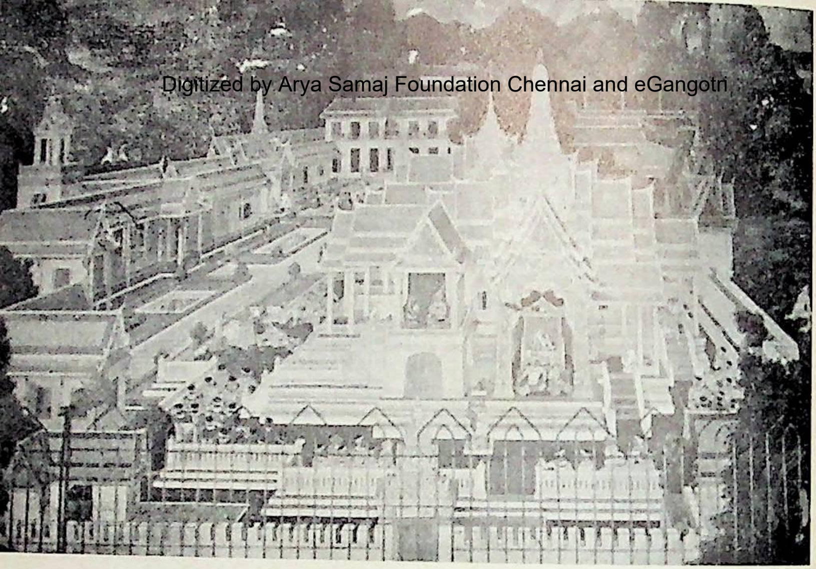

लंका के महल में हनुमान द्वारा उस पिंजड़े को नष्ट करना, जिसमें रावण का हृदय सुरक्षित था (पृष्ठ ११५)

लंका विजय के उपरान्त राम का अयोध्या में आगमन (पृष्ठ १२८)

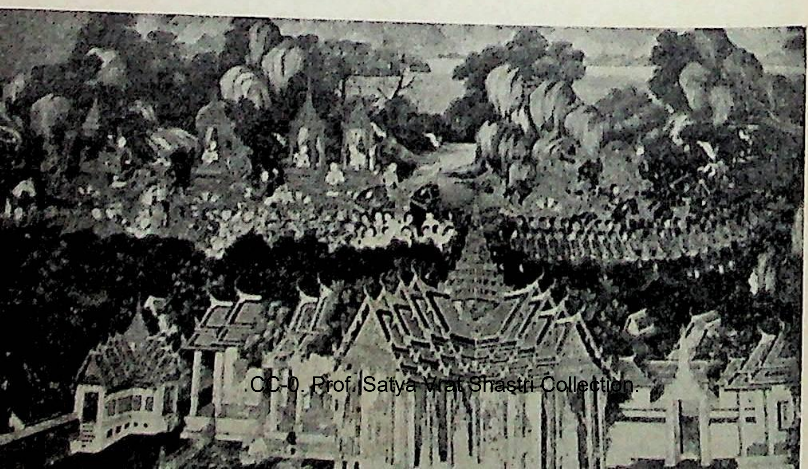

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

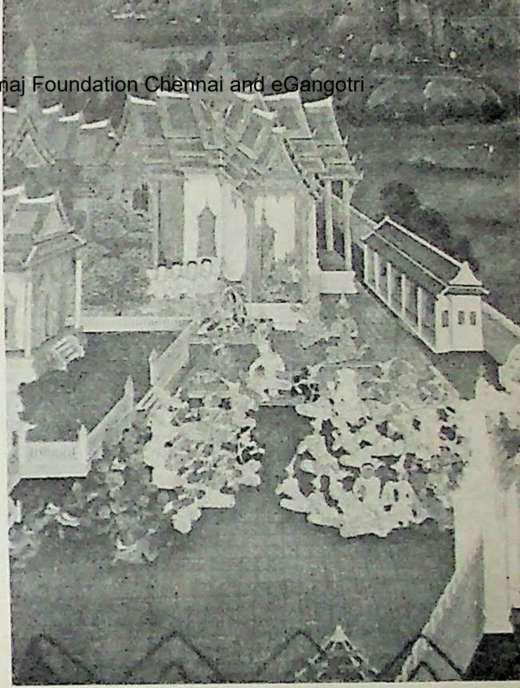

विजय के उपरान्त
राम द्वारा
पुरस्कार-वितरण
(पृष्ठ १३०)

हनुमान की राजधानी (पृष्ठ १३१)

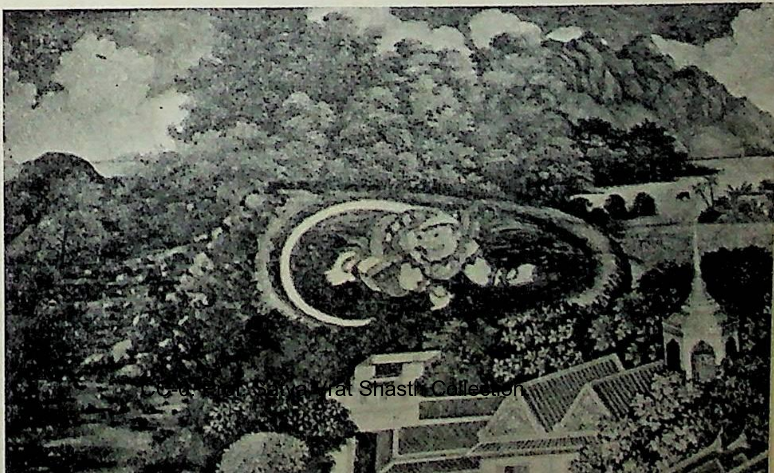

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

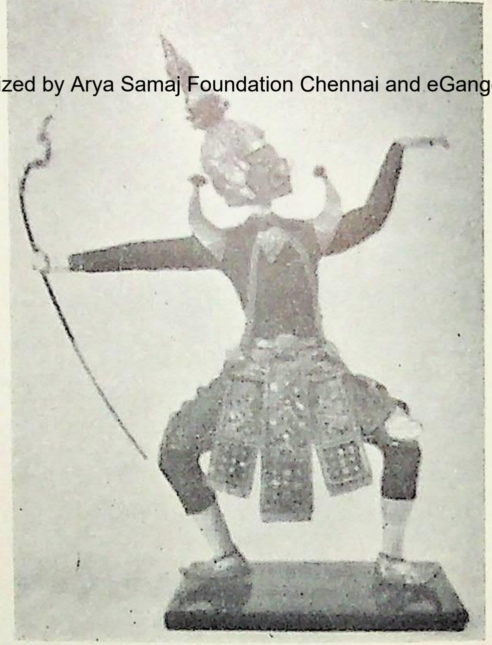

रावण

हनुमान

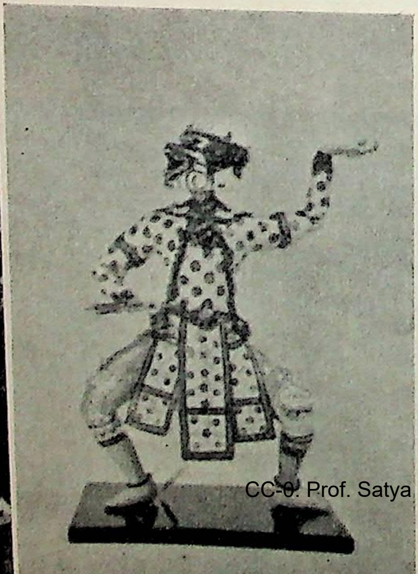

नील

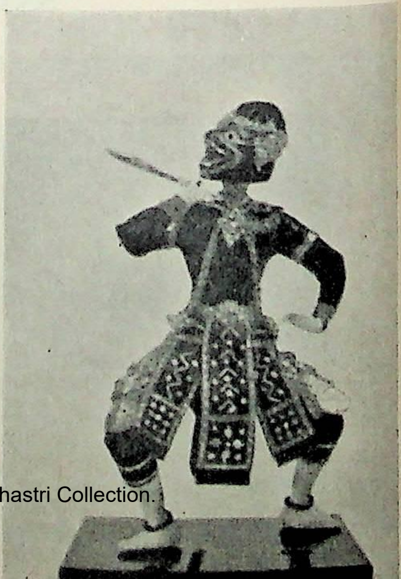

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साथ चलें और उससे हमारी सिफारिश करदें। हनुमान ढाढ़ मारकर रोने लगे और उनके मुंह पर टपाटप आंसुओं की धार बहने लगी।

यह देख गोपुत्र राजी हो गया और हनुमान के साथ दशकंठ के महल की ओर बढ़े। परन्तु 'आत्मा का पिंजड़ा' भी तो लेना था! हनुमान ने बात बनाई "गुरुजी, आत्मा के पिंजड़े को घर पर न छोड़िये। राम उसकी ताक में है। अवसर पाते ही वह उसे उड़ा ले जायगा। इस पिंजड़े को तो हम अपने ही साथ ले चलें।" गुरु तो मूर्ख थे ही। वह हनुमान की बातों में आ गये, और 'आत्मा का 'पिंजड़ा' लेकर उनके साथ चल दिये।

तीनों लंकापुरी के पास के ग्रामों में होकर गुजरे, हनुमान को देखते ही सब राक्षस डर के मारे भागने लगे। कोई अपने बच्चों को गोद में लेकर भागा। कोई अपनी बुड्ढी मां को, कोई अपनी स्त्री को। इस प्रकार हनुमान की उपस्थिति से लंका के ग्रामों में एक तूफान-सा मच गया।

अन्त में वे नगर के द्वार पर पहुंचे। यहां एक और कठिनाई आ उपस्थित हुई। पिंजड़े को नगर के भीतर कैसे लायें? नगर के भीतर आते ही, जैसे पक्षी अपने घोंसले को देखकर उसमें भाग जाता है, इसी प्रकार दशकंठ की आत्मा दशकंठ के शरीर में जा घुसेगी। हनुमान ने सुझाया कि 'आत्मा के पिंजड़े' को तो अंगद के हाथ में छोड़ दीजिए और आप और हम नगर के अन्दर चलें। जब लौटेंगे तो इसको ले लेंगे। यही निश्चय हुआ और हनुमान और गोपुत्र नगर के भीतर घुस गये और 'आत्मा का पिंजड़ा' अंगद के हाथ में

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रह गया ।

हनुमान बड़े खुश थे कि 'आत्मा का पिंजड़ा' अंगद के हाथ लग गया । परन्तु वह स्वयं भी पिंजड़े के साथ रहना चाहते थे । अतः अचानक चलते-चलते वह बोल उठे, "गुरु-जी ! आप चलिये । मैं अभी आया । अंगद को एक बात बताता आऊं कि उसे सावधान रहना चाहिए । कहीं ऐसा न हो कि उसे अकेला पाकर और शत्रु समझकर राक्षस उसे मार डालें ।" ऐसा बहाना करके वह अंगद के पास आगये और माया से उन्होंने एक नकली पिंजड़ा बनाया और देकर अंगद से बोले "असली पिंजड़े को तो तुम लेजाकर समुद्र के तट पर गाड़ दो, फिर यहां आकर यह नकली पिंजड़ा लेकर गुरुजी को दे देना । उसके बाद तुम समुद्र-तट पर पहुंचकर मेरी बाट जोहना । जब मैं मुंह खोलूं और तुमको उसमें सूर्य और चांद दिखाई पड़ें तो तुम उस असली पिंजड़े को लेकर आकाश में उड़ जाना और वहां मुझे पिंजड़ा दे देना ।"

ऐसा प्रबन्ध करके हनुमान गुरु गोपुत्र के पास लौट आये और वे दोनों दशकंठ के सामने उपस्थित हो गये ।

हनुमान ने रो-रोकर दशकंठ से राम के दुर्व्यवहार की कहानी सुनाई और दशकंठ की दया का पात्र बनना चाहा । बन्दर बोला "महाराज, क्या यही पुरस्कार है मेरे लंका जलाने का कि राम ने मेरे हाथ में, स्नान करने का एक अंगोछा पकड़ा दिया ?" दशकंठ उछल पड़ा और तालियां बजाकर खुश होता हुआ बोला, "आजो, आजो! आज से तू मेरा धर्म-पुत्र हुआ ।" दशकंठ की समझ में नहीं आया कि हनुमान तो छल से उसके प्राण लेने आया है ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरे दिन हनुमान ने बहाना बनाकर कहा, "आज मैं अकेला ही लड़ूंगा। इन दोनों को पकड़ लेना कोई कठिन काम नहीं है।"

हनुमान को राक्षस-दल की ओर से लड़ता देखकर बन्दर डर के मारे भागने लगे। लक्ष्मण अकेले रह गये। लक्ष्मण को इस षड़यन्त्र का पता न था। उनको बड़ा आश्चर्य हुआ कि हनुमान शत्रु से जा मिला। उन्होंने हनुमान से लड़ना आरंभ किया। हनुमान भी झूठ-मूठ की लड़ाई लड़ता रहा। संध्या हो गई और युद्ध रुक गया।

हनुमान लंका-पति के पास पहुंचे और अपनी बड़ाई की डींगें मारने लगे। "महाराज! सब बन्दर भाग गये। यदि संध्या न हो जाती तो राम और लक्ष्मण दोनों को बांधकर मैं आपके चरणों में ला उपस्थित करता।"

दशकंठ हर्ष के मारे फूल उठा और पुरस्कार के रूप में उसने न केवल इन्द्रजित् की समस्त सम्पत्ति ही हनुमान के हवाले करदी, बल्कि उसकी असली स्त्री को भी हनुमान को दे दिया। यह असली स्त्री अपने मृत पति को और उसकी वीरता को भूल गई। उसने अपनेको भाग्यशाली समझा जो उसे एक ऐसा वीर पति मिल गया, जो उसकी विषय-वासना को सन्तुष्ट कर सकेगा।

प्रातःकाल हुआ। रणभेरी फिर बजी। इसबार राजा दशकंठ भी हनुमान के साथ हो लिये। यह निश्चय किया गया कि हनुमान तो आकाश में अन्धेरा उत्पन्न करके राम और लक्ष्मण को उठाकर भाग जायं और दशकंठ पीछे से समस्त राम-दल को समाप्त कर दे। परन्तु हनुमान के जी में तो यह

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था कि आज दशकंठ का अन्त ही कर देना उचित है।

जैसे ही हनुमान आकाश में पहुंचे, उन्होंने जंभाई ली और सूर्य तथा चन्द्र उनके मुंह से चमकने लगे। अंगद खड़ा समुद्र के तट पर देख रहा था। इस माया को देखते ही वह कूदा और आत्मा का पिंजड़ा हनुमान के हाथ में दे दिया।

हनुमान ने पिंजड़ा लाकर राम के हवाले कर दिया। राम हर्ष और कृतज्ञता के मारे फूले न समाये। लक्ष्मण बोल उठे कि आकाश के तारे गिनना सुगम है, समुद्र की थाह लेना आसान है, परन्तु हनुमान की बुद्धि की प्रशंसा करना कठिन है। राम ने कहा कि हनुमान तो रत्नों का रत्न है। तीनों लोकों में उसके समान दूसरा नहीं मिल सकता।

अब यह ठहरा कि राम तो ब्रह्मास्त्र छोड़ें और हनुमान आत्मा के पिंजड़े को तोड़ दें। अब हनुमान दशकंठ के पास पहुंचे जहां वह बन्दरों का सफाया कर रहा था। दशकंठ हनुमान को देखते ही हर्ष के मारे फूल उठा, परन्तु शीघ्र ही उसकी आंखों के सामने अंधेरा छागया और निराशा की छाया उसके मुख पर छा गई। उसने देखा कि बन्दर उसकी आत्मा के पिंजड़े को उछाल रहे हैं और उसे अनेक प्रकार से ताने दे रहे हैं। उसका जी कांपने लगा और उसका साहस छूट गया। जीते-जी ही उसकी मृत्यु आगई और वह खड़ा-का-खड़ा रह गया। उसके मुंह से ये शब्द निकले, "अरे! क्या यही कृतघ्न हनुमान है? क्या इसीको मैंने अपना धर्मपुत्र बनाया था? इसीने मेरे साथ विश्वासघात किया। मैंने इसके साथ मित्रता की थी और यह ऐसा निकला! क्या इस जगत में विश्वास नहीं रहा है? क्या नेकी का बदला बदी?

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
परन्तु इस चीख-पुकार का हनुमान पर कोई असर नहीं पड़ा। उसने न तो ताना सुना, न पाप के डर से भयभीत हुआ। उसने कहा, "मैं पिंजड़ा तब दूंगा, जब तुम सीता को लौटा दोगे।" परन्तु दशकंठ ने सीता को देने से इन्कार कर दिया। "मर जाऊंगा पर सीता को न दूंगा। मैंने उसमें जीवन गंवाया है और उसमें ही मरूंगा। मैंने आयु-भर सीता से स्नेह किया है। इस जीवन में सीता मेरे हाथ नहीं आई। परन्तु मरण पीछे दूसरा जन्म लूंगा। उसमें आशा है, मुझे सीता की प्राप्ति होगी।"

यह कहकर दशकंठ रणक्षेत्र से चल दिया और कहने लगा, "कल आकर प्राण दूंगा। आज जाता हूं, अपनी प्राण-प्यारी रानी मण्डो से विदा हो आऊं।"

: ३६ :

दशकंठ-वध

दूसरा दिन हुआ। सूर्य भगवान का उदय हुआ। चारों ओर प्रकाश और जीवन के चिह्न दिखाई पड़ने लगे। लोग नई उमंगें और नये विचार लेकर काम करने लगे। परन्तु लंका के महलों में अन्धेरा था। हर्ष का नाम न था। मृत्यु के चिह्न दिखाई पड़ रहे थे। निराशा-ही-निराशा अपना घोर-तम रूप दिखाकर लोगों को डरा रही थी।

आज दशकंठ के जीवन का अन्तिम दिन था। आज से यह सौन्दर्यमय जगत उसकी आंखों के सामने से लुप्त हो

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जायगा। आज से कोई उषा काल उसके जीवन में हर्ष का संचार न कर सकेगा, न कोई संध्या उसको शान्ति का स्वप्न दे सकेगी। उसके सामने अनन्त और अपार अन्धकार था, जिसमें जीवन के समस्त सुख विस्मृत हो जाते हैं और किसी अच्छी घड़ी की याद नहीं रहती। आज वह घड़ी है जब उसको सुखमय संसार से विदा लेनी है। आज वह अंतिम बार अपनी महारानी मण्डो से मिलने आया है, जो सदा हर्ष और शोक उसकी साथिनी रही।

जिस कमरे में मण्डो राजा दशकंठ के साथ भोग-विलास किया करती थी उसीमें आज उसको उससे विदा लेनी है। दुखी रानी अपने पति के चरणों पर गिर पड़ी। उसका सौन्दर्यमय मुख अब भी अपने मनोरम रूप की छटा दिखा रहा था, परन्तु आज उसपर उल्लास न था। शोक के मारे उसके गंडस्थल से आंसुओं की धारा बह रही थी, आज के पश्चात् महल सूना हो जायगा। वह अपने प्राणप्यारे स्वामी का दर्शन न कर सकेगी। विजयिनी लंका आज अपने विजेता से शून्य हो जायगी। जो प्रकाश अदम्य था, वह आज बुझने वाला था। उसका पति, जिससे देवलोक के देवता कांपते थे, आज एक मनुष्य के हाथों मारा जाने को था। वह पति जिसकी छत्रछाया उसको समस्त सांसारिक दुःखों से बचाया करती थी, आज स्वयं मृत्यु के गाल का ग्रास बन रहा था। आज से वह अकेली हो जायगी। कोई उसके दुःख या सुख का साथी न रहेगा। उसके जी को उसके पति के अतिरिक्त कोई सान्त्वना देनेवाला न था। उसने हाथ जोड़कर विनय की, "हे प्राणपति! आप सीता को लौटा दें और अपने

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
को नाश से बचा ले।" परन्तु राक्षस-पति अपनी इस बात पर अड़ा रहा। "अरे! इसी सीता के लिए तो मेरे प्यारे भाई और बेटे मारे गये। मैं इसीको अब दे दूं। तो उनकी आत्मा मुझपर घृणा करेगी। देवलोक में मेरी हँसी होगी। जो भी हो, आज मैं लड़ूंगा और प्रेम के लिए प्राण दे दूंगा।"

अपनी छाती पर पत्थर रखकर दशकंठ अंत में मण्डो से विदा लेकर रणक्षेत्र को चल दिया। ऐसा प्रतीत होता था मानो सूर्य ने अपना प्रकाश त्याग दिया हो।

परन्तु जब इस संसार को छोड़ना ही है तो वीरता से छोड़ना चाहिए। उसने देवलोक के सम्राट् इन्द्र का रूप धारण कर लिया और सिंहों से चलाये जानेवाले रथ पर आरूढ़ हो गया। महल से बाहर होते ही पुराने स्मरण उसके मन में जागृत होने लगे। उसने लौटकर आंख फेरी। उसका सुन्दर महल खड़ा था और उसमें उसकी प्राण-प्यारी पीछे छूट रही थी। इन जड़ दीवारों के भीतर उसने स्वर्ण समान जीवन का सुख भोगा था। इनके बाहर आज उसे मृत्यु दिखाई पड़ती थी। जो महल उसको स्वर्ण समान आनन्द देता था आज उससे छूट रहा था।

उसकी आनन्द वाटिका सामने विद्यमान थी। वही खिले हुए पुष्प और वही स्वादिष्ट फल। उसी वाटिका में सीता भी थी जिसके लिए उसने अपना सभी कुछ खो दिया था। वास्तव में उसके हृदय में सीता के लिए स्नेह था। यदि स्नेह न होता तो जब सीता ने उसे अनादर और घृणा से देखा उस समय उसको उसपर क्रोध आ सकता था। क्या वह वहां जाय और एक बार सीता को देख आये? नहीं! नहीं!

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसा करना उचित नहीं है ।" सीता ने मेरा सब कुछ नष्ट कर दिया । सुख, सम्पत्ति, राज-पाट, भाई-बन्धु और देश । परन्तु सीता मेरी एक चीज़ का नाश नहीं कर सकती । और वह है मेरा आत्माभिमान । कोई यह न कह पावेगा कि दश-कंठ मृत्यु से भय खाकर भाग निकला । सीता की मायामयी प्रतिच्छाया मेरे हृदय में सदा बैठी रही है । उसीको लेकर मैं रण में जाता हूं और उसीको लिये हुए ही प्राण दूंगा ।'

ऐसा कहकर वह दुःख के साथ आगे बढ़ा । निराशा की लहर उसके शरीर में दौड़ गई । वह मृत्यु को अनुभव करने लगा । आज उसे अकेलापन अनुभव होता था । इतनी बड़ी सेना के साथ और फिर भी अकेलापन ? परन्तु सेना भी तो साहस छोड़ चुकी थी । उसमें तेज नहीं था । उसके नगाड़े में उत्साह शेष नहीं रहा था । उसकी फौज का झंडा भी, जो सदा विजय के हर्ष से लहराया करता था आज निस्तब्ध था, क्योंकि आज से उसको विजयिनी सेना के आगे चलने का सौभाग्य प्राप्त न हो सकेगा । जिन सैनिकों के जयघोष से शत्रु के हृदय कांप जाया करते थे, उनके शब्दों में आज जीवन न था । जिस रथ के पहियों की ध्वनि शत्रुओं को कंपा देती थी वे आज चुपचाप शोक मनाते जा रहे थे । बादलों में अंधेरा छा रहा था और उसकी मृत्यु के चिह्न दिखाई पड़ रहे थे । ऐस प्रतीत होता था कि उसके रथ के सिंह उसीकी अर्थी को उठाये लिये जा रहे हों ।

दशकंठ उन साक्षात् अपशकुनों का सहन न कर सका, जो उसको दिखाई पड़ रहे थे । उसने अपने दल को बढ़ाया । यदि मरना ही है तो जल्दी मरना चाहिए । एक बार क्षण

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भर में मर जाना अच्छा। मृत्यु की आग में झुलस-झुलसकर मुद्दतों में प्राण देने से क्या लाभ ?

रणक्षेत्र में राम से मुठभेड़ हुई। दशकंठ ने एक भयानक अस्त्र छोड़ा। परन्तु आज वह अपने शत्रु से नहीं लड़ रहा था। आज तो वह अपने उपासक देव की अर्चना कर रहा था, जिसके हाथ से आज उसको राक्षस योनि से छूटना और मोक्ष प्राप्त करना था। इसलिए ज्योंही अस्त्र छूटा उसमें से फूल निकलकर राम के रथ के चारों ओर गिरने लगे। राम ने चकित होकर देखा तो दशकंठ नहीं था, अपितु सामने इन्द्र-देवता खड़े थे। राक्षस-सम्राट् इन्द्र के समान सुन्दर रूप धारण किये हुए उनके सामने खड़ा था। राम को अच्छा न लगा कि ऐसे सुन्दर रूप का नाश करें, परन्तु पवन-पुत्र पर तो प्रमदा के लावण्य के अतिरिक्त और कोई सौन्दर्य प्रभाव नहीं डालता था। उन्होंने राम से कहा कि आप क्यों इस झूठे सौन्दर्य पर मोहित हो रहे हैं।

राम शीघ्र ही सचेत हो गये। उन्होंने अपना ब्रह्मास्त्र उठाया और राक्षस-सम्राट् के ऊपर छोड़ दिया। अस्त्र विद्युत के समान दशकंठ के हृदय में लगा और उसका असली कुरूप शरीर सामने गिर पड़ा। जिसने संसार-भर में मौत-ही-मौत ढा दी थी, वह आज स्वयं मौत का शिकार बन गया।

अन्त में महाशत्रु का पतन हो गया। वह गिर गया, परंतु पराजित नहीं हुआ। उसने शनैः-शनैः अपनी आंख खोली, उसने बिभेक को देखा, जिसने अपने भाई को मारकर उसका बदला लिया। उसके आत्मा में भिन्न-भिन्न प्रकार के भाव उठने लगे। खेद, क्रोध, पश्चात्ताप और पीड़ा। उसके एक

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुख से कुछ शब्द निकल पड़े, "बिभेक तुमने अपने ही भाई को क्यों मरवाया।" दूसरे मुंह से आवाज़ निकली, अरे क्या तुम्हारी रगों में वही खून नहीं था, जो मेरी रगों में था ? अरे मेरा रक्त गिराकर तो तुमने अपना ही रक्त गिराया है। तुम क्या अपने ही भाई का रक्त बहाकर लंका की गद्दी पर बैठोगे ? मुझे आशा है कि कुछ भी हो, तुम लंका की स्वाधीनता को न बेचोगे।"

अब उसको बेचारी मण्डो का ध्यान आया और उसका तीसरा मुख कहने लगा, "देखो ! मण्डो की रक्षा करना, जैसीकि तुम लंका की रक्षा करोगे।" अब उसको अपने वंश का स्मरण आया, जो ब्रह्मा से चला आता है। उसके चौथे मुख ने कहा, "बिभेक, देखो अपने इस वंश की रक्षा करना।"

अब उसे अपने पापों की याद आई, वह सोचने लगा कि मैंने किस प्रकार धर्म-पथ-से वैमुख्य धारण किया। यह सोचते ही उसका हृदय दुःख और अनुताप से भर गया। उसके पांचवें मुख ने कहा, "देखो बिभेक, पाप-पुण्य का विवेक रखना।"

अनन्तता के द्वार पर खड़ा हुआ दशकंठ आज अपने सूर्य के अन्त को देख रहा था। उसने सोचा कि जब मरता ही हूं तो बिभेक की शत्रुता को सोचकर क्यों मरूं। शत्रुता-पूर्ण भाई के सामने मरने से तो प्रेम-पूर्ण भाई के सामने मरना अच्छा होगा। अतः उसके छठे मुख ने बिभेक से क्षमा की याचना की।

अब प्राण त्यागते-त्यागते उसको अपनी गद्दी, अपनी प्रजा का ध्यान आया। वह सोचने लगा कि यदि लंका में कोई

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अच्छा राजा न रहा तो विदेशी आकर उसपर आक्रमण करेंगे और देश दासता की बेड़ियों में जकड़ा जायगा। अतः उसके सातवें मुख से निकला, "देखो दृढ़ता से राज करना। कोई कुल नष्ट न होने पावे।"

अब इस अद्वितीय वीर योद्धा की आंखें बन्द होने को थीं। वह बेहोश होगया। उसे कुछ याद न रही। वह भूल गया कि मैं कभी राजा था। वह भूल गया कि उसीके पास बिभेक, उसका भाई खड़ा था, जिसने अपने देश और अपने नरेश के साथ विद्रोह करके अपने वंश का नाश कर दिया। उसको अब इतना ही याद रहा कि मैं बिभेक का बड़ा भाई हूं, मैंने इसे गोद में खिलाया था। इसपर क्रोध न करूं और न बदला लेने की भावना रक्खूं। अब आठवें मुख से आवाज़ आई, "अरे यह तो मेरा ही दोष था कि मैंने अपने भाई को अपना शत्रु बना लिया। मुझे ऐसा दुर्व्यवहार नहीं करना चाहिए था।"

अब जीवन की बत्ती बुझने को आगई। यह उसकी अंतिम चमक थी। वह मरने को था, उसने नवें मुख से अंतिम बार अपने भाई बिभेक से प्रार्थना की कि "तुम आज ही मेरे शरीर का दाह कर देना, जिससे सूर्य की किरणें दूसरे दिन मेरे शव पर न पड़ें और कोई मेरे मृतक शरीर पर दोष आरोपित न करे।"

अब उसमें से शक्ति जाती रही। वह चेतन-शून्य हो गया। उसके दशवें मुख से आह भी न निकली। लंका का सम्राट् अंतिम नींद सो गया।

उसी समय हनुमान ने आत्मा का पिंजड़ा तोड़ दिया,
CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और दशकंठ का जीवन समाप्त हो गया। वह जीवन जिसने मनुष्यों और देवों को भयभीत कर रक्खा था। आकाश से फूलों की वर्षा होने लगी। दैवी दुन्दुभियां आनन्द के गीतों से गूंजनें लगीं। शान्ति का पवन संसार के ऊपर बहने लगा। तूफान की अंधेरी रात का अन्त हुआ और सुख तथा शान्ति के दिवस ने अपने प्रकाश से जगत को उल्लसित कर दिया।

: ३७ :

सीता की अग्नि-परीक्षा

लंकापति के पतन पर लंका में शोक छा गया। किसीके मुख पर हँसी न थी। रोना, पीटना पड़ा था। बिभेक भाई के शोक से रो रहा था और मण्डो पति के वियोग में 'त्राहिमाम् त्राहिमाम्' कर रही थी। परन्तु अब रोने से क्या होगा। मरनेवाला तो लौटकर आता नहीं; अतः सबने धैर्य धरा और दशकंठ की अन्त्येष्टि की तैयारियां करने लगे।

उसके बाद लंका में फिर हर्ष के चिह्न दिखाई पड़े। लोगों ने शोक छोड़ दिया और नये राजा बिभेक के अभिषेक का हर्ष मनाने लगे। रानी त्रिजटा उसके बायें हाथ की ओर बैठी और रानी मण्डो दाहिनी ओर।

दशकंठ की मृत्यु और उसके दाह-संस्कार हो जाने के बाद स्वभावतः राम ने सीता को याद किया। उन्होंने बहुत दिनों से सीता को न देखा था। अतः बिभेक तुरन्त गये और सीता को ले आये। यद्यपि राम के हृदय में सीता के

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए अगाध प्रेम था, तो भी इतने दिन बाहर निकली हुई सीता को फिर अपनी पत्नी बनाने में उनको संकोच था। वह डरते थे कि लोग क्या कहेंगे ? सीता चुपचाप आगे आ रही थी। उसके घूंघट के अन्दर से उसके मुखमंडल पर हर्ष के चिह्न दीख पड़ रहे थे। उसकी आंखों से प्रकट हो रहा था कि अब उसकी विपत्ति का अन्त हो चुका है और अपने प्राणपति से मिलने जा रही है। उसका हृदय आनन्द से भर गया और उसके मुख का सौन्दर्य दुगुना हो गया। परन्तु यकायक ही उसके भी हृदय में एक शंका उठ खड़ी हुई। अरे मैं इतने दिनों एक अन्य पुरुष के भवन में रह चुकी हूं। क्या मेरे नाथ मुझे ग्रहण करना भी स्वीकार करेंगे ? इस शंका से वह अपने पति की ओर बढ़ी पर थोड़ी दूर पर बैठ गई, पति से त्यागे जाने का भय और अपने पति के प्रेम की ओर का सन्देह उसे आगे बढ़ने नहीं देता था।

परन्तु राम तो उसके प्रेम में विह्वल थे। वह चाहते थे कि शीघ्र उसका मुख चुम्बन करके उसकी शंका को दूर कर दें। परन्तु उनका यह प्रेम इतना बलवान न था कि समाज की शंका का विचार न करता। यद्यपि वह जानते थे कि सीता पवित्र है, परन्तु समाज को ऐसा विश्वास कैसे हो ? अकस्मात् उसके मन में एक विचार उठा। उन्होंने सीता से पूछना चाहा कि दशकंठ ने उसको क्या-क्या उपहार दिया। इससे सीता अपने भावों को प्रकट कर सकेगी।

स्वागत करते हुए राम ने हँसकर पूछा, "सीते, तुमको दशकंठ की ओर से क्या-क्या बहुमूल्य उपहार मिले ? क्या तुम उनको दिखा सकती हो, ताकि मैं उनके सौन्दर्य को देख-

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर उनकी प्रशंसा कर सकूं।"

यह प्रश्न क्या था कि मानो आकाश से वज्र टूट पड़ा। "मेरे प्राणपति मुझसे ऐसा प्रश्न पूछ रहे हैं?" एक नन्हे पौधे पर पाला पड़ गया। शत्रु का तीर इतना कठोर न था जितने पति के ये शब्द। अपने प्यारे पति के शब्दों का बाण तो शत्रु की तलवार से कहीं अधिक तीक्ष्ण था। दशंकठ ने अपने निर्दय शब्दों से कभी उसको इतनी पीड़ा नहीं पहुंचाई थी, जितनी उसके पति के प्रश्न से उसको हुई। ऐसे प्रेम में क्या आनन्द जो शंका से संलिप्त हो? परन्तु सीता ने कहा, "मैं अपने सतीत्व की वह परीक्षा दूंगी जिससे शंकित हृदय कांप उठेंगे और स्त्री के सतीत्व का आदर्श स्थापित हो जायगा। मैं देवों के समक्ष आग में कूद पड़ूंगी और सतीत्व का शुद्ध जल आग को शीतल कर देगा।"

राम ने आकाश में एक तीर छोड़ा। देवगण सीता की परीक्षा को देखने आ गये। क्षणभर में राक्षसों की नगरी में देव-ही-देव दृष्टिगोचर होने लगे।

सुग्रीव ने चिता जमाई और राम के बाण ने आग जला दी। अब वह परीक्षा आरंभ हुई जिसने देवों को आश्चर्य में डाल दिया। सीता धीरे-धीरे धैर्य्यपूर्वक आंखों में प्रेम की किरण चमकाती हुई और हृदय को सतीत्व के बल से सुदृढ़ करती हुई आगे बढ़ी और अग्नि में प्रविष्ट हो गई, और एक महा चमत्कार हुआ। सीता के समक्ष प्रकृति ने अपना नैसर्गिक नियम त्याग दिया, अग्नि की हिरण्मयी ज्वालाओं में से नारायण की दुखिया पत्नी का आविर्भाव हुआ और अग्नि ठंडी पड़ गई। अग्नि की कठोर ज्वालाएं शीतल कमल

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
के पुष्पों में परिणत हो गई और उनकी सुगन्धि से संसार महक उठा। सीता की सुनहरी जीती जागती मूर्ति ज्वालाओं में से निकलकर सामने खड़ी थी और सन्देह करनेवाले जगत को बता रही थीं कि स्त्री के सतीत्व से जलती अग्नि शीतल हो जाती है और अंगारे फूल बन जाते हैं।

: ३८ :

राम का अयोध्या लौटना

अग्नि-परीक्षा के पश्चात् राम ने अयोध्या के लिए प्रस्थान किया। वनवास का समय बीत रहा था और उनको भय था कि यदि समय पर न पहुंचेंगे तो भरत तथा शत्रुद अपने प्राण त्याग देंगे। भक्त बिभेक ने प्रार्थना की कि "महाराज, आप लंका पर राज करें।" परन्तु राम ने यह स्वीकार नहीं किया। उन्होंने कहा, "मैंने तो अपने अधिकार के लिए युद्ध किया था। किसी अधिकारी को उसकी गद्दी से वंचित करने के लिए नहीं।"

परन्तु राजधानी को प्रस्थान करने से पूर्व उनको एक और लड़ाई लड़नी थी। दशगिरिवन् और दशगिरिधर के धर्मपिता अशकरण ने सुना कि उसके दोनों धर्मपुत्र दशकंठ-सहित राम के हाथों से मारे गये। अतः वह दौड़ा कि उसके लंका छोड़ने से पहले-पहले उनको दंड दे।

उसमें और राम में विचित्र युद्ध हुआ। राम ने राक्षस

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के दो टुकड़े कर डाले, परन्तु दोनों जीवित हो उठे और अब राम को एक के स्थान में दो से लड़ना पड़ा। राम ने उन दोनों के दो-दो टुकड़े कर डाले। परन्तु आश्चर्य की बात है कि उन दो के चार राक्षस बन गये और राम को चारों से युद्ध करना पड़ा। अब क्या करना चाहिए? ऐसे शत्रु को कैसे पराजित किया जा सकता है, जिसे ईश्वर की ओर से ऐसा वरदान मिला हो कि उसके शरीर के जितने टुकड़े किये जायं उतने ही राक्षस उत्पन्न हो जायं। उपाय बताने को बिभेक उपस्थित था। उसने राम को एक तरकीब सुझा दी। राम ने एक बाण छोड़ा। उससे शरीर के दो टुकड़े हो गये। उन्होंने दूसरा छोड़ा तो उससे वे टुकड़े नदी में बहा दिये गए। परिणाम यह हुआ कि नदी में बहे हुए उन मृत टुकड़ों का जीवित होना असम्भव था।

इस प्रकार इस विचित्र शत्रु से छुटकारा पाकर राम भाई, भार्या तथा अन्य साथियों-सहित अयोध्या को चले। समुद्र पार हो गया तो बिभेक ने राम से प्रार्थना की कि महाराज, अब पुल को तोड़ दें, जिससे समुद्र के बहाव में बाधा न पड़े। राम ने यह प्रार्थना स्वीकार की और अनन्त सागर की तरंगें फिर बाधा-रहित होकर अपना नृत्य करने लगीं।

अभी ज्यादा दूर नहीं गये थे कि आकाश में गरज हुई मानो कोई उसके दो टुकड़े कर रहा है। यह दशकंठ के लड़के प्रलयकल्प का शब्द था, जो काल अग्गी के पेट से पैदा हुआ था। उसे पता नहीं था कि उसके पिता की यह गति हुई है। जब उसे पता चला तो वह अपने बाप की पराजय और मृत्यु का बदला लेने के लिए आया।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हनुमान ने प्रलयकल्प का सामना किया। दशकंठ का यह पुत्र विपुलकाम था। हनुमान ने चाहा कि पहले इसको थका डालना चाहिए। फिर इसका मार डालना सुगम होगा। हनुमान भैंसा वन गये और कीचड़ में लोटने लगे। प्रलयकल्प उधर से निकला और भैंसे से पूछा कि राम और लक्ष्मण कहां हैं। भैंसे ने कहा, "पहले मुझे कीचड़ में से निकालो। मेरे प्राण बचें तब तो मैं बताऊं।" प्रलयकल्प ने बड़ी कठिनाई से भैंसे को कीचड़ में से निकाला और उसका शरीर थकावट से चूर-चूर हो गया।

हनुमान बोले, "अरे भाई राम-लक्ष्मण के क्यों पीछे पड़ते हो?" परन्तु राक्षस कब सुननेवाला था। अन्त में हनुमान ने अपना निजी बन्दर का रूप रक्खा और उससे युद्ध आरम्भ हो गया। बहुत देर तक लड़ाई होती रही। राक्षस थका हुआ तो था, परन्तु हारा नहीं। बात यह थी कि उसे वरदान था कि उसका शरीर चिकना हो जायगा और इससे वह किसीकी पकड़ में नहीं आयगा। परन्तु हनुमान तो घबराना जानते ही न थे। उन्होंने अपनी एक मायावी आकृति बनाई जो लड़ाई लड़ती रही और स्वयं परामर्श लेने एक ऋषि के पास दौड़ गये जिनका नाम दिशपई था। परन्तु ऋषि का यह धर्म नहीं है कि किसीको अन्य प्राणी की जान लेने का मार्ग बता दे। इसलिए ऋषि ने मुंह से तो कुछ नहीं कहा, परंतु इशारे से भूमि पर रेत फैला दी। चालाक बन्दर ने इशारा समझ लिया और लौटकर उस राक्षस के ऊपर रेत फेंकने लगे। इस प्रकार उसके शरीर की चिकनाहट कम हो गई। फिर तो हनुमान ने उसको जकड़कर पकड़ लिया और पितृगति को प्राप्त करा दिया।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस बाधा से मुक्त होकर वे उन वनों को पार करने लगे जो समय-समय पर उनके आनन्द और दुःख की घटनाओं का स्मरण दिलाते थे। वे खीद्खिन आये। यहां नीलबद् ने उनका हार्दिक स्वागत किया। यहां से वे सीधे अयोध्या को चले। मार्ग में राम का भक्ति खुखन् मिला। वे सब अयोध्या ठीक ऐसे समय पहुंचे जबकि भरत और शत्रुद राम के पुनरागमन से निराश होकर आत्महत्या की योजना कर रहे थे।

समस्त नगर आनन्द से परिपूर्ण हो गया। प्रत्येक व्यक्ति हर्षित प्रतीत होता था। राम ऐसे लौटे जैसे रात के पीछे सूर्य भगवान का उदय होता है। अब राम का अभिषेक होगा और वह प्रजा पर राज करेंगे।

राम की विजय से उनका राज्य बड़ा विशाल हो गया था। राम ने अपने राज्य के भिन्न-भिन्न भागों को अपने भक्तों को बांट दिया। लक्ष्मण को उन्होंने रोमगल प्रदेश का राजा बनाया जहां पहले खर राज करता था। भरत और शत्रुद को उन्होंने अपना युवराज बनाया। सुग्रीव को उन्होंने खीद्खिन् का राज दिया और आज से उसका नाम 'फ्रया वैयवोङ्सा महासुरतेज रुअंग्श्री'[1] हुआ। बिभेक लंका का राजा हुआ। उसका नाम हुआ 'महाराज दशगिरिवोङ्स फोङ्सब्रह्माधिराज रंग्सन्।'[2] अंगद को 'फ्रया इन्द्रानुभाव'[3] के नाम से खीद्खिन् का युवराज बनाया गया। जम्बूवान् को पंगताल का राज मिला और जम्बूकराज उसका युवराज बनाया गया। खुखन् को 'फ्रया खुखन्धिपति'[4] की उपाधि और पुरीरं का राज मिला। हनुमान को अयोध्या का

१. २. ३. ४. ये स्यामी नाम हैं।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शासक बनाया गया और उसकी पदवी हुई 'फ्रया अनुजित चक्रकृष्ण बिबदनबोंङ्स।'[1]

परन्तु फ्रया अनुजित् के भाग्य में अयोध्या का राज नहीं था। यह तो नारायण के वंशजों का राज था। ज्योंही वह गद्दी पर बैठा उसके शरीर में आग-सी लगने लगी और उसे ऐसा अनुभव हुआ कि उसके अंगरक्षक भालों से उसके नेत्र छेदने आ रहे हैं। वह झट गद्दी से उतर पड़ा और जो वास्तविक अधिकारी थे उनको राज दे दिया।

तब कृतज्ञ राम ने एक तीर मारा और अनुजित् को आज्ञा दी कि इसके मार्ग का पीछा करो। जहां तीर गिरे वहीं तुम अपनी राजधानी बना लो। तीर नौ चोटियोंवाले पहाड़ पर गिरा। पहाड़ चूर-चूर हो गया। अनुजित् ने पूंछ से उसको साफ़ किया और फिर राम के पास आया। राम ने विष्णुकर्मा को आज्ञा दी कि फ्रया अनुजित् के लिए एक नगर बसाओ। विष्णुकर्मा ने एक नगर बसाया, जिसका नाम नवपुरी हुआ और फ्रया अनुजित् उसके राजा हुए।

राम उन सब राजाओं के महाराजा बने और उनके समस्त राज में सुख और शान्ति स्थापित हो गई।

: ३९ :

लंका में विद्रोह

एक दिन चक्रवाल के राजा महापाल देवसुर के मन में आया कि अपने मित्र दशकंठ से जाकर लंका में भेंट कर

---

१. यह स्वामी नाम है।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवें। लंका में आने पर उसे ज्ञात हुआ कि दशकंठ तो मृत्यु को प्राप्त हो चुका है। उसने बिभेक को बुलाया, जो महाराज दशगिरिवंश के नाम से राज कर रहा था। उसने देवसुर से मिलने से इन्कार कर दिया। इसपर चक्रवाल नरेश ने गुस्से में आकर चढ़ाई कर दी और लंका के चारों ओर घेरा डाल दिया।

दशगिरिवंश महाराज में कोई चमत्कार तो था नहीं। हां वह मात्र भविष्य को जान सकते थे। अतः यह निश्चित हुआ था कि राम हर सप्ताह एक तीर भेजा करेंगे और यदि कोई अनिष्ट हो तो राजा एक चिट्ठी लिखकर उस तीर में बांध देंगे। जब देवसुर ने चढ़ाई की तो दशगिरिवंश राम के तीर की प्रतीक्षा में था। तीर आया और चिट्ठी के साथ चला गया। राम ने अनुजित् (हनुमान) को दशगिरिवंश की सहायता के लिए भेजा।

अनुजित् ने शत्रु का सामना किया और उसकी टांगें पकड़कर चीर डाला। परन्तु अचरज की बात कि दोनों भाग फिर जुड़ गये और राक्षस जी उठा। परन्तु बिभेक के बताने पर अनुजित् ने उसका हृदय निकाल लिया और राक्षस मर गया। हनुमान अपने देश को लौट आये और चक्रवाल की गद्दी पर पौवनासुर को बिठाया गया।

इस विपत्ति के बाद कुछ दिन सुख से गुजरे। लेकिन दशगिरिवंश के ऊपर एक और विपत्ति आ पड़ी। लंका में विद्रोह हो गया और राजा को पकड़ लिया गया। बात यह हुई कि मण्डो बिभेक की रानी हुई तो उस समय वह गर्भवती थी। उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम बैणासुरिवंश

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रक्खा गया। पिता की जानकारी के बिना ही पुत्र का पालन होता रहा। जब वह बड़ा हुआ तो उसके अध्यापक वरणीसुर ने उसको उसके पिता का इतिहास बताया। इससे उसे बड़ा क्रोध आया और उसके जी में बदला लेने की तीव्र उत्कंठा जागृति हुई। मण्डो ने उसे बहुत समझाया कि ऐसा करने से बड़ी हानि होगी, परन्तु लड़के ने एक न सुनी।

वैणासुरिवंश और वरणीसुर दोनों राक्षस मलिवन के राजा चक्रवर्ती के पास पहुंचे। वह दशकंठ का मित्र था। परन्तु उस नगर के चारों ओर दो खाइयां थीं; एक अग्नि-मृत्यु की और दूसरी जल-मृत्यु की। इन दोनों को पार करके जाना कठिन था। परन्तु उन्होंने एक ऋषि से कुछ वैदिक मन्त्र पढ़े थे जिनके प्रभाव से आग बुझ गई और पानी को रेत से पाटकर वे भीतर घुस गये।

मलिवन के राजा ने अपने मित्र के पुत्र के साथ अपने पुत्र का-सा व्यवहार किया और एक बड़ी सेना लेकर लंका पर चढ़ाई कर दी, बिभेक को कैद कर लिया और बैणसुरि-वंश को लंका का राजा बना दिया।

हनुमान का लड़का असुरफद् जो, बेन्चकाय के पेट से उत्पन्न हुआ था, किसी प्रकार लंका से निकल भागा और अपने पिता के पास सहायता के लिए जा पहुंचा। उसने सुन रक्खा था कि उसके पिता किसी पर्वत पर तपस्या कर रहे हैं।

फ्रया अनुजित् (हनुमान) ने अपनी एक भूल के प्रायश्चित्त स्वरूप संन्यास ले लिया था। वह कथा इस प्रकार है:

एक बार हनुमान जंगल में जा रहे थे। उनकी दृष्टि

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मीठे-मीठे सुन्दर आमों पर पड़ी जो वृक्षों में लटक रहे थे। हनुमान झट वृक्ष पर चढ़ गये और आमों को तोड़ना आरंभ कर दिया। परन्तु ऐसा करने में आमों का चेप उनके सिर पर लग गया। उन्होंने अपने हाथों से चेप छुड़ाना चाहा, परन्तु सफल नहीं हुए, वे बन्दर तो जन्म के ही थे। अब उन्होंने हाथों और पैरों दोनों से युद्ध करना शुरू किया। हनुमान की स्त्रियां उनको ऐसा करते देखकर ठट्ठा मारकर हँस पड़ीं। हनुमान ने समझा कि इन्होंने ऐसा करके उनका अपमान किया है। इस अपमान को धोने के लिए उन्होंने संन्यास लेने की ठान ली।

वह संन्यास लेने के लिए ऋषि दिशफई के पास गये। परन्तु बन्दर को संन्यास देना कहां लिखा है? इसलिए उन्होंने मनुष्य का रूप धारण किया और पहाड़ पर रहकर तपस्या करने लगे।

असुरफद ढूंढ़ते-ढूंढ़ते उनके पास पहुंचा। परन्तु वहां बन्दर तो कोई नहीं मिला। एक आदमी मिला। असुरफद ने पूछा, "हनुमान कहां है?" जब उसको मालूम हुआ कि यही हनुमान हैं तो उसको क्रोध आया कि यह दुर्बल मनुष्य मेरा बाप नहीं हो सकता। उसके मुख में तो सूर्य और चन्द्र चमकने लगते थे। हनुमान को अपने पुत्र में इस प्रकार का आत्म-गौरव देखकर प्रसन्नता हुई। वह फिर बन्दर बन गये और सूर्य-चन्द्र तथा और नक्षत्रों को अपने मुख में दिखाकर पुत्र को सन्तुष्ट कर दिया। असुरफद ने महाराज दशगिरिवंश की दुर्दशा का समाचार सुनाया। वे दोनों खीद्खिन् गये। वहां से सेना इकट्ठी की और अयोध्या आये। भरत और

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शत्रुद ने उनका साथ दिया और उन्होंने लंका पर चढ़ाई कर दी। इस समय पुल बांधने की आवश्यकता नहीं हुई। नील-वद् ने अपना शरीर इतना बढ़ाया कि सागर पट गया और सेना उसके ऊपर होकर निकल गई। सन्धि की बातचीत की गई, परन्तु उससे काम न चला। लंका की हरी-भरी भूमि फिर रक्त-रंजित हो गई। वैणासुरिवंश मारा गया और बिभेक मुक्त हो गये। अब विजयी सेना ने मलिवन पर चढ़ाई की और उसको घेर लिया।

राजा ने युद्ध किया, परन्तु उसकी भी वही गति हुई जो उसके मित्र दशकंठ की हुई थी। उसके तीन पुत्र एक-एक करके मारे गये। सुरियाभव और प्रलयचक्र को भरत ने मार डाला और नन्यवक्तृ को शत्रुद ने। उसका मित्र वैताल, जो कुरुराष्ट्र का राजा था, नीलबद् के हाथ से हत हुआ। अन्त में भरत के ब्रह्मास्त्र छोड़ने पर चक्रवर्ती का भी अन्त हो गया।

मलिवन की गद्दी खाली हो गई। उसपर मच्छानु को बिठाया गया। राम ने मच्छानु की पूंछ काट ली थी और उसका नाम हनुराज रख दिया था। चक्रवर्ती की पुत्री रत्न-माली से उसका विवाह कर दिया गया। नीलबद् को भी मुंह मांगा पुरस्कार मिला। उसको जम्बू का युवराज बनाकर उसका नाम फ्रया अभयबद्वंश रक्खा गया। दूसरे सेनापतियों जैसे हनुमान के पुत्र असुरफद, इन्द्रजित के लड़के कन्युवेक और मलिवन को भी पुष्कल इनाम दिये गए, क्योंकि इन्होंने युद्ध में बड़ी सहायता की थी। अब एक बार फिर युद्ध शांत हो गया और राम के विशाल झंडे के नीचे जितने प्रदेश थे वे सब सुख का जीवन व्यतीत करने लगे।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: ४० :

सीता-बनवास

विपत्ति के दिन बीत गये। निर्विघ्न आनन्द का समय आया। परन्तु भाग्य तो क्षण-क्षण में बदलता है। कभी तो आनन्द-ही-आनन्द होता है और कभी दुर्दैव का ऐसा कोप होता है कि प्राणी कहीं का नहीं रहता। किसीके भाग्य में फूलों की शैया है तो किसीके भाग्य में कांटों की। भाग्य सब प्राणियों के साथ इसी प्रकार के खेल खेलता रहता है और सीता के साथ भी उसका व्यवहार इसी प्रकार का हुआ।

उस समय अयोध्या के भाग्य का नक्षत्र उदय पर था और सीता का भी। सीता को अपार हर्ष था कि मैं राक्षसों के पंजे से छूटकर अब अपने प्राण-प्यारे वीर राम के समीप हूं। एक कारण इस हर्ष का और भी था। वह गर्भवती थी और उसे आशा थी कि मेरे उदर से एक ऐसे तेजस्वी पुत्र का जन्म होगा जो अयोध्या का भावी राजा होगा। ऐसी भावना ने सीता के आनन्द को दुगुना कर दिया और वह समझने लगी कि अब मेरे बराबर कौन है ?

परन्तु हा ! यह तो भाग्य का खेल मात्र ही था। थोड़ी ही देर में वह सब दुःख में परिणत हो गया। सीता को फिर दुःख-सागर में गोता लगाना पड़ा।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

घटना इस प्रकार घटी कि सम्मनखा की बेटी अतुल इस

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतीक्षा में थी कि किसी प्रकार अपने सम्बन्धियों के खून का बदला लिया जाय। उसके हाथ में यह तो था नहीं कि शस्त्र धारण करके समक्ष में लड़ने आती। उसने सोचा कि किसी प्रकार सीता और राम में वैमनस्य करा देना चाहिए। उसे एक अवसर मिल ही गया।

राम एक बार सैर को वन में गये और सीता अकेली रह गई। अपने पति की अनुपस्थिति में महल में उसका जी न लगा और वह नदी के शीतल जल में आनन्द मनाने चली गई।

राक्षसी को समय मिल गया। उसने महल की दासियों का रूप रख लिया और सीता की सेवा के लिए आ उपस्थित हुई। सीता को कुछ सन्देह नहीं हुआ और वह उसकी सेवा लेने लगी।

दासी का झूठा भेस बनाये हुए अतुल ने एक दिन धोखे में सीता से पूछा, "सीते! बताओ तो सही कि दशकंठ कैसा लगता था?" सीता विचारी को दासी के छल का पता न था। उसने स्लेट पर दशकंठ का चित्र खींच दिया। इस चित्र का खिचना था कि दासी लोप हो गई और उस चित्र में समा गई। राम अचानक उसी समय सीता के भवन में आ पहुंचे। घबराहट में सीता ने दशकंठ का चित्र मिटाना चाहा। परन्तु जितना ही मिटाती थी उतना ही चित्र अधिक चमकता जाता था। अन्त में हारकर सीता ने स्लेट को अपने तकिये के नीचे छिपा दिया।

राम जो पलंग पर लेटे तो उन्हें बहुत गर्मी मालूम होने लगी। बात यह थी कि छिपी हुई आग स्लेट के द्वारा भीतर

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से आग जला रही थी। राम ने बहुत चाहा कि अपनेको शांत करें। ऐसा प्रतीत हुआ मानो नीचे से अंगारे उठकर उनको जला रहे हैं। अब उन्होंने लक्ष्मण को बुलाया और वह सारे कमरे-भर में उस कारण की तलाश करने लगे, जिसने इतनी गर्मी उत्पन्न कर दी थी। ऐसा करते हुए उनको इस स्लेट का पता लगा।

राम को आश्चर्य हुआ कि इस हत्यारे का चित्र किसने बनाया ? उनका आश्चर्य और भी बढ़ा जब सीता ने राम से सच-सच कह दिया कि यह चित्र मैंने बनाया है।

सीता का वचन सुनते ही राम को बड़ा आघात पहुंचा। क्या सीता दशकंठ से प्रेम करती थी ? क्या इसी असती पत्नी के लिए मैंने और मेरे मित्रों ने इतने दुःख झेले ? क्या यही मक्कार स्त्री मेरी सहधर्मिणी बनी है ? राम दुःख के मारे कोप से भर गये और लक्ष्मण को आदेश दिया कि अभी ले जाओ इसे और मारकर इसका कलेजा मेरे सामने हाजिर करो। अयोध्या के भावी राजा की माता ने राम को समझाने का बहुत प्रयत्न किया कि वास्तव में बात क्या है, परन्तु राम ने एक न सुनी। उनको विश्वास न हुआ और अपने आदेश में परिवर्तन करना स्वीकार नहीं किया।

लक्ष्मण को सीता पर सन्देह नहीं था। परन्तु वह करते क्या ? राजा की आज्ञा तो माननी ही थी। वह सीता को वन को ले चले। दुःखी सीता रोती हुई लक्ष्मण के साथ-साथ चली गई।

चलते-चलते वह एक भारी वृक्ष के नीचे आये। उस वृक्ष की शीतल छाया के नीचे सीता बैठ गई और लक्ष्मण से

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोली कि अच्छा अब उसके पति की आज्ञा को पूर्ण किया जाय। मारनेवाला भी कौन था ? वही लक्ष्मण जो सीता को अपने भाई से भी अधिक प्रिय था। परन्तु उसे सन्तोष था कि मरने से पूर्व भाई लक्ष्मण के तो दर्शन मिल ही जायेंगे।

वह बोली, "प्यारे भाई लक्ष्मण, मैंने सदा तुम्हारे साथ परमप्रिय भाई का-सा व्यवहार किया था और तुमने मुझे बहन के समान समझा था। क्लेश भोगने में हम दोनों का साथ रहा। हाय ! अब हम दोनों कभी एक दूसरे को स्नेह की दृष्टि से न देख सकेंगे। मुझे मौत का दण्ड केवल एक तुच्छ चित्र खींचने पर ही मिल रहा है। पर मेरी मृत्यु के बाद कभी तो सच्चाई खुलेगी। पर अब तो निर्दोष होने का प्रमाण देने के लिए मर जाना ही अच्छा है। हे लक्ष्मण ! तुम इतनी तेजी से तलवार चलाओ कि जीवन की गांठ प्रेम के बन्धन से एकदम खुल जाय।"

लक्ष्मण का हृदय दुःख से विदीर्ण हो गया। "मैंने जिसको सदा प्रेममयी बहन की दृष्टि से देखा उसपर मैं तलवार कैसे चलाऊं ? और अयोध्या के राजवंश को कायम रखनेवाला महापुरुष भी तो है इसके पेट में। इसलिए भी इसको मार डालना घोर पाप होगा। फिर इस सबके अतिरिक्त बड़ी भारी बात यह है कि सीता निरपराध है। निरपराधी को मारना तो महादोष है।" लक्ष्मण सोचने लगे।

सीता ने देखा कि लक्ष्मण हिचकिचा रहे हैं, तो उसे दुःख हुआ। उसने समझा कि लक्ष्मण का साहस जवाब दे रहा है कि एक निरपराध प्राणी की हत्या कैसे की जाय ?

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परन्तु अब तो सीता के लिए जीवन का स्वाद चला ही गया था, वह मरना ही चाहती थी। अतः उसने चाहा कि किसी प्रकार लक्ष्मण के क्रोध को भड़का दे, जिससे वह शीघ्र ही उसका अन्त करदे। ऐसा करने के लिए वह लक्ष्मण पर अनेक झूठे आरोप लगाने लगी।

"अरे लक्ष्मण ! तुम तो अपने भाई की आज्ञा पालन के लिए आये हो। अब हिचकने से क्या होता है? क्या तुम्हारे मन में कोई अनिष्ट प्रयोजन हैं, जो मुझे वन में अकेले पाकर पूरा करना चाहते हो ? बोलो, मैं तो इस समय तुम्हारे चंगुल में हूं। मीठे-मीठे शब्द कहकर क्या मुझे फुसलाना चाहते हो ?

लक्ष्मण ने ये अन्यायपूर्ण शब्द सुने तो उनके शरीर में आग-सी लग गई। परन्तु इसमें कुछ थोड़ी-बहुत सच्चाई भी तो थी। लोग उसको निर्दोष नहीं कहेंगे। अकेली स्त्री को अकेले सुनसान वन में ले जाने से सभीको तो शंका हो सकती है। और लक्ष्मण पर लोग व्यभिचार का दोष आरोपित कर सकते हैं। अतः उसने और ज्यादा न सोचकर तलवार उठाई, परंतु दया के भाव ने उसके हाथ को कंपा दिया और तलवार हाथ से छूट गई।

हृदय को कड़ा करके उसने एक बार फिर तलवार उठाई। निरपराधिनी सीता अपना तेजस्वी रूप धारण किये हुए मृत्यु का आलिंगन करने के लिए बैठी थी और सामने उसका घातक अपने पापमय कृत्य को करने के लिए खड़ा था। लेकिन दया और अनुताप ने उसपर फिर विजय पाई और तलवार फिर उसके हाथ से गिर पड़ी।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

लक्ष्मण को अपनी आंखों पर बड़ा क्रोध आया। इन्हीं

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आंखों ने उसके हृदय में दया और अनुताप का भाव उत्पन्न किया है। उसने अपनी आंखें बन्द करलीं और सीता की गर्दन पर तलवार से वार कर ही दिया। परन्तु साथ ही वह वहीं बेहोश होकर गिर पड़ा। लक्ष्मण की तलवार ने जीवन-भर किसी निरपराधी का रक्त नहीं पिया था। आज वह ऐसे दुर्व्यवहार की भागी भला कैसे होती? वह तलवार जो सीता की गर्दन पर गिरी तो वज्र होकर नहीं, बल्कि फूलों की माला के रूप में। यह सीता के सतीत्व का चमत्कार था कि खड्ग भी फूल बन गया।

सीता ने लक्ष्मण को बेहोश पड़ा देखा। उसे अपार दुःख हुआ और वह भी बेहोश होकर गिर पड़ी। थोड़ी देर में उसकी आंखें खुलीं तो देखा कि लक्ष्मण अब भी चेतनाशून्य पड़े हैं। जीवन का कोई चिह्न दिखाई नहीं पड़ता था। दुःखी होकर उसने देवों से प्रार्थना की कि लक्ष्मण जी उठें। उसकी टेर सुनी गई और लक्ष्मण के मुरझाये मुख का रंग बदला। उन्होंने अंगड़ाई ली और आंखें खोल दीं।

वह देखता क्या है कि सीता अभी जीवित है। उसको यह देखकर बहुत ही आनन्द हुआ कि निर्दोषता ने पाप पर विजय पाई। सच ने झूठ का मुंह काला कर दिया। वह उठा और देवों से सीता की रक्षा करने के लिए प्रार्थना करके दुःखी हृदय से अयोध्या की राह ली।

परन्तु सीता को केवल वह शरीर से छोड़ रहा था। उसका मन तो सीता के ही चारों ओर चक्कर लगा रहा था। हाय! सीता सुनसान वन में अकेली है। वन के भयानक पशु उसको हानि पहुंचायेंगे और लक्ष्मण का हाथ

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसकी रक्षा के लिए न उठ सकेगा। वर्षा की धारें उसके कोमल शरीर को भिगो देंगी और सूर्य की तीक्ष्ण किरणें उस के गोरे मुख को झुलसा देंगी। जब वह रक्षा के लिए इधर-उधर देखेगी तो सुनसान वन के अतिरिक्त उसको और कोई सहायक दिखाई न देगा। जब चलते-चलते उसकी टांगें आगे चलना बन्द कर देंगी तो उसको कठोर भूमि के अतिरिक्त और कोई चीज विश्राम के लिए न मिल सकेगी। अरे इसके पेट में तो नारायण का ओजस्वी वंशज है। क्या यह महलों में उत्पन्न न होकर जंगलों में जन्म लेगा? इन विचारों ने लक्ष्मण को शोकातुर कर दिया। उसकी टांगों ने जवाब दे दिया और वह किसी प्रकार घसिटता-घसिटता अयोध्या में प्रविष्ट हुआ।

परन्तु यहां एक और विपत्ति थी। यदि सीता का कलेजा न लाया तो उसका क्या परिणाम होगा? तब इन्द्र को लक्ष्मण पर दया आई। उसने माया से रेत के मैदानपर एक मरा हिरण डाल दिया। लक्ष्मण की निगाह उसपर पड़ी। उसने हिरण का कलेजा निकाल लिया और राम को यह दुखदायी सूचना देने चल पड़ा कि सीता को प्राणदंड दे दिया गया। राम ने उसको देखा और उनके मुंह से केवल इतना ही निकला, "ओहो! सीता का हृदय भी पशु-जैसा ही है।"[1]

---

१. सीता-बनवास की यह कहानी बंगाली रामायण से अधिक मिलती है।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मङ्कुट और लव की उत्पत्ति

सीता वन में अकेली रह गई। दुःख के मारे उसका हृदय उमड़ पड़ा। उसने अपने पति की दया के लिए बहुत आंसू बहाये, परन्तु उसका कोई फल नहीं निकला। वह इतना रोई कि स्वर्ग के अध्यक्ष को भी दया आगई, उन्होंने एक भैंसे का रूप धारण किया और उसके सामने आगये। भैंसे ने आंखों से मूक इशारा किया कि उसके साथ-साथ आओ। सीता उसके पीछे हो ली और वज्रमृग ऋषि की कुटिया में पहुंच गई।

दयालु ऋषि ने पितृवत् स्नेह किया और अपनी कुटिया में उसे स्थान दिया। वहां उसे आराम से रखा। अयोध्या के भावी नरेश का जन्म वहीं हुआ। इन्द्र की पत्नियां स्वयं स्वर्ग से नीचे आईं और अयोध्या के भावी अधिपति के जन्म में धाय का काम करने लगीं।

ऋषि ने बालक का नाम मङ्कुट रक्खा। सीता के अन्धकारमय जीवन में यह पुत्र ही एकमात्र प्रकाश की किरण था। पुत्र के मुख पर उसके पति के सभी चिह्न थे, जिनको देखकर उसका कलेजा दो टूक हुआ जाता था। इतने बड़े साम्राज्य का युवराज और उसका जन्म एक सुनसान वृक्ष के नीचे। कोई पिता नहीं जो उस पुत्र के जन्म पर हर्ष प्रकट कर सके। कोई दासी नहीं जो लोरियां देकर बच्चे को सुला

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सके। एक सम्राट् का बालक और एक दुखिया दरिद्र माता की गोद में। रोते-रोते सीता ने अपनी अगुंली से अंगूठी उतारी और बच्चे की अंगुली में पहना दी। उसके पास यही तो एक सम्पत्ति बची थी।

एक दिन सीता बच्चे को ऋषि के संरक्षण में छोड़कर नदी में स्नान करने गई। ऋषि उस समय ध्यान में थे। वहां उसने देखा कि बंदरियां अपने बच्चों को गले से चिपटाये एक वृक्ष से एक दूसरे वृक्ष पर छलांगें मार रही हैं। उसे डर लगा कि यदि कोई बच्चा ऊपर से छूट पड़े तो मर ही जाय। इसलिए वह बंदरियों को ताड़ने लगी कि अरे तुम ऐसी असावधानी से कूदती हो। तुमको अपने बच्चों का ध्यान नहीं है। बंदरियों ने उत्तर दिया," अरे तुम तो हमसे भी अधिक असावधान हो। तुमने तो अपने बच्चे को उस ऋषि की देखभाल में छोड़ दिया है, जो समाधि लगाये बैठा है और उसे संसार की कुछ भी खबर नहीं है। जब मां नहीं तो बच्चे को कौन देखेगा ? अरे हम बंदर लोग तो अपने बच्चे को अपनी आंख के सामने ही रखते हैं।"

सीता पर इस उत्तर का इतना प्रभाव पड़ा कि वह शीघ्र ही वहां से चल पड़ी कि मैं भी बच्चे को उठा लाऊं।

इसी बीच ऋषि की समाधि टूटी। उन्होंने इधर-उधर देखा तो बच्चे का पता न था। बच्चे को कौन ले गया ? अवश्य ही कोई दुर्घटना हो गई। हाय! अब क्या होगा? सीता इसे कैसे सह सकेगी ? अभी तो पति के वियोग का ही रोना था। अब पुत्र का भी वियोग! ऋषि दया के भाव से आर्द्रित हो गये। उन्होंने सीता को दुःख से बचाने का उपाय सोचा।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्होंने अपने तप से एक और बच्चा बना कर विस्तर पर सुलाना चाहा। परन्तु ऐसा करने के लिए आवश्यक था कि वह स्लेट पर पहले बच्चे की आकृति बनाते। जब वह ऐसा कर ही रहे थे कि सीता मङ्कुट को गोद में लिये वहीं आ गई। ऋषि को संतोष हुआ। पर सीता ने, चाहा कि यह चित्र भी बना ही दो। यह भी मेरे बच्चे के साथ खेला करेगा। इस प्रकार ऋषि ने अपने तप के बल से एक दूसरा बच्चा बनाकर उसमें प्राण डाल दिये। इस प्रकार सीता दो पुत्रों की माता बन गई। दूसरे पुत्र का नाम लव रक्खा गया। दोनों बच्चे धीरे-धीरे बढ़ने लगे और जब वे किलकारियां मारते तो सुनसान जंगल में ऋषि की कुटिया में रहनेवाली दुखिया सीता के जीवन में क्षण-भर आनन्द का उल्लास हो उठता।

: ४२ :

रामाश्वमेघ

समय बीतते देर नहीं लगती। लड़के दस वर्ष के हो गये थे। परन्तु तेजस्विता और वीरता में वे बड़े सूरमाओं से भी बढ़ गये थे। एक दिन माता की आज्ञा से वे बन में घूम-फिर रहे थे। वहां उन्होंने रंग-वृक्ष देखा जिसकी ऊंची शाखाएं हरे-भरे वन के ऊपर फैल रही थीं। मङ्कुट ने अपना धनुष लिया और निशाना लगाने के लिए वृक्ष की चोटी पर तीर छोड़ दिया। तीर विद्युत् के वेग से चला और वृक्ष के दो

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टुकड़े हो गये। और वृक्ष जोर की आवाज करता हुआ भूमि पर गिरा। उसका धमाका इतनी जोर का हुआ मानो भूकम्प आ गया हो। धमाके की आवाज अयोध्या में राम के कान तक पहुंची। अरे! नारायण तो अभी अपने नर रूप में ही लीला कर रहे हैं। यह इतना तूफान उठानेवाला दूसरा कौन उत्पन्न हो गया? क्या कोई मेरा स्थान लेने वाला पैदा हो गया। ऐसे का तो पता लगाना चाहिए कि जिससे उसका दमन किया जा सके।

ऐसा विचार करके राम ने निश्चय किया कि अश्वमेध-यज्ञ रचाया जाय। एक श्वेतवर्ण घोड़ा लाया गया, जिसका चेहरा काला और मुंह और टांगें लाल थीं। उसके गले से एक तख्ती बांध दी गई कि जो कोई इस घोड़े पर सवारी करेगा वह विद्रोही समझा जायगा और उसको उचित दंड दिया जायगा। क्रया अनुजित्, (हनुमान), भरत तथा शत्रुद उसके साथ किये गए।

घोड़ा देश देशान्तरों और वन-वनान्तरों में फिरता रहा। दैवसंयोग से घोड़ा चरते-चरते वहां आ पहुंचा जहां उस भूकम्प को उत्पन्न करनेवाले राजकुमार खेल रहे थे।

मङ्कुट ने तख्ती पढ़ी और तुरन्त समझ लिया कि घोड़े को किसने और किस आयोजन से छोड़ा है। वीर पिता के वीर पुत्र ने उस लेख को पढ़ा और हंसकर कहा कि कैसा धृष्टता पूर्ण लेख है। इतना कहकर दोनों भाइयों ने घोड़े को पकड़ लिया और उसपर सवारी करने के लिए उसे अपने घर ले चले। पर क्रया अनुजित लवकों के इस लड़कपन को देख रहे थे। वह इस उद्दंडता को सहन न कर सके। वह तुरन्त

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आये और मार्ग रोक कर खड़े हो गये। परन्तु मङ्कुट के एक ही बाण ने उसको धराशायी कर दिया।

परन्तु क्षण भर में ही वह वापस होश में आगये और एक छोटे बन्दर का रूप धरकर लड़कों के पास गये। परन्तु यों भी उनको सफलता न हुई। मङ्कुट ने चाहा कि बन्दर को मार डालें। परन्तु लव ने देखा कि इस बन्दर के शरीर पर तो कपड़े हैं। ऐसा मालूम होता है कि यह किसीका पालतू बन्दर है। अतः उन्होंने यह शाप देकर बन्दर को बांध दिया कि जब इस बन्दर का असली मालिक आयेगा तभी यह बन्धन छूट सकेगा।

क्या अनुजित अपने को जब इस विचित्र विपत्ति में जकड़ा पाया तो उन्होंने तथा भरत और शत्रुद ने बहुतेरा चाहा कि बन्धन कट जायं। परन्तु वे तो बड़े दृढ़ थे। क्या इन बन्धनों को खोलने के लिए राम के पास अयोध्या जाना पड़ेगा ? परन्तु अयोध्या जायें तो कैसे ? वायु-मार्ग से जायं तो देवता हंसी करेंगे ? भूमि-मार्ग से जायं तो मनुष्यों में तिरस्कार होगा। परन्तु कुछ तो करना ही होगा। या अपमान सहो या अनन्तकाल तक बंधे पड़े रहो। अनन्त बन्धन से तो अपमान ही अच्छा। बिचारे हनुमान को अयोध्या आना पड़ा और वहां उनके मालिक राम ने उनके बन्धन काटे। परन्तु राम को इस धृष्टता पर बड़ा क्रोध आया। उन्होंने आज्ञा दी कि भरत, शत्रुद और अनुजित के साथ बहुत बड़ी सेना भेजी जाय जो इन दोनों उद्दंड लड़कों को पकड़ लावे।

घोर युद्ध हुआ। भरत के तीर से मङ्कुट आहत होकर गिर पड़ा और लव भाग कर माता की कुटिया में पहुंचा।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मङ्कुट को कैद करके भरत और शत्रुद अयोध्या ले आये कि राम की आज्ञा लेकर उसका सिर काट दिया जाय।

उधर लव ने मां से अपने भाई का हाल कहा। सीता के पास एक मायावी अंगूठी थी, जिससे कड़े-से-कड़े बन्धन खुल सकते थे। सीता ने लव को वह अंगूठी दी और लव उसे लेकर अयोध्या को चल पड़े।

नगर में उन्होंने एक स्वर्ण की अप्सरा देखी जो मनुष्य के रूप में मङ्कुट के लिए पानी भर रही थी। लव ने कहा कि तू क्यों कष्ट करती है। मैं पानी भरे देता हूँ। पानी भरते समय लव ने वह अंगूठी घड़े में डाल दी।

मङ्कुट के पास अंगूठी का पहुंचना था कि उसके बन्धन खुल गये। दोनों भाई वन में वापस चले आये और सेना की ताक में बैठे।

जब राम ने सुना कि कैदी भाग गया तो बड़ी सेना लेकर स्वयं वन की ओर बढ़े और मङ्कुट का पीछा किया। बाप-बेटों में घोर युद्ध हुआ। परन्तु न तो पिता के तीर को पुत्र का रक्त चूसना बदा था और न पुत्र के तीर को पिता का। जो तीर छूटते थे वे ऊपर-ही-ऊपर निकल जाते थे। पुत्रों के तीरों में यह गुण था कि वे फूल होकर पिता के चरणों में गिर पड़ते थे।

चकित होकर राम को यह जानने की उत्कंठा हुई कि इन पुत्रों का पिता कौन है। जब उन्होंने सुना कि यह सीता के पुत्र हैं। तो उनको बड़ा कौतुक हुआ। क्या सीता को लक्ष्मण ने मारा नहीं था? तब लक्ष्मण ने राम को पूरी कहानी ज्यों-की-त्यों कह सुना दी। राम को यह जानकर बड़ा

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हर्ष हुआ कि उसकी महारानी सीता का हृदय इतना पवित्र था।

वे दोनों पुत्रों को लेकर कुटिया पर आये जहां सीता अपने पुत्रों की प्रतीक्षा में बैठी हुई थी। उन्होंने सीता को पहली बार देखा। ऐसा प्रतीत होता था मानो बादलों में चन्द्रमा अस्त हुआ चाहता है। परन्तु जब सीता को मालूम हुआ कि लड़कों के साथ राम भी हैं तो उसे बड़ा क्रोध आ गया। वह अपने पति की इस घृष्टता को सहन नहीं कर सकी। अरे इन्होंने मेरे जीवन को तो मिट्टी में मिला दिया। अब यह मेरे पुत्रों के भी पीछे पड़े हैं।

राम ने क्षमा मांगी और महलों में लौट चलने के लिए निवेदन किया। परन्तु सीता तो राम की ऐसी दया से पहले ही थकी बैठी थी। उसने जाने से इन्कार कर दिया। "अब किस मुंह से मुझे ले जाओगे ? तुमने तो मेरी बात का विश्वास ही नहीं किया था। लंका में तो मैं पहरे में थी। तब भी तुम को सन्देह हो गया। जंगल में तो मैं अकेली दस साल से रहती हूं क्या मेरे ऊपर संदेह करने के लिए अब पहले से भी ज्यादा प्रबल कारण नहीं है ? अब तुम मुझको अपनी पत्नी के रूप में कैसे स्वीकार कर सकते हो ?"

राम के पास उसका उत्तर ही क्या था ? उन्होंने तो इतना ही कहा, "अगर तुम मेरे साथ चलने को तैय्यार नहीं हो तो फिर मुझे यहीं मार दो।" परन्तु सीता ने एक न सुनी, क्या मैं तुम्हारे समान निर्दयी हूं, जिन्होंने अपनी प्यारी पत्नी को मारने का हुक्म दे डाला है।

जब सीता ने कोई प्रस्ताव ही स्वीकार नहीं किया तो

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राम ने लड़कों से कहा कि वे अयोध्या चलें। वहां उनका राजकुमारोचित शिक्षा का प्रबन्ध कर दिया जायगा। पर इससे तो सीता को और भी ज्यादा दुख हुआ। वह वन में फिर अकेली रह जायगी। परन्तु प्रेम होते हुए भी सीता में इतना मोह नहीं था कि अपने सुख के हेतु अपने बच्चों के भावी को नष्ट कर देती। दिल कड़ा करके और आंखों में आसू भर कर उसने अपने पुत्रों को आज्ञा दी कि "जाओ और अपने वंश के अवतंस बनो।"

: ४३ :

सीता का पाताल-प्रवेश

राम दोनों पुत्रों के साथ अयोध्या आये। उनका मार्ग वन में हो कर था। यात्रा बहुत दुख पूर्ण थी। वे आगे चलते थे और उनके पैर सीता के वियोग में पीछे पड़ते थे। वन में सैकड़ों वस्तुएं थी जो राम को अपनी पत्नी की और राजकुमारों को अपनी माता की याद दिलाती थीं। एक चिड़िया को देखा जो अपने बच्चों को उसी प्रकार चुग्गा दे रही थी जैसे सीता अपने बालकों को भोजन दिया करती थी। बालकों ने चिड़िया को देखा और वह दिन याद आ गया जब वह अपनी माता की गोद में बैठकर खाना खाया करते थे। एक समुद्री चिड़िया उड़ी और झट समुद्र के दूसरे तट पर पहुंच गई। राम ने आह भरी, "अरे आज मेरी प्यारी सीता के और मेरे बीच में भी एक अथाह समुद्र है। क्या कभी इसको पार कर सकूंगा ?"

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीता के विषय में इस प्रकार सोचते-सोचते वे अन्त को अयोध्या पहुंचे। वहां उनका बड़े समारोह से स्वागत हुआ।

मङ्कुट और लव पर उनकी दादियों का, इतना स्नेह हुआ कि उनके दिन सुख से कटने लगे। परन्तु उनके हृदयों में अपनी दुखिया माता के लिए एक हूक-सी उठा करती थी। अन्त में उसको इतना दुख हुआ कि अयोध्या के राज महल उनके लिए कष्टप्रद हो गये। अतः अपने पिता से विदा लेकर वे अपनी माता के पास बन में चले आये।

राम ने अपने पुत्रों द्वारा सीता से कहला भेजा कि यदि सीता न आई तो वह रो-रो कर मर जायेगा।

सीता ने सुना और इतना ही उत्तर दिया कि यदि कभी यह दुर्घटना घटी तो वह उनके शरीर का अंतिम दर्शन करने चली आयगी।

दुखी हृदय से लड़के अयोध्या को लौटे और सीता का उत्तर सुनाया। राम को सीता के इस कठोर उत्तर को सुन-कर कई दिन नींद नहीं आई। अन्त में फ्रया अनुजित् से मिलकर सीता को वापस लाने की एक चाल चली गई।

फ्रया अनुजित् सीता के पास गये और झूठ-मूठ कहा कि राम का तो शरीरान्त हो गया। सीता को बड़ा आघात लगा। वह यह कहने लगी—"क्या राम सचमुच मर गये? क्या राम सचमुच मर गये? क्या मेरे पति अब जीवित नहीं हैं?" मृत्यु के बाद तो लोग सारी शिकायतें भूल जाते हैं। उस समय तो मृतक के गुण-ही-गुण याद रहते हैं। राम की मृत्यु की खबर सुनकर सीता अपनी सारी शिकायतों को भूल गई। उसे इतना ही याद रहा कि वह मुझे कितना स्नेह

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करते थे। अतः वह अयोध्या को चली कि राम के शरीर का अंतिम दर्शन कर आये।

इसमें राम की जहां कल्पित अर्थी रक्खी हुई थी वहां सीता ने प्रवेश किया और विलाप करने लगी। राम ने क्रन्दन सुना। वह परदे के पीछे छिपे खड़े थे। झट निकल आये और सीता को अपने संतप्त हृदय से लगाना चाहा। यह देखकर तो सीता को एक दम क्रोध आ गया। उसके मन में जो रही सही श्रद्धा बची थी, वह भी लुप्त हो गई। अब राम ने प्रयत्न किया कि सीता को बलात् रोक ले। अनुजित् भरत, शत्रुद सब को आज्ञा मिली कि सब मार्ग रोक दो। सीता को निकलने मत दो।

परन्तु उनको निराशा ही हुई। उसी समय एक विचित्र घटना घटी। सीता ने अपने सारे मार्ग अवरुद्ध देखकर पृथ्वी से प्रार्थना की कि भूमि फट जाय और वह उसमें समा जाय। तुरन्त ही भूमि में एक छेद हो गया और वह उसमें होकर पाताल देश के राजा नाग विरुण के पास चली गई। भूमि का छेद फिर बन्द हो गया और राम मूर्छित होकर वहीं जमीन पर गिर पड़े।

: ४४ :

राम की वन-यात्रा

राम को होश आया तो उन्होंने फ्रया अनुजित को पाताल भेजा। कपीश को देखते ही सीता और बिगड़ उठीं एक बार उनको धोखा हो चुका था। अतः उन्होंने अनुजित् को निकाल

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया।

तब राम ने बिभेक की राय ली। विभेक ने अपनी ज्योतिष विद्या के बल से देखा कि राम के लिए एक प्रतिकूल समय आनेवाला है। उससे बचने का एक मात्र उपाय यह है कि वह महल को छोड़कर जंगल में जा बसें और अपना शेष समय राक्षसों के संहार में व्यतीत करें। वर्ष के अन्त में विपत्ति के मेघ हट जायंगे और फिर सुख की चांदनी छटकने लगेगी।

अतः राम अपने प्यारे भाइयों और भक्त साथियों सहित वन को चल दिये। वहां उनको कुबेर के पुत्र त्रिपक्कन से मुठभेड़ हुई और वह लक्ष्मण के तीर से मारा गया। पुत्र की मृत्यु का हाल सुनकर कुबेर बहुत बड़ी सेना लेकर लड़ने आया। परन्तु राम ने उसके एक तीर मारा और वह वहीं चला गया जहां उसका पुत्र गया था।

अब वे सब आगे बढ़े। वहां उनको कुम्भाण्ड नाम का एक राक्षस मिला। यह वस्तुतः एक देव था। ईश्वर के शाप से वह राक्षस बन गया था। उसके लिए ऐसा अभि-शाप था कि जब राम उसको दर्शन देंगे तब उसकी राक्षस योनि छूटेगी। दयालु राम इस राक्षस को दुष्ट योनि से विमुक्त करके आगे बढ़े और घने जंगल में पहुंचें। वहां उनको एक विचित्र-काम राक्षस मिला। यह अपनी पक्षी जैसी चोंच में राम और लक्ष्मण को पकड़ कर आकाश में ले उड़ा। परन्तु उसकी भी वही दुर्गति हुई। सुग्रीव और हनु-मान ने राम और लक्ष्मण को ढूंढ निकाला और अंगद और नीलबद् ने उसे मार डाला।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहां से चलकर एक तालाब पर आये जिसकी तह में कमल के फूल खिल रहे थे। यह सुन्दर तालाब उनाराज का था। उनाराज ईश्वर का सेवक था जो अभिशाप के कारण राक्षस बन गया था। उसको शाप था कि राम के बाण से 'कोक्' घास का एक पत्ता निकलेगा। उस पत्ते से वह एक चट्टान से बांध दिया जायगा। वह यहां एक खरब वर्ष तक बंधा पड़ा रहेगा। एक मुर्गा उसकी रखवाली किया करेगा और जब कभी उसकी छाती से वह घास का पत्ता अलग होगा तो मुर्गा बांग दे उठेगा, बांग सुनकर एक स्त्री दौड़ेगी और उसकी छाती को एक मोगरी से कूटगी। उसका जीवन इसी प्रकार अपने अन्त काल तक दुख उठाता रहेगा।

अब राम का एक वर्ष व्यतीत होने आया। वे शीघ्र ही लौटे और अपनी राजधानी में वापस आ गये। उनको कुछ थोड़ी-थोड़ी आशा लगी हुई थी कि शायद उनकी विपत्ति के काले बादल हट ही जायं और फिर वह शुभ घड़ी आवे जब वे सीता के प्रेमपात्र बनकर उसके साथ सुख के दिन व्यतीत करने लगें।

: ४५ :

राम और सीता का पुनर्मिलन

इसी बीच में वह समय आगया कि कैलाश पर्वत पर देवलोक में शताब्दि-उत्सव मनाया जाने लगा। देवों के बीच में मृत्युलोक की बात चल पड़ी। इन्द्र ने ईश्वर को सूचना दी कि

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाराज समस्त मर्त्यलोक में सुख और शान्ति से राज करते हैं। राम की वीरता ने सभी राक्षसों को उनके गुप्त निवास-स्थानों से निकाल-निकाल कर मृत्यु के घाट उतार दिया। अब जगत के सुख में बाधा डालने के लिए कोई व्यक्ति शेष नहीं रह गया। परन्तु जिसने जगत को पीड़ा से मुक्त किया वही आज परम कष्ट उठा रहा है। उसकी प्रिय पत्नी सीता उसका त्याग करके चली गई है।

इसपर दयालु ईश्वर ने राम और सीता को बुलाया कि दोनों में किसी प्रकार मेल करा दिया जाय।

राम और सीता शीघ्र ही कैलाश पर्वत पर उपस्थित हुये। शिवजी ने देखा कि अपने पति के अन्याय और अत्याचार के कारण सीता अब भी कोपपूर्ण थी। अतः बुद्धिमान ईश्वर ने यह उचित समझा कि पहले तो राम की भर्त्सना की जाय और फिर सीता से दया के लिए अपील की जाय।

परन्तु राम को तो किसी भर्त्सना की आवश्यकता न थी। वह तो पहले ही से प्रायश्चित्त-स्वरूप अनुताप कर रहे थे। उन्होंने झट अपना दोष स्वीकार कर लिया और सीता से क्षमा याचना की।

सीता अब भी दया नहीं दिखा रही थी। उसको इतना दुःख था कि वह अपने अपमान को न भूल सकती थी, न क्षमा कर सकती थी। उसने स्पष्ट कह दिया कि अब मेरा राम के ऊपर से विश्वास उठ गया। वह अपने गुण और अवगुण को इतनी जल्दी बदल देते हैं कि मुझे विश्वास नहीं होता कि उनका हाथ फिर मेरे विरुद्ध फिर कभी न उठेगा।

फिर भी ईश्वर की निरन्तर प्रेरणा से सीता का जी

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिघला और वह फिर राम पर स्नेह करने को राजी होगई। सीता के मुँह से शुभ वचन निकलते ही राम हर्ष के मारे गद्गद् हो उठे। उनका शोक जाता रहा और उनका मन फिर आनन्द-सागर में किलोलें करने लगा। प्रेम की ज्योति जागृत हो गई। अब उनके समक्ष एक आनन्दमय संसार इसमें उन्होंने इतने यशःपूर्ण पराक्रम किये जिनसे सारा जगत जगमगा उठा और जिनकी ख्याति की सुरभि से युग युगान्तर और देशदेशान्तर सुरभित हो गये।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'मंडल' का कथा-साहित्य

[illegible]न श्रीराम
महाभारत कथा
कथा-सरित्सागर
ध्रुवोपाख्यान
ज्ञान की गरिमा
परमहंस की कथाएं
भागवत कथा
वेद-मंत्रों के प्रकाश में
उदयन-कथा
बाल राम-कथा
तुलसी राम-कथा-माला

सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.